हस्तरेखा रहस्य

मयूर पेपरबैक्स

हस्तरेखा रहस्य

प्रख्यात ज्योतिषी और
प्रतिष्ठित हस्तरेखा-विशेषज्ञ
डॉ॰ नारायणदत्त श्रीमाली
की नवीनतम रचना है—
'हस्तरेखा रहस्य'

जिसमें उन्होंने हस्तरेखाओं में लिखे
भूत, भविष्य और वर्तमान को
देखने, समझने और परखने की विधि का
वैज्ञानिक तरीके से विवेचन किया है।

हस्तरेखा-विज्ञान में यदि तनिक भी
आपकी रुचि है तो
यह पुस्तक आपके ही लिए है।

मयूर पेपरबैक्स

दिल्ली-११०००६

हस्तरेखा रहस्य

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

मयूर पेपरबैक्स
२/३५, अन्सारी रोड, दरियागंज,
दिल्ली-११०००६ द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १९७३ | मूल्य २.००

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस,
मौजपुर, शाहदरा,
दिल्ली-११००५३ द्वारा मुद्रित

दो शब्द

हस्तरेखा पर लिखे सैकड़ों ग्रन्थ बाजार में उपलब्ध हैं, पर अभी तक हाथ की उँगलियों पर पाये जानेवाले चिह्नों को समझने के लिए कोई भी पुस्तक नहीं लिखी गयी है। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी इस विषय पर कोई ग्रन्थ लपलब्ध नहीं है।

हाथ की रेखाएँ बनती-बिगड़ती रहती हैं, पर उँगलियों पर पाये जानेवाले ये चिह्न अमर हैं, ये न मिटते हैं और न परिवर्तित होते हैं। इससे भी बढ़कर आश्चर्य यह है कि संसार के किन्हीं दो व्यक्तियों की उँगलियों पर एक-से चिह्न मिल ही नहीं सकते। इन चिह्नों की भाषा रहस्यमय है। आवश्यकता है इसे समझने एवं सीखने की। उँगली का प्रत्येक चिह्न पुकार-पुकारकर उस व्यक्ति के पूरे जीवन-दर्शन को स्पष्ट कर देता है। जरूरत है उन ध्वनियों को सुनने की। ये चिह्न व्यक्ति के जीवन का प्रतिबिम्ब हैं, उसके भूत, वर्तमान और भविष्य की कहानी हैं। अनिवार्यता है इनको गुनने, समझने एवं सीखने की।

इस विषय पर अपने-आप में यह सर्वांग पूर्ण पुस्तक है। मेरे पाठकों ने जिस प्रकार मुझे सम्मान दिया है, इसके लिए मैं उन सबका आभारी हूं। प्रकाशक महोदय की तत्परता से यह पुस्तक जिस सुन्दर साज-सज्जा के साथ आपके हाथों में पहुंच सकी है, इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं।

—नारायणदत्त श्रीमाली

सी/एफ १४, हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर (राजस्थान)
टेलीफोन : २२२०६

विषय-सूची

ग्रह पीड़ित । भूत पीड़ित । पितृ पीड़ित । पत्नी-वैमनस्य । जालसाज । मानसिक परेशानी । अस्थिर मनोवृत्ति । सच्चरित्र । निष्कर्ष ।

● त्रिकोण १०६

त्रिकोण का तात्पर्य । महत्त्व और अर्थ । शान शौकत से रहने वाला । पुस्तक प्रेमी । शिकारी । परिश्रमी । आकस्मिक धन लाभ । दानवीर । वाहन सुख । एक्सीडेंट । माता से धन लाभ । ननिहाल से धन लाभ । पत्नी से लाभ । बहिनों से लाभ । श्रेष्ठ विद्या योग । सामान्य विद्या योग । अक्षय कीर्ति योग । निष्कर्ष ।

प्रवेश

परमात्मा ने मनुष्य की संरचना कुछ इस प्रकार से की है कि आज तक वैज्ञानिक इस जटिल प्रक्रिया को सुलझाने में जी-तोड़ परिश्रम कर चुके हैं, कर रहे हैं, पर गुत्थी है, कि सुलझने की बजाय उलझती ही चली जाती है। जितना भी ज्ञान-विज्ञान इस विश्व में है, उन सबका ध्येय मनुष्य को समझना, उन्हें सुख पहुँचाना और भावी अनिष्टों से रक्षा करना है, क्योंकि 'भविष्य' एक ऐसा शब्द है जो अत्यन्त गोपनीय, जटिल, दुर्बोध एवं रहस्यमय है, इसे यदि कोई सुलझा सकता है या इसकी अँधेरी खाइयों में रोशनी की किरण कोई फेंक सकता है, तो वह सामुद्रिक शास्त्र है, इसे सभी विद्वानों ने एक स्वर से स्वीकार किया है।

कभी-कभी ईश्वर पर आश्चर्य और फिर तुरन्त बाद में उसकी महानता पर मेरा सिर झुक जाता है, कि उसने जीवन की लाखों-करोड़ों घटनाओं को किस प्रकार एक हथेली पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं के रूप में अंकित कर दिया, और श्रद्धा होती है, उन आर्षपूत ऋषियों पर, जिन्होंने तपस्या और दिव्य दृष्टि के बल पर इन रेखाओं के रहस्य को समझा और आनेवाली पीढ़ी के लिए यह ज्ञान सुलभ किया।

हस्तरेखाओं को समझने के लिए अत्यन्त धैर्य और परिश्रम की जरूरत है। संसार में कोई दो व्यक्ति ऐसे नहीं हैं, जिनके हाथ की रेखाएँ एक-सी हों। इस पृथ्वी पर जितने द्विपद हैं, उन सबके हाथों की रेखाएँ भिन्न हैं। कितना विस्तार है इस ज्ञान में, और जितना इसमें विस्तार है, उतने ही परिश्रम और अध्ययन की जरूरत है इसके समझने के लिए।

हाथ का अध्ययन करना सामान्य नहीं है। अत्यन्त सावधानीपूर्वक इस क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए। किसी भी व्यक्ति की हाथ की एक रेखा देखकर ही फलादेश कर देना मूर्खता है, जिस

प्रकार इंजन में सैकड़ों छोटे-बड़े पुर्जे हैं और एक कुशल चालक उन पर समान दृष्टि रखता है, ठीक उसी प्रकार एक अच्छे हस्तरेखाविद् को भी हथेली पर पाई जाने वाली छोटी से छोटी रेखा की जाँच और उसका बारीकी से अध्ययन करना चाहिए।

हस्तरेखा का अध्ययन और तदनुसार भविष्यफल बताना उतना आसान नहीं है, जितना समझ लिया गया है, और न किसी एक रेखा या कुछ रेखाओं का ज्ञान हो जाने से ही कोई भविष्यवक्ता हो सकता है, इसके लिए चाहिए अध्ययन, परिश्रम विवेक और अनुभव। मैं पुनः जोरदार शब्दों में कहना चाहूँगा— अनुभव !

युग बदल गया है, युग के साथ समाज की मान्यताएँ बदल गयी हैं, और वे सूत्र जो करलक्खण के लिए निर्धारित थे—बदल गये हैं। जो हस्तरेखाविद् रूढ़ हो गया है, वह जड़ भी हो गया है; जो अपनी पूर्व धारणाओं को नवीन मान्यताओं के अनुरूप बदलने को तैयार नहीं उसके फल कथन में परिपक्वता नहीं आ सकती। यह बात एक छोटे से उदाहरण से ही स्पष्ट हो जायेगी—

जयपुर सेक्रेटेरियट में पति-पत्नी दोनों आइ.ए.एस. अधिकारी हैं। दोनों ही उच्च पद पर आसीन हैं, पति महोदय की मुझ पर अत्यन्त श्रद्धा रही है और जन्मपत्रिका के अभाव में उनके दाहिने हाथ को देखकर मैंने जितनी भी भविष्य-बातें कहीं, काल की शिला पर वे सब खरी उतरीं।

एक दिन पत्नी के आग्रह पर उनके दोनों हाथों का अध्ययन किया। दोनों हाथों में काफी कुछ अन्तर था, स्त्री का बायाँ हाथ देखना चाहिए, इस सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए उनके बायें हाथ को विशेष महत्त्व देता हुआ जो-जो भविष्यफल कहा, लगभग वे सब गलत उतरे, जब दो-तीन बातें गलत हुईं तो मेरा माथा ठनका—ऐसा हो नहीं सकता। फिर मैंने उनके दाहिने हाथ को मुख्य महत्त्व देते हुए जो बातें कहीं वे सब सत्य थीं, उसके भूतकाल के बारे में जो-जो बताता गया, उनकी गर्दन 'हाँ' में हिलती ही रही। मुझे अपने-आपको फिर टटोलना पड़ा, अन्य स्त्रियों के बायें हाथ को देखकर जब-जब मैंने भविष्यफल बताये हैं वे सत्य उतरे हैं, तो फिर इनके दाहिने हाथ में प्रधानता क्यों

आ गयी ? मुझे इसका उत्तर मिला समाज की व्यवस्था से···! पहले पत्नी, पति का अर्द्धांग कहलाता था, पति का गौरव स्वतः ही पत्नी को मिल जाता था पति तहसीलदार तो पत्नी तहसील-दारनी, पति डॉक्टर तो पत्नी डॉक्टरनी (चाहे पत्नी डॉक्टरी शिक्षा का क ख ग भी न जानती हो), पति हवलदार तो पत्नी हवलदारनी। उस समय समाज व्यवस्था ही ऐसी थी। प्रधानता पुरुष की ही थी और उससे सम्पृक्त होने के कारण वह अधिकार पत्नी को भी स्वतः ही मिल जाता था। पुरुष प्रधान होने के कारण उसका दाहिना हाथ प्रधान बना, तो सम्पृक्त होने के कारण स्वतः ही पत्नी वाम हस्त की अधिकारिणी बन गयी। पर अब स्त्री स्वतन्त्र है, उसे बराबर के अधिकार हैं, और हर क्षेत्र में पुरुष से स्पर्धा करने में वह सक्षम है। आजीविका के लिए वह पुरुष पर आश्रित नहीं, क्षेत्र-विशेष में वह स्वयं प्रधान है, अतः उसका वाम हस्त देखना कोई मायने नहीं रखता !

उस पत्नी की भी यही स्थिति थी। वह अपने विभाग में सर्वोच्च पद पर थी, आजीविका के लिए वह पति पर आश्रित नहीं थी। पति सेक्रेटरी था तो पत्नी कलक्टर। अतः वह स्वयं प्रधान थी, दाहिने हाथ की अधिकारिणी थी; और इसीलिए उसका दाहिना हाथ और उस हाथ की रेखाएँ ही उसके जीवन का, भविष्य का प्रतिनिधित्व करती थीं।

इसके बाद मैंने लगभग सौ से ऊपर उच्च पदासीन स्त्रियों के दाहिने हाथ देखे, और तदनुसार किया गया भविष्य कथन शत-प्रतिशत सही रहा। इसके विपरीत वे स्त्रियाँ जो पति पर आश्रित थीं, उनके बायें हाथ से ही फलकथन प्रामाणिक रहा।

स्पष्टतः वे स्त्रियाँ, जो अपने-आप में स्वतन्त्र हैं, उच्च पदासीन हैं, आजीविका के लिए स्वयं समर्थ हैं, तलाक शुदा हैं, उनका दाहिना हाथ ही देखना चाहिए। ऐसा करने पर ही आप सत्यता से सम्पर्क स्थापित कर सकेंगे, ऐसा मेरा अनुभव है, और अवश्य ही यह अनुभव ठोस तथ्यों और प्रमाणों पर आधारित है।

—पर मेरी शंका का समाधान यहीं नहीं हो गया। मैंने हस्तरेखा पर लिखित कई प्राचीन ग्रन्थ टटोल डाले, लेकिन कहीं भी इस तथ्य का वर्णन नहीं था। आत्मा ने कहा—ऐसा नहीं हो सकता, प्राचीन ऋषियों के ध्यान से इतना बड़ा तथ्य ओझल रहे

यह विश्वसनीय नहीं। एक दिन 'हस्तरेखा संजीवनी' के पन्ने टटोलते-टटोलते जिज्ञासा शान्त हो गयी। उसमें स्पष्ट लिखा था—वे स्त्रियाँ, जो पति की अर्द्धांगिनी होकर भी अर्द्धांगिनी नहीं है, उनका दाहिना हाथ देखना ही अभीष्ट है···। स्पष्टत: उनका आशय यही था कि जो पत्नी तो है, पर अन्य सभी कार्यों में स्वतन्त्र है, को भी पुरुषवत् ही समझना चाहिए; और उनके लिए भविष्यकथन करते समय उनके दाहिने हाथ को ही प्रधानता होनी चाहिए।

हस्त-परीक्षा

हाथ का अध्ययन किस प्रकार करना चाहिए? मणिबन्ध से मध्यमा अँगुली के छोर तक का जो भाग है, वह 'हस्त' के रूप में जाना जाता है। हस्त-परीक्षा के लिए भारतीय आचार्यों ने कहा है—

मणिबन्धं पाणि युगलं तस्य च पृष्ठं
तलं ततो रेखा अंगुष्ठों गलयो नख लक्षण
मथवानु पूर्विकया वक्ष्ये

अर्थात्

१. सब से पहले मणिबन्ध पर दृष्टि डालनी चाहिए,
२. फिर सरसरी दृष्टि पूरे हाथ पर डालनी चाहिए,
३. फिर हाथों को उलटकर उसके पृष्ठभाग का अध्ययन करना चाहिए।
४. फिर हाथ सीधा कर उसका मध्यमभाग देखना चाहिए।
५. फिर पर्वत, पर्वत से जुड़ी हुई उँगलियाँ और अंगुष्ठ को देखना चाहिए।
६. और फिर उँगलियों के पैर एवं नखों का निरीक्षण करना चाहिए।

इस प्रकार से हस्तरेखाविद् को हाथ की परीक्षा का श्रीगणेश करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में मेरे अनुभव कुछ इस प्रकार हैं—

हस्तरेखाविद् को चाहिए कि वह सामनेवाले के हाथ को छुए नहीं, जब तक आप उसका हाथ नहीं छूते, तब तक वह हाथ सामान्य स्थिति में होता है, आपके हाथ के स्पर्श से विद्युत्

धारा जिस प्रकार से एक हाथ से दूसरे हाथ में प्रवाहित होती है, उससे पृच्छक के हाथ की मौलिकता नष्ट हो जाती है। एतदर्थ पृच्छक का हाथ प्रारम्भ में ही नहीं छू लेना चाहिए अपितु उसके हाथ की मौलिकता पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

●सबसे पहले हाथ का पृष्ठ भाग देखना चाहिए, क्योंकि शास्त्रों में वर्णित जो सात प्रकार के हाथ बताये गये हैं, उनका निश्चय पृष्ठ भाग देखकर ही किया जा सकता है। पृष्ठ भाग देखने से ही स्पष्ट हो सकता है, कि पृच्छक का हाथ कलात्मक है या आदर्श है या मिश्रित हाथ है।

●पृष्ठ भाग देखकर हाथ का प्रकार निश्चय कर लेने के बाद पृच्छक के नाखूनों का अध्ययन करना चाहिए कि वे नाखून किस श्रेणी के हैं, उन पर क्या अंकित है? रोगादि की जितनी सूक्ष्म और सही पहचान नखों से हो सकती है, उतनी किसी भी अन्य पद्धति से नहीं हो सकती।

●फिर हाथ सम्मुख कर उँगलियों का अध्ययन, उँगलियों के पोर, और उनकी गाँठों की जानकारी, उँगलियों के मूल का विश्लेषण तथा उँगलियों आदि की लम्बाई वगैरह की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

●तत्पश्चात् हथेली के मध्य भाग का विचार करना चाहिए, और उस पर जो रेखाएँ है, उनका सूक्ष्मतापूर्वक निर्धारण करना चाहिए।

●हाथ का स्पर्श आपको इस बात का तो आभास दे ही देगा कि वह हाथ नरम है या कठोर, लचीला है या दृढ़। हाथ की कोमलता-कठोरता भी अपने-आप में काफी महत्त्व रखती है।

●इसके बाद मणिबन्ध पर विचार करे, मणिबन्ध में कितनी रेखाएँ पूर्ण हैं, मणिबन्ध किस प्रकार का है? आदि का विचार किया जाना चाहिए।

●तत्पश्चात् हथेली पर पाये जानेवाले पर्वत, पर्वतों के उभार-दबाव की स्थिति जाननी चाहिए।

●फिर उँगलियों पर पायी जानेवाली रेखाएँ, पर्व पर्व की सन्धियाँ, तथा उस पर पाये जानेवाले चिह्नों का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहिए।

●अन्त में उँगलियों के अग्रभाग पर जो शंख चक्र आदि दिखें, उन पर विचार करना चाहिए।

इस प्रकार पूरे हाथ का सूक्ष्म अध्ययन कर एक विचार-निर्धारण करना चाहिए, और फिर भविष्य कथन करना चाहिए।

हाथ देखने की विधि

●हस्तरेखा देखने का सर्वोत्तम समय प्रातःकाल है, जब कि पृच्छक ने नाश्ता-भोजन न किया हो। मेरे अनुभव में यह आया है कि भोजन करने पर उसकी ऊष्मा से रक्त-संचार में त्वरता आ जाती है, फलस्वरूप महीन रेखाएँ अदृश्य-सी हो जाती हैं, जिसे कि बाद में सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से ही देखना सम्भव होता है।

●हाथ दिखाने से पूर्व पृच्छक स्वयं स्नान किया हुआ, पवित्र हो। नींद से उठा हुआ, गन्दा और आलस्ययुक्त शरीर वातावरण को बोझिल-सा बना देता है।

●हाथ दिखाने से पूर्व हाथ को साबुन से साफ कर लेना चाहिए।

●अत्यधिक भोजन करने के बाद या व्यायाम करने के बाद भी हाथ नहीं दिखाना चाहिए। कार्य करते-करते उठकर भी हाथ दिखाना उचित नहीं, क्योंकि हाथ से परिश्रम करने से उसका वास्तविक रंग मिटा हुआ होता है।

●अत्यधिक गरमी में, अत्यधिक सर्दी में और अत्यधिक वर्षा हो रही हो उस समय भी हाथ नहीं दिखाना चाहिए, क्योंकि गरमी पड़ने से स्वभावतः हथेली ज्यादा लाल नजर आयेगी और उसका वास्तविक रंग नहीं दीख सकेगा। यही स्थिति अत्यधिक सर्दी या वर्षा के समय होती है।

●शराब पिया हुआ, नशा किया हुआ और असहजावस्था में भी हस्तरेखाविद् को हाथ नहीं देखना चाहिए।

●जहाँ ऊपर के तथ्य पृच्छक के लिए जरूरी हैं, वहीं हस्त-रेखाविद् को भी चाहिए कि वह हाथ तभी देखे, जब उसकी वृत्तियाँ शान्त हों, वह चिन्तित न हो, क्रोधादि भावना में न हो, तथा किसी कारण से उद्विग्न या परेशान न हो।

●यदि ऊपर के तथ्य ध्यान में रखते हुए हस्तरेखाविद् किसी के हाथ का अध्ययन करे, तो वह निस्सन्देह भविष्य उसी प्रकार

देख सकता है, जिस प्रकार स्वच्छ दर्पण में अपनी परछाईं !

कौन-सा हाथ देखना चाहिए

इस सम्बन्ध में मैं कुछ प्रकाश पीछे के पन्नों पर डाल आया हूँ, गर्ग ने इस सम्बन्ध में व्यवस्था देते हुए कहा है—

"अर्थात् संप्रवक्ष्यामि गर्ग सामुद्र संग्रहं
स्त्रीणां च पुरुषाणां च फलं साम्याय कल्पते ।
विशेषाद्दक्षिण: पुंसां वाम: स्त्रीणां तथा स्मृत:
रेखा निसर्ग जायत्र काले नैमित्तिक स्तथा: ।।

स्पष्टत: पुरुष स्त्री में भेद न कर उनके दोनों ही हाथों की रेखाओं का अध्ययन करना चाहिए; पर आगे ही गर्ग ने स्पष्ट कर दिया है, किं पुरुष के दाहिने हाथ को तथा स्त्री के वायें हाथ को विशेष महत्त्व देना चाहिए ।

एक अन्य विद्वान् ने भी कहा है—

वाम हस्तेना स्त्रीणां पुरुषाणां च दक्षिणे ।
चिह्नं निरूपयेद्धीमान् समुद्र वचनं यथा ।।

अर्थात् पुरुष के दाहिने तथा स्त्री के वाम हस्त पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना चाहिए । इस सम्बन्ध में मेरे अनुभव निम्न हैं—

- दोनों ही हाथों का सरसरी तौर से तो अध्ययन करना ही चाहिए ।
- पुरुष के दाहिने हाथ को ही प्रधानता देनी चाहिए ।
- जो स्त्री अपने पति की कमाई पर आश्रित है, उसका वायाँ हाथ ही देखना चाहिए, पर यदि स्त्री स्वतन्त्र है, स्वयं नौकरी करती है, एवं पति की कमाई पर आश्रित नहीं है, या जिसने तलाक ले लिया है, ऐसी स्त्रियों के दाहिने हाथ को ही विशेष महत्त्व देना चाहिए ।
- पन्द्रह वर्ष तक के बालक का भी वायाँ हाथ ही देखना चाहिए ।
- यदि पुरुष निकम्मा, अपाहिज, स्त्री की कमाई पर आश्रित हो, तो उसका भी वायाँ हाथ ही देखना चाहिए, जिस पुरुष में स्त्रियोचित गुण विशेष हों, दब्बू डरपोक और पत्नी से आतंकित एवं दबे हुए हों, उनका भी वायाँ हाथ देखना ज्यादा अनुकूल

कहा जा सकता है।

●जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ, दोनों ही हाथों की रेखाओं का अध्ययन करना चाहिए, पर यदि कोई रेखा दोनों हाथों में अलग-अलग हो तो पुरुष के दक्षिण तथा स्त्री के वाम हस्त को प्रधानता देते हुए फलकथन करना चाहिए।

●मेरी राय में पुरुष के बायें हाथसे विवाह, ससुराल, पत्नी, सन्तति आदि का तथा स्त्री के दाहिने हाथसे इन तथ्यों का विचार करना चाहिए।

●पुरुष के बायें हाथ से माता-पिता, पैतृक सम्पत्ति, वंश-परम्परा आदि का विचार अभीष्ट रहेगा, स्त्री के बारे में इससे विपरीत विचार जानना चाहिए।

यदि उपर्युक्त तथ्यों को हम ध्यान में रखें तो सत्यता के निकट होंगे, ऐसा मेरा अनुभव है।

हाथ : एक परिचय

हाथ की बनावट ईश्वर ने एक विशेष ढंग से की है। मणिवन्ध वह भाग है, जो भुजा को हाथ से जोड़ने में कड़ी का काम करता है।

आठ छोटी-छोटी हड्डियों से कलाई का निर्माण हुआ, जिन्हें कार्पल बोन्स (CARPAL-BONES) या कार्पस् कहते हैं। इससे सम्पृक्त होती हुई पाँच हड्डियाँ निकलती हैं, जिन्हें मेटा-कार्पल बोन्स (METACARPAL BONES) कहते हैं। ये ही हड्डियाँ आगे चल कर अँगूठे एवं चार उँगलियों का आधार बनती हैं।

इन मेटाकार्पल बोन्स से चौदह हड्डियाँ जुड़ी होती हैं, इनमें से तीन-तीन हड्डियों से अँगुलि तथा दो हड्डियों से अँगूठे का निर्माण होता है, इन हड्डियों के ऊपरी सिरे नाखूनों से सुरक्षित रहते हैं।

मणिवन्ध से मध्यमा उँगली के सिरे तक के भाग को हाथ कहते हैं, प्रकार भेद से ये पाँच होते हैं—१. अत्यन्त छोटा हाथ, २. छोटा हाथ, ३. सामान्य हाथ, ४. लम्वा हाथ, ५. अत्यन्त लम्वा हाथ।

यदि हाथ को उल्टा करके देखें, तो हाथ की बनावट स्वतः ही समझ में आ जायेगी, सामान्यतः मणिवन्ध से मध्यमा उँगली की जड़ तक का भाग, मध्यमा उँगली की अपेक्षा कुछ ज्यादा लम्वा होता है, पर कई हाथों में ये दोनों ही भाग वरावर होते हैं, कहीं हाथ छोटा और अँगुलियाँ वड़ी होती हैं, इन्हीं भेदों से पाँच प्रकार वनते हैं—

अत्यन्त छोटा हाथ : ऐसे व्यक्ति क्षुद्र एवं संकीर्ण विचारों से ग्रस्त रहते हैं, व्यापक परिवेश या जीवन में व्यापक दृष्टि आ ही नहीं सकती। अपने विचारों, कार्यों एवं भावनाओं के कारण सफलता सन्दिग्ध रहती है, छोटी-छोटी बातों पर झगड़ पड़ना, स्वार्थ को सर्वोपरि महत्त्व देना, अवसरवादी होना इनके रक्त में मिला होता है। ईर्ष्या, परद्रोह, परनिन्दा, कुटिलता, चालाकी इनको घुट्टी में ही मिल जाती है, समाज के लिए ये व्यक्ति व्यर्थ होते हैं।

छोटा हाथ : इनके मस्तिष्क में कल्पनाएँ तो वढ़ी-चढ़ी होती हैं, पर ये आलस्य के कारण उन्हें कभी भी क्रियान्वित नहीं कर पाते। डींगे हाँकना, बढ़-चढ़कर वातें करना, अपने इर्द-गिर्द झूठा एवं आडम्वरपूर्ण वातावरण बनाये रखना इन्हें प्रिय होता है, और ये कार्य भी ऐसे ही करते हैं, जिससे इनके चतुर्दिक भ्रम की सृष्टि वनी रहे। ये तीव्र दिमाग रखनेवाले होते हैं पर समय का अवसर नहीं समझते, काम सम्पन्न हो जाने पर पछताते रहते हैं।

सामान्य हाथ : ऐसे व्यक्ति व्यावहारिक वुद्धि सम्पन्न होते हैं, कव क्या करना है ? किससे कितनी वात करनी है, इन्हें भली प्रकार आता है। ऐसे व्यक्ति पूर्ण व्यवहारकुशल होते हैं।

समाज में ये सम्मानित रहते हैं तथा किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके भले-वुरे की पहचान पहले ही कर लेते हैं, कठोर संघर्ष एवं परिश्रम के बल पर ये व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। स्वास्थ्य इनका ठीक रहता है, परिस्थितियों

के अनुसार अपने-आपको ढालने की इनमें क्षमता होती है।

लम्बा हाथ : ऐसे व्यक्ति समशीतोष्ण रहते हैं। अत्यन्त व्यावहारिक, होशियार एवं मेधावी होते हैं, कोई भी कार्य हो उसकी तह तक पहुँचने की क्षमता रखते हैं एवं उस कार्य के बारे में जो पूर्व धारणा बनाते हैं, वह सत्य होती है। आदमी को पहचानने की इनमें अद्‌भुत क्षमता होती है, अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को देखकर उसके बारे में, उसके चरित्र के बारे में, उसकी कार्य-कुशलता के बारे में जो धारणा बनाते हैं, वह आगे चलकर पूर्णतः सही उतरती है।

अत्यन्त लम्बा हाथ : ऐसे व्यक्ति भावुक एवं कल्पना की दुनिया में ही जिन्दा रहनेवाले होते हैं, यथार्थ के ठोस धरा-तल पर ये सक्षम सिद्ध नहीं होते, अपितु घबरा जाते हैं। परिस्थितियों को चुनौती देना इनके वश की बात नहीं, ये घबराकर या तो तुरन्त पीछे हट जाते हैं या मैदान छोड़कर तुरन्त भाग खड़े होते हैं। मैंने इन्हें कभी भी सन्तुष्ट नहीं देखा, प्रबल छिद्रान्वेषी होते हैं, तथा सभी से परेशान, यहाँ तक कि अपने-आप से भी असन्तुष्ट रहते हैं।

हाथ की बनावट

हड्डियों के पतले-भारी होने, छोटी-बड़ी होने तथा पर्वतों के उभार अन्तर से समस्त प्रकार के हाथों को हम सात वर्गों में बाँट सकते हैं, वे निम्न हैं—

१. प्रारम्भिक प्रकार (Elementary Type)
२. वर्गाकार हाथ (Square Type)
३. कर्मठ हाथ (Spatulate Type)
४. दार्शनिक हाथ (Philosophical Type)
५. कलात्मक हाथ (Conic of Artistic Type)
६. आदर्श हाथ (Psychi of Idealistic Type)
७. मिश्रित हाथ (Mixed Type)

आगे की पंक्तियों में मैं इन हाथों की विशेषता को स्पष्ट कर रहा हूँ—

१. प्रारम्भिक प्रकार : ऐसा हाथ खुरदरा भारी और मोटा-सा होता है, इस प्रकार के हाथ की बनावट बेडौल एवं असुन्दर

होती है, उँगलियाँ उभरी हुई एवं असमान होती हैं। ऐसे व्यक्ति अर्द्ध-सभ्य कहे जा सकते हैं, फैशन और सभ्यता में तो ये बढ़े-चढ़े होते हैं, पर संस्कृति के उस स्तर तक नहीं पहुँचे हुए होते, जहाँ आज का विशिष्ट वर्ग है।

जीवन-मूल्यों से ये कोरे होते हैं, घोर भौतिकवादी इन्हें कहा जा सकता है। भोजन, वस्त्र और आवास सुलभ कर लेना ही इनके जीवन की सीमा होती है, इससे आगे भी कुछ है या इससे आगे भी कुछ करने को है—ये इन सबसे अनभिज्ञ रहते हैं।

मेहनती होते हैं, इन्हें श्रमजीवी कहा जा सकता है, बुद्धिजीवी नहीं। छोटी-छोटी बातों पर उफन पड़ना इनका स्वभाव होता है, कानून तोड़ना इनका गुण होता है, अधिकतर अपराधी वर्ग के हाथ इसी कोटि में आते हैं।

२. वर्गाकार हाथ : यदि हाथ को उल्टा करके देखें तो ऐसा हाथ तुरन्त पहचाना जा सकता है, गठीले जोड़ोंवाला, अस्थि-प्रधान बेडौल हाथ ही इस वर्ग में आता है, पर प्रारम्भिक प्रकार के हाथ और इसमें अन्तर यह होता है, कि इस प्रकार के हाथ की उँगलियों में एक विशेष प्रकार की लचक होती है, जो आसानी से पहचानी जा सकती है। ऐसे हाथ अपेक्षाकृत पतले और कम खुरदरे होते हैं।

ऐसे व्यक्ति दार्शनिक, प्रतिभा-सम्पन्न एवं बुद्धिमान होते हैं। समाज को ये कुछ देकर जाते हैं। समाज का ये नेतृत्व करते हैं, वस्तुतः ये बुद्धिजीवी होते हैं। ऐसे हाथ वाले व्यक्ति दार्शनिक, कलाकार, चित्रकार, साहित्यकार, तार्किक आदि होते हैं। जीवन में द्रव्य का सामान्यतः अभाव रहता है और ये धन की अपेक्षा सम्मान-कीर्ति को विशेष महत्त्व देते हैं।

३. कर्मठ हाथ : यह हाथ चौड़ाई की अपेक्षा लम्बाई कुछ ज्यादा लिये हुए होता है। हाथ का प्रारम्भ कुछ थुलथुला-सा और आगे का भाग अपेक्षाकृत हल्का होता है। हथेली की गद्दियाँ मांसल और कठोर होती हैं, तथा पर्वतीय स्थल दबे हुए तथा भारी होते हैं।

ऐसे व्यक्ति निरन्तर सक्रिय रहते हैं, खाली बैठना इन्हें अच्छा नहीं लगता। साधारण श्रेणी में जन्म लेकर भी ये अपने परिश्रम से स्थिति को अनुकूल बना लेते हैं इनके कार्यों में विचार,

भावना एवं पुरुषार्थ का प्रबल सामंजस्य रहता है ।

४. **दार्शनिक हाथ :** ऐसा हाथ फूला हुआ, गठीले जोड़ों से युक्त तथा गुदगुदा-सा होता है, यह न तो विशेष कठोर होता है, और न विशेष कोमल । हाथ में लेते ही यह ऐसा प्रतीत होता है, मानो इसमें विशेष लचक और लय हो, ये अपेक्षाकृत पतले, कोमल और मृदुल हाथ होते हैं ।

दार्शनिक हाथों से सम्पन्न व्यक्ति योग्य, विद्वान् एवं बुद्धि-जीवी होते हैं । समाज के लिए ये व्यक्ति ज्यादा उपयोगी एवं नेतृत्व देनेवाले सिद्ध हुए हैं, समाज जिन कार्यों से ऊँचा उठता है, देश जिन कार्यों से गौरवान्वित होता है, वे कार्य ऐसे ही व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न होते हैं ।

५. **कलात्मक हाथ :** इनका हाथ नरम, लचकदार, मुलायम गुलावी-सी आभा लिये हुए तथा सुन्दर होते हैं, हड्डियों के जोड़ समानुपातिक होते हैं, इन हाथों की पहचान इनकी उँगलियों से होती है, इनकी उँगलियाँ पतली, लम्बी एवं सुघड़ होती हैं ।

ये व्यक्ति स्वभावतः कला-प्रेमी एवं सौन्दर्यजीवी होते हैं, इनके हृदय में कला के प्रति भूख रहती है, स्वयं तो ये कलाकार होते ही हैं, पर यदि ये कलाकार नहीं भी होते, तो कला के जवरदस्त पारखी होते हैं, जीवन में असफल प्रेम को सीने से दवाये रहते हैं ।

६. **आदर्श हाथ :** हाथ का यह सर्वोत्तम प्रकार कहा गया है । ऐसा हाथ सुडौल, मुलायम एवं एक विशेष लचक लिये हुए होता है । ऐसा हाथ न अधिक लम्वा होता है न अधिक चौड़ा ।

ऐसे व्यक्ति सूक्ष्मदर्शी होते हैं, वाल की खाल तक पहुँचना इनका स्वभाव होता है, जीवन में इन्हें कठोर संघर्षों एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, पर ये विचलित नहीं होते । समाज से तिरस्कार और उपेक्षा भी मिलती है तो ये हताश नहीं होते । सांसारिक दृष्टि से कोरे, केवल आदर्शों में ही जीवन जीनेवाले ऐसे व्यक्तियों का संसार असफल ही कहाता है, लेकिन फिर भी धुन के धनी होने के कारण इनका योगदान समाज के लिए एक वरदानस्वरूप ही होता है ।

७. **मिश्रित हाथ :** यह हाथ का अन्तिम वर्ग कहा जा सकता है । पहले छह वर्गों में जो हाथ नहीं आता, उस हाथ की गणना

इस वर्ग में की जाती है, इस प्रकार के हाथों में एक से अधिक समानता मिली-जुली होती है। हाथ का यह मिश्रण इनके चरित्र, व्यवहार एवं कार्यकलाप में भी पाया जाता है। प्रत्येक कार्य को ये जिस उतावली से प्रारम्भ करते हैं, धीरे-धीरे इनका वह जोश ठण्डा पड़ जाता है, तथा कार्य को मार्ग में ही अधूरा छोड़कर दूसरा नया कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। सन्देह, आशंका और भ्रम से निरन्तर घिरे रहने के कारण ये जीवन में सफल नहीं हो पाते।

हाथ का प्रकार

मणिवन्ध से लेकर मध्यमा उँगली के अन्तिम सिरे तक का क्षेत्र हाथ के अन्तर्गत आता है, प्रकार भेद से इसके निम्न वर्ग होते हैं—

हथेली और उँगलियों की लम्बाई बराबर : मणिबन्ध से लेकर मध्यमा उँगली के जड़ तक एक भाग तथा मध्यमा उँगली से उसके अन्तिम पोरुए के अन्तिम सिरे तक का दूसरा भाग। यदि ये दोनों भाग बराबर हों तो व्यक्ति सन्तुलित विचारधारा वाला एवं चतुर होता है। जीवन में यह व्यक्ति सफल होता है।

उँगलियों से हथेली छोटी होना : ऐसा व्यक्ति आदर्श विचारोंवाला, तथा श्रेष्ठ कल्पना का धनी होता है, जीवन में इनका एक निश्चित लक्ष्य होता है, ध्येय होता है, और उसे प्राप्त करने के लिए ये जी-जान से जुट जाते हैं।

हथेली का मोटी होना : मोटी हथेली इस बात का द्योतक है कि व्यक्ति ऊपर से चाहे कितना ही सहृदयता का लबादा ओढ़े, आन्तरिक रूप से यह क्रूर एवं स्वार्थी है, अपने मतलब के लिए यह दूसरों के अहित में कुछ भी कर सकता है।

मोटी और कठोर हथेली : मोठी और कठोर हथेली व्यक्ति की क्रूरता को प्रदर्शित करती है, असभ्यता की मात्रा उसमें जरूरत से ज्यादा होती है।

मोटी और सामान्य हथेली : मोटी होने के साथ-साथ यदि हथेली न अधिक कठोर हो और न नरम, तो व्यक्ति असन्तुलित मस्तिष्कवाला, परन्तु अपने निश्चय पर दृढ़ रहनेवाला होता है।

ईमानदारी और बेईमानी के बीच यह व्यक्ति झूलता रहता है।

मोटी और कम नरम हथेली : ऐसा व्यक्ति आराम से जीवन जीनेवाला तथा मुलायम प्रकृति का होता है, व्यर्थ की भागदौड़ इसे पसन्द नहीं, जरूरत से ज्यादा संघर्ष इसे प्रिय नहीं।

मोटी और नरम हथेली : ऐसा व्यक्ति परिश्रम से घबराता है, परिश्रम से घृणा करता है, बिना हाथ-पाँव हिलाये सुखी जीवन व्यतीत करना चाहता है, जीवन में सफलता का यह आकांक्षी रहता है, पर यह आवश्यक नहीं कि इसे सफलता मिले ही।

पतली एवं कठोर हथेली : ऐसा व्यक्ति ठण्डे दिल और दिमाग का व्यक्ति होता है, सहृदयता की मात्रा इसमें कम होती है, समय पड़ने पर हत्या तक करने से ये चूकते नहीं, इनकी बातों पर सहज ही विश्वास नहीं किया जा सकता।

पतली और सामान्य हथेली : शान्त विचारोंवाला यह व्यक्ति संकीर्ण विचारों का धनी होता है, यह असन्तुलित मस्तिष्कवाला होता है, यह कहता कुछ और करता कुछ है।

पतली और नरम हथेली : कमजोर विचारों एवं दुर्बल हृदयवाला यह व्यक्ति शीघ्र ही गुस्सा हो जाता है। जरूरत से ज्यादा यह भावुक एवं अस्थिर प्रकृति का होता है।

हथेली

उँगली की जड़ से पहले मणिबन्ध तक हथेली की लम्बाई कहलाती है, तथा अँगूठे की जड़ से दूसरे अन्तिम सिरे तक को हथेली की चौड़ाई कहा जाता है, हस्तरेखा जिज्ञासुओं को चाहिए कि वे सूक्ष्मता से हथेली के प्रकार को भी समझें।

सँकरी हथेली : ऐसे व्यक्ति कमजोर प्रकृतिवाले होते हैं तथा किसी का भी अहित करने से ये नहीं चूकते। इन पर आसानी से विश्वास करना खतरे से खाली नहीं।

चौड़ी हथेली : ये व्यक्ति श्रेष्ठस्तरीय व्यक्ति होते हैं चारित्रिक दृष्टि से ये दृढ़ निश्चयी एवं मजबूत हृदयवाले होते हैं।

अत्यधिक चौड़ी हथेली : ऐसा व्यक्ति अस्थिर प्रकृति का होता है, तथा तुरन्त निर्णय लेने में अक्षम रहता है।

समचौरस हथेली : जिसकी हथेली समचौरस होती है, वह स्वस्थ, सबल, शान्त, स्थिर प्रकृतिवाला तथा दृढ़ निश्चयी होता है।

रंग

हथेली को छूने से पहले ही उसके स्वाभाविक रंग का भी अध्ययन कर लेना चाहिए।

लाल : गर्म स्वभाव वाला, जल्दी ही विफर जानेवाला, तथा संकीर्ण विचारोंवाला होता है।

अत्यधिक लाल : जिस व्यक्ति की हथेली का रंग अत्यधिक लाल हो, वह अत्यधिक स्वार्थी, अवसरवादी तथा खूनी स्वभाव-वाला होता है।

पीला : पीले रंग की हथेली रोग की सूचक है, ऐसा व्यक्ति रोगी, चिड़चिड़ा तथा कमजोर मस्तिष्कवाला होता है।

गुलाबी : यह स्वस्थता, सहृदयता एवं सभ्यता को प्रदर्शित करता है। ऐसा व्यक्ति उच्च विचारों का धनी एवं सन्तुलित दिमागवाला होता है।

चिकनी त्वचा : हथेली की त्वचा चिकनी हो तो वह व्यक्ति सहृदय एवं अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़नेवाला होता है।

सूखी त्वचा : ऐसे व्यक्ति चर्म रोगी होते हैं तथा अत्यधिक अस्थिर प्रकृतिवाले होते हैं !

रूखी त्वचा : अत्यधिक सूखी तथा रूखी त्वचा व्यक्ति की कमजोरी, लीवर की बीमारी तथा दुर्बल मनोवृत्ति को स्पष्ट करती है।

नाखून

हथेली का अध्ययन करने से पहले उँगलियों के नाखूनों पर भी विशेष विचार करना चाहिए।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नाखूनों के दो कार्य हैं—१. उँगलियों के पौरों की रक्षा करना, जिससे वाहरी आघात से कटे-फटे नहीं।

ये विद्युत् संवाहक हैं, वायुमण्डल में जो विद्युत् है, इसके माध्यम से शरीर में प्रवेश करती है, यही नहीं अपितु अन्य ग्रहों

की रश्मियाँ भी इन्हीं नाखूनों के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर पाती हैं।

छोटे नाखून : ये असभ्यता को प्रदर्शित करते हैं, चाहे उस व्यक्ति नें सभ्य घराने में ही जन्म लिया हो, पर प्रकृति से वह संकीर्ण विचारोंवाला, कमजोर, स्वार्थी तथा दुष्ट स्वभाववाला होता है।

कठोर एवं सँकरे नाखून : ऐसे व्यक्ति झगड़ालू प्रकृति के होते हैं, हठी एवं दुराग्रही भी होते हैं, अपनी बात पर अड़े रहेंगे, चाहे वह सही हो या गलत। ऐसे व्यक्तियों पर सहज ही विश्वास नहीं किया जाना चाहिए।

चौकोर नाखून : उँगलियों पर चौकोर नाखून हों तो वह व्यक्ति हृदय का बीमार होता है, तथा जरा-सी विपरीत परिस्थिति से घबरा जाता है।

लम्बाई की अपेक्षा चौड़े नाखून होना : ऐसे व्यक्ति तुरन्त गुस्सा होते हैं, अपनी धुन के ये पक्के होते हैं, पर अपने कार्यों में व्याघात इन्हें पसन्द नहीं, इसीलिए ये अलग-थलग से बने रहते हैं।

तिकोने नाखून : तिकोने नाखून (ऊपर से चौड़े तथा नीचे से सँकरे) वाले व्यक्ति सुस्त होते हैं, अगर जच गयी तो काम पर भूत की तरह पिल पड़ेंगे, अन्यथा कई-कई दिनों तक सुस्त पड़े रहेंगे।

ऊपर से गोलाकार होना : जिनके नाखून ऊपर से गोलाकार होते हैं, वे स्वच्छ सशक्त विचारोंवाले, एवं तुरन्त सही निर्णय लेनेवाले होते हैं।

पतले और लम्बे नाखून होना : शारीरिक दृष्टि से कमजोर, मानसिक दृष्टि से दुर्बल तथा विचारों से कच्चे होते हैं।

सफेद नाखून : यदि नाखूनों का रंग सफेद हो तो व्यक्ति परिश्रमी, धुनी एवं दृढ़ निश्चयी होता है, विलम्ब इसे सह्य नहीं।

गुलाबी नाखून : उन्नत स्वास्थ्य, उदार व्यक्तित्व एवं प्रगतिवादी विचारों से सम्पन्न होता है।

कालिमा लिये हुए नाखून : जिन व्यक्तियों के नाखून कालिमा लिये हुए होते हैं, वे रोगी, चिड़चिड़, कमजोर हृदय-

वाले तथा धर्मभीरू होते हैं।

नाखूनों की जड़ों में अर्द्धचन्द्र होना : (छोटा अर्द्धचन्द्र) नाखूनों की जड़ों में छोटा अर्द्धचन्द्र प्रगति का सूचक है—

१. तर्जनी उँगली पर यह अर्द्धचन्द्र बने तो शीघ्र ही राज्य-सेवा में उन्नति या शुभ समाचार मिलने के आसार बनते हैं।
२. मध्यमा उँगली पर अर्द्धचन्द्र हो तो मशीनरी सम्बन्धी कार्यों में लाभ होता है, आकस्मिक शुभ समाचार मिलने का योग बनता है।
३. अनामिका उँगली पर बने तो शीघ्र ही सम्मान-वृद्धि, प्रतिष्ठा वृद्धि एवं समाज में आदर बढ़ता है।
४. कनिष्ठिका उँगली पर अर्द्धचन्द्र बने, तो व्यापारी से, या व्यापारिक कार्यों से लाभ होने के आसार बढ़ते हैं।
५. अँगूठे के नाखून की जड़ में यदि यह अर्द्धचन्द्र बने, तो समस्त प्रकार से उन्नति एवं शुभ संकेत समझना चाहिए।

बड़ा अर्द्धचन्द्र होना : यदि नाखूनों की जड़ में बड़ा अर्द्धचन्द्र हो तो विपरीत फल समझना चाहिए। ऊपर प्रत्येक उँगली से सम्बन्धित जो फल बताये हैं, उनसे विपरीत विचार करना चाहिए।

नाखूनों पर सफेद धब्बे : नाखूनों पर सफेद धब्बे रक्त-भ्रमण में गतिरोध को स्पष्ट करता है, भावी रोग का सूचक होता है, तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी के संकेत देता है।

नाखूनों पर काले धब्बे होना स्पष्टतः यह इस बात का संकेत है कि रक्त में दूषितता आ गयी है। शीघ्र ही ऐसा व्यक्ति चेचक, मलेरिया, बुखार या ऐसी ही रक्त से सम्बन्धित बीमारी से पीड़ित होगा।

हथेली का अध्ययन सावधानी से किया जाय, हथेली पर पाया जानेवाला कोई भी संकेत व्यर्थ नहीं होता, अतः हथेली, त्वचा, त्वचा का रंग, हथेली की लम्बाई, चौड़ाई, उँगलियाँ, नख, नखों का रंग, नखों पर पाये जानेवाले धब्बे, सभी कुछ संकेत हैं और इन संकेतों की भाषा को जो सही रूप में पढ़ पाता है, वही कुशल हस्तरेखा विशेषज्ञ है।

उँगलियाँ

हाथ में उँगलियों का सर्वाधिक महत्त्व है। इससे व्यक्ति की बुद्धि, योग्यता तथा गुण आदि का सहज ही पता चल जाता है। अँगूठे को भी गिनें, तो मानव के प्रत्येक हाथ में पाँच-पाँच उँगलियाँ हैं, किसी-किसी व्यक्ति के हाथ में नैसर्गिक रूप से चार या छह उँगलियाँ भी पायी जाती हैं, पर न्यूनाधिक होना अशुभ, दरिद्रता एवं अल्पायु का द्योतक है।

उँगलियों के नाम

१. **तर्जनी :** अँगूठे के पासवाली अँगुली को तर्जनी, या प्रथमांगुली, या गुरु की अँगुली कहते हैं।

२. **मध्यमा :** तर्जनी के पासवाली उँगली, जो अन्य उँगलियों से बड़ी होती है, मध्यमा कहलाती है। इसे दूसरी उँगली या शनि की उँगली भी कहते हैं।

३. **अनामिका :** मध्यमा के पासवाली उँगली को अनामिका, देव उँगली, तीसरी उँगली, या सूर्य की उँगली भी कहते हैं।

४. **कनिष्ठिका :** अनामिका के पासवाली सब से छोटी उँगली को कनिष्ठिका, पितृ उँगली, चौथी उँगली या बुध की उँगली कहा जाता है।

५. **अँगूठा :** इसका स्वतन्त्र व सर्वाधिक महत्त्व है, किसी भी कार्य के करने में, उँगली स्वतन्त्र नहीं है। जब तक कि उसे अँगूठे का सहयोग नहीं मिले अर्थात् अँगूठा और अँगुली मिलकर ही किसी कार्य को कर सकते हैं। इसे शुक्र की अँगुली भी कहते हैं।

स्थान

१. तर्जनी के मूल में बृहस्पति का स्थान है।
२. मध्यमा के मूल में शनि ग्रह का स्थान है।
३. अनामिका के मूल में सूर्य का स्थान है।
४. कनिष्ठिका के मूल में बुध का स्थान है।
५. अँगूठे के मूल में शुक्र ग्रह का स्थान है।

अधिस्थान

१. अँगूठे के मूल में ब्रह्मतीर्थ है।
२. अँगूठे व तर्जनी के मध्य भाग में पितृतीर्थ हैं।
३. तर्जनी के मूल में शत्रुंजय तीर्थ है।
४. तर्जनी व मध्यमा के मध्यभाग में देवतीर्थ है।
५. मध्यमा के मूल भाग में ऋषि तीर्थ है।
६. मध्यमा व अनामिका के मध्यभाग में अष्टापद तीर्थ है।
७. अनामिका के मूल में अर्बुद तीर्थ है।
८. अनामिका व कनिष्ठिका के मध्यभाग में देवतीर्थ है।
९. कनिष्ठिका के मूल में भी पितृ तीर्थ है।
१०. कनिष्ठिका के मूल भाग से कलाई तक के वहिर्भाग में ऋषयतीर्थ की अवस्थिति मानी गयी है।
११. मणिवन्ध के समानान्तर भाग में गंगतीर्थ माना है।
१२. मणिवन्ध से अंगूष्ठ मूल तक के भाग को सुमेघ तीर्थ माना है।

हाथ की उँगलियों का अध्ययन तीन विन्दुओं से किया जाना चाहिए— १. उँगलियों की स्थिति, २. उँगलियों की लम्बाई, ३. उँगलियो का स्वरूप।

उँगलियाँ समानान्तर सीधी व स्पष्ट होनी चाहिए, उल्टा हाथ कर हम सीधी तनी हुई उँगलियाँ खड़ी करें, तो वे समानान्तर व सीधी होनी चाहिए, जो उँगली दवी हुई होगी, उससे सम्वन्धित ग्रह कमजोर समझना चाहिए, एवं उससे सम्बन्धित फल भी क्षीण ही होगा।

१. यदि तर्जनी अन्य उँगलियों की अपेक्षा झुकी हुई या बलखायी हुई हो तो वह व्यक्ति समाज में सम्मान पाने का आकांक्षी तो होता है, पर सम्मान मिल नहीं पाता, अपने-आप में वह हीन भावना अनुभव करता है, उसकी शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर व्यवधान आते रहते हैं।

२. यदि मध्यमा उँगली अन्य उँगलियों से दवी हुई, झुकी हुई या बलखायी हुई हो तो वह व्यक्ति भाग्यहीन होता है, जीवन में जरूरत से ज्यादा उसे उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं तथा वह सुस्त, हताश एवं दुःखी जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

३. यदि अनामिका उँगली, अन्य उँगलियों की अपेक्षा दबी हुई, झुकी हुई या बलखायी हुई हो तो वह व्यक्ति घोर स्वार्थी खुदगर्ज एवं अवसरवादी होता है।

४. यदि कनिष्ठिका उँगली अन्य उँगलियों की अपेक्षा दबी हुई, झुकी हुई या बलखायी हुई हो तो व्यक्ति देव-विरोधी होता है, व्यापार में बार-बार हानि होती है, तथा उसे धन-संग्रह में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

५. यदि अँगूठा दबा हुआ, झुका हुआ, या टेढ़ा हो तो व्यक्ति अनिश्चित मनःस्थितिवाला होता है। वह जीवन में न तो स्थायित्व आ पाता है और न निश्चिन्तता ही। ऐसे व्यक्ति का कोई लक्ष्य नहीं होता, कोई सिद्धान्त नहीं होता, कोई जीवन-दर्शन नहीं होता।

उभरा हुआ

अँगूठा : यदि अँगूठा जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो तो व्यक्ति अहंकारी होने के साथ-साथ कपोल कल्पना प्रिय होता है। उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ जरूरत से ज्यादा बढ़ी-चढ़ी होती हैं, और जब उसकी इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं, तब वह हताश, निराश और परेशान-सा रहता है।

तर्जनी : यदि तर्जनी अन्य उँगलियों की अपेक्षा ज्यादा उभरी हुई हो, तो व्यक्ति को नौकरी में निरन्तर परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं, उन्नति के द्वार कठिनता से ही खुलते हैं, तथा जीवन-पथ ज्यादा संघर्षपूर्ण बना रहता है।

मध्यमा : यदि मध्यमा उँगली ज्यादा उभरी हुई हो तो व्यक्ति भाग्यहीन होता है, 'अत्यधिक श्रम और कम लाभ' उसके जीवन का हेतु हो जाता है, वह निरन्तर परिश्रम में रत रहता है, शारीरिक रूप में दृढ़, पर मानसिक रूप में कमजोर होता है।

अनामिका : यदि अनामिका उँगली उभरी हुई हो तो वह समाज में हीन जीवन व्यतीत करता है, उसकी इच्छा सम्मान की होती है, पर सम्मान उसे मिल नहीं पाता, अधिकतर उसका जीवन गुमनाम रूप में ही बीतता है।

कनिष्ठिका : यदि कनिष्ठिका उँगली ज्यादा उभरी हुई हो तो वह व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से कमजोर ही रहता है, बैंक बेलेन्स नहीं बन पाता।

दूरी

दो उँगलियों के बीच की दूरी को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

अँगूठे व तर्जनी के बीच की दूरी : यदि यह दूरी जरूरत से ज्यादा हो तो व्यक्ति दृढ़ निश्चयी हठी, एवं परिश्रमी होता है, उसके मन की जो आकांक्षाएँ होती हैं, उसे वह जल्दी-से-जल्दी पूरी करने को उतावला रहता है, एक बार जो यह मन में निश्चिय कर लेता है उसे पूरा करके ही छोड़ता है।

तर्जनी व मध्यमा के बीच की दूरी : यह दूरी ज्यादा हो तो व्यक्ति में व्यर्थ का बड़प्पन रहता है, वह अपने आपको जरूरत से ज्यादा होशियार एवं चालाक समझता है, तथा अपने स्वार्थ के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है।

मध्यमा व अनामिका के बीच की दूरी : मध्यमा तथा अनामिका के बीच की दूरी जरूरत से ज्यादा हो तो वह व्यक्ति सूझबूझ वाला, चतुर एवं अपना काम निकालने में होशियार होता है, उसका दिमाग उर्वर एवं सूझबूझवाला होता है।

अनामिका व कनिष्ठिका के बीच की दूरी : अनामिका तथा कनिष्ठिका के बीच जरूरत से ज्यादा दूरी हो तो वह व्यक्ति सफल व्यापारी होता है, धन किस प्रकार संचित किया जाय, यह कला उसे बखूबी आती है। व्यापारिक कार्यों में यह सफल होता है, तथा हमेशा अपने हित को सर्वोपरि महत्त्व देता है।

छिद्र

कई व्यक्तियों की अंगुलियों को सीधी स्पष्ट करके देखी जाय, तो उँगलियों के बीच में कुछ जगह शेष रह जाती है, उसे छिद्र कहते हैं।

तर्जनी व मध्यमा के बीच : यदि यह छिद्र तर्जनी व मध्यमा के बीच हो तो वह व्यक्ति अपने विचारों में स्वतन्त्र रहता है, इसे कोई दबा नहीं सकता, मुंह पर खरी-खरी बात कहने में यह हिचकिचाता नहीं, स्पष्टवादिता इसका प्रधान गुण है।

मध्यमा व अनामिका के बीच : मध्यमा व अनामिका के बीच यह छिद्र हो तो व्यक्ति निरुद्देश्य जीवन-यापन करता है,

उसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता, उसके विचारों में दृढ़ता नहीं होती, अपनी जबान पर ऐसे व्यक्ति खरे नहीं उतरते।

अनामिका व कनिष्ठिका के बीच : अनामिका व कनिष्ठिका के बीच छिद्र हो तो व्यक्ति हिम्मती, साहसी, संघर्षों से भिड़ जानेवाला, तथा गम्भीर होता है। संकटों की यह परवाह नहीं करता, विपरीत परिस्थितियाँ इसे विचलित नहीं कर सकतीं।

अँगूठे व तर्जनी के बीच : अँगूठे व तर्जनी के बीच छिद्र हो तो व्यक्ति सामान्य होता है, उसके पेट में बात पचती नहीं। ऐसा व्यक्ति विश्वासपात्र नहीं कहा जा सकता।

पारदर्शी : यदि चारों उँगलियाँ सीधी खड़ी कर दी जायें और एक तरफ से प्रकाश डालने पर दूसरी तरफ भी प्रकाश दिखाई दे, या उँगलियाँ पारदर्शी हों तो वह व्यक्ति सहृदय एवं उन्नतिशील होता है।

अपारदर्शी : यदि उँगलियाँ अपारदर्शी हों तो वह व्यक्ति मलीन विचारोंवाला, संकीर्ण तथ्यों पर ध्यान देनेवाला तथा दुराग्रही व्यक्ति होता है।

लम्बाई

उँगलियों की लम्बाई का सामुद्रिकशास्त्र में अत्यधिक महत्त्व है, अतः हस्तरेखा विद् को इस सम्बन्ध में भी पूरी जानकारी एवं सावधानी बरतनी चाहिए।

अत्यधिक लम्बी उँगलियाँ : ऐसा व्यक्ति क्रूर, स्वार्थी, एवं मस्तिष्क विकृति लिये हुए होता है, आत्मसंयम कम एवं उतावली ज्यादा होती है, जितनी उतावली से ये कार्य प्रारम्भ करते हैं, उतनी ही उतावली से अधूरा भी छोड़ देते हैं, ऐसे व्यक्ति विश्वस्त नहीं कहे जा सकते।

लम्बी उँगलियाँ : व्यक्ति को कलाकार सिद्ध करती हैं, ऐसा व्यक्ति भावुक, सहृदय, सरल प्रकृति, कलाकार तथा जीवन के मर्म को समझनेवाला होता है।

लम्बी तथा पतली उँगलियाँ : लम्बी तथा पतली उँगलियाँ चतुरता की बोधक हैं। अपना काम निकालने में ये होशियार होते हैं, जीवन में इनका एक ध्येय होता है, तथा बीच में कई बाधाओं के रहते हुए भी अन्त में ये सफल होकर रहते हैं।

सामान्य लम्बी उँगलियाँ : ऐसा व्यक्ति सन्तुलित मस्तिष्क वाला, उदार विचारोंवाला, एवं सरल प्रकृति का धनी होता है।

छोटी उँगलियाँ : छोटी उँगलियोंवाला तुरन्त निर्णय लेनेवाला, चतुर, बात की तह तक पहुँचनेवाला एवं समझदार होता है।

अत्यन्त छोटी उँगलियाँ : यह असभ्यता की सूचक हैं, ऐसा व्यक्ति आलसी, चालाक, क्रूर कार्य करने में निपुण तथा निर्दयी होता है।

उँगलियों की तुलनात्मक लम्बाई

उँगलियों की तुलनात्मक लम्बाई का भी सामुद्रिकशास्त्र में महत्त्व है।

तर्जनी उँगली : यदि तर्जनी उँगली मध्यमा से बढ़ी हुई हो तो वह व्यक्ति आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न, दिव्य एवं धार्मिक पुरुष होता है।

यदि तर्जनी उँगली मध्यमा के बराबर हो तो व्यक्ति शक्तिशाली होता है, तथा शक्ति के बल पर अन्य लोगों पर शासन करता है।

यदि तर्जनी उँगली, मध्यमा से काफी छोटी हो तो व्यक्ति संकीर्ण विचारोंवाला दुष्ट एवं अधार्मिक होता है।

यदि तर्जनी उँगली अनामिका उँगली से लम्बी हो तो व्यक्ति बीमार, निर्बल एवं कमजोर हृदयवाला होता है।

यदि तर्जनी उँगली अनामिका के बराबर हो तो व्यक्ति धनवान होता है, तथा समाज में उसे भरपूर सम्मान, ख्याति एवं यश मिलता है।

यदि तर्जनी उँगली अनामिका से काफी छोटी हो तो व्यक्ति शिथिल, निर्बल हृदय एवं छिद्रान्वेषी होता है।

मध्यमा : यदि मध्यमा उँगली अनामिका से काफी लम्बी हो तो व्यक्ति कवि, रसिक, चित्रकार तथा आर्ट को जाननेवाला सहृदय होता है।

यदि मध्यमा उँगली अनामिका के बराबर हो तो व्यक्ति रिश्वतखोर, धोखेबाज, चालाक और तस्कर होता है।

यदि मध्यमा उँगली अनामिका से छोटी हो तो व्यक्ति मूर्ख,

असभ्य एवं छिछले स्तर का होता है।

अनामिका : यदि अनामिका उँगली कनिष्ठिका से अत्यधिक लम्बी हो तो व्यक्ति निश्चय ही कलाकार, कोमल प्राण सहृदय होता है।

यदि अनामिका उँगली कनिष्ठिका के बराबर हो तो व्यक्ति धर्मभीरु आध्यात्मिक विचारों से सम्पन्न एवं दयालु होता है।

यदि अनामिका उँगली कनिष्ठिका से छोटी हो तो व्यक्ति खूंखार, निर्दयी एवं क्रूर होता है।

गाँठें

एक उँगली में दो गाँठे या जोड़ होते हैं। इन गाँठों का भी महत्त्व है—

तर्जनी : (नीचे से ऊपर की ओर)

यदि पहली गाँठ ज्यादा फूली हुई या उभरी हुई हो तो व्यक्ति धन-संचय में प्रवीण होता है।

यदि दूसरी गाँठ उभरी हुई हो तो व्यक्ति धन संचय की कला तो जानता है, पर उसके पास टिकता नहीं।

यदि दोनों गाँठें उभरी हुई हों तो व्यक्ति समाज में सम्मानित जीवन व्यतीत करता है एवं यश प्राप्त करता है।

यदि उँगली में एक भी गाँठ न हो तो व्यक्ति साधारण जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

मध्यमा : यदि मध्यमा उँगली में पहली गाँठ फूली हुई हो तो व्यक्ति भाग्यहीन होता है। आर्थिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति कमजोर ही रहता है।

यदि दूसरी गाँठ उभरी हुई या फूली हुई हो तो व्यक्ति जीवन के संघर्षों से जूझनेवाला, दृढ़निश्चयी एवं हठी होता है।

यदि दोनों गाँठें फूली हुई हों तो व्यक्ति कृपण होता है तथा जीवन में अर्थ को सर्वाधिक महत्त्व देता है।

यदि उँगली में कोई गाँठ न हो तो व्यक्ति सरल, उच्च विचार रखनेवाला तथा समाज में सम्माननीय स्थिति रखनेवाला होता है।

अनामिका : यदि अनामिका उँगली में पहली गाँठ उभरी हुई हो तो व्यक्ति ऊँची महत्त्वाकांक्षावाला होता है, उसके विचार ऊँचे होते हैं, उसके आदर्श ऊँचे होते हैं, और उसका लक्ष्य ऊँचा होता है।

यदि दूसरी गाँठ उभरी हुई हों तो व्यक्ति शेखचिल्ली के-से स्वप्न देखता रहता है, पर उसके ये स्वप्न वास्तविक जगत् में पूरे नहीं होते।

यदि दोनों ही गाँठें उभरी हुई हों तो व्यक्ति प्रसिद्ध एवं समाज में सम्माननीय जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

यदि कोई गाँठ नहीं हो तो व्यक्ति हल्के विचारोंवाला, निम्न-स्तरीय स्त्रियों से सम्पर्क रखनेवाला तथा ओछे विचारोंवाला होता है।

कनिष्ठिका : यदि पहली गाँठ जरूरत से ज्यादा उभरी हुई हो तो व्यक्ति व्यापारिक कार्यों में बार-बार धोखा खाता है, आर्थिक दृष्टि से यह लगभग तंग ही रहता है।

यदि दूसरी गाँठ उभरी हुई हो तो व्यक्ति को अनायास धन प्राप्ति होती है तथा वह व्यापारिक कार्यों में सफल रहता है।

यदि दोनों ही गाँठें उभरी हुई हों तो व्यक्ति चालाक, धूर्त एवं तस्कर जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

यदि कोई गाँठ नहीं हो तो व्यक्ति सरल, सीधा, स्वच्छ व उन्नत विचारोंवाला व्यक्ति होता है।

उँगलियों के सिरे

हाथ की उँगलियों का अध्ययन करते समय उसके सिरों का भी ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए।

सिरे चार प्रकार के होते हैं— १. पतले, २. कोनदार, ३. चौरस, ४. मोटे, फटे हुए।

तर्जनी

पतला : यदि तर्जनी उँगली का सिरा पतला हो तो व्यक्ति उच्च आदर्शों से सम्पन्न होता है।

कोनदार : अध्ययन में रुचि रखने वाला।

चौरस : ईमानदारी से जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

मोटा : अभिनय करनेवाला होता है।

मध्यमा

पतला : आध्यात्मिक शक्ति की उज्ज्वलता।

कोनदार : स्वास्थ्य में निम्नता, धर्म भीरू।

चौरस : होशियार।

मोटा : निरन्तर कार्य में रत रहनेवाला।

अनामिका

पतला : आदर्शवादी।

कोनदार : साहित्यिक रुचिवाला।

चौरस : सत्यवादी।

मोटा : रंगमंच का शौकीन।

कनिष्ठिका

पतला : वैज्ञानिक विचारधारावाला।

कोनदार : चतुर।

चौरस : शिक्षा देने में प्रवीण, धर्मगुरू।

मोटा : व्यापार में सफलता प्राप्त करनेवाला।

अँगूठा

अँगूठा पूरे हाथ का प्रतिनिधि है। हाथ की रेखाएँ देखने की अपेक्षा मुझे केवल अँगूठे का व्यक्तित्व देखने को मिल जाय तो मैं पूरा भविष्य बताने को तैयार हूँ।

अत्यधिक बड़ा : अत्यधिक बड़ा अँगूठा रोग का सूचक है, ऐसा व्यक्ति विभिन्न रोगों से ग्रस्त, चिन्तातुर एवं परेशान रहता है।

बड़ा : आर्थिक दृष्टि से ऐसा व्यक्ति कमजोर होता है, यद्यपि यह कमाता है, पर व्यय पर इसका नियन्त्रण न होने से हर समय खाली-सा ही रहता है।

सामान्य : श्रेष्ठ व्यक्तित्व एवं मधुर व्यवहार का सूचक है, जीवन में यह सुविधा से सफलताएँ प्राप्त करता है।

छोटा : संकीर्ण विचारों, हल्के स्तर एवं श्रमजीवी का द्योतक है, यह व्यक्ति मानसिक दृष्टि से कमजोर होता है।

अत्यधिक छोटा : निर्दयी, कठोर हृदय, तथा खूनी अपराधी व्यक्तित्व का सूचक है।

तर्जनी से नजदीक : हाथ सामान्य रूप से सीधा कर दिया जाय, और अँगूठे तथा तर्जनी के बीच की दूरी कम हो तो व्यक्ति होशियार, ऊँच नीच समझनेवाला समाज में सम्मानित एवं सरल प्रकृति होता है।

तर्जनी से दूर : ऐसा व्यक्ति चालाक एवं धूर्त होता है,

स्वभाव से जिद्दी होने के साथ-साथ अपने स्वार्थ को सर्वोपरि महत्त्व देता है।

मोटा : यदि अँगूठा जरूरत से ज्यादा मोटा हो तो व्यक्ति ईमानदार, आज्ञाकारी एवं स्वामिभक्त होता है।

चौड़ा : अँगूठा संकीर्णता का बोधक है, व्यक्ति के विचार तुच्छ, ओछे एवं हल्के स्तर के होते हैं, वह उच्चस्तर से सोच ही नहीं सकता।

पतला : ऐसा व्यक्ति कोमल, सहृदय एवं कलाकार होता है, आर्ट पर उसका अच्छा अधिकार होता है। दूसरों की भलाई में यह सदैव तत्पर रहता है।

कठोर : कठोर हृदयवाला होने के साथ-साथ इसमें सामान्य बुद्धि का अभाव रहता है। यह व्यक्ति रहस्यमय होता है तथा इसके पेट की बात कोई नहीं निकाल पाता।

पीछे की तरफ झुका हुआ : अत्यधिक पीछे की तरफ झुका हुआ अँगूठा व्यक्ति की दृढ़ता को प्रदर्शित करता है, ऐसा व्यक्ति टूट सकता है, झुक नहीं सकता, अपने सिद्धान्तों के लिए, आदर्शों के लिए मर मिटने को तैयार हो जाता है।

सीधा अँगूठा : यदि अँगूठा पीछे की तरफ झुका हुआ न होकर सीधा हो तो व्यक्ति पुरानी रूढ़ियों से जकड़ा हुआ, मूर्ख होता है। दूसरों की हाँ में हाँ मिलाने में वह प्रवीण होता है।

अँगूठे में केवल एक जोड़ होता है। इस प्रकार इस अँगूठे के दो भाग हो जाते हैं।

ऊपर वाला भाग

अत्यधिक लम्बा : यदि ऊपरवाला भाग अत्यधिक लम्बा हो तो व्यक्ति असन्तुलित मस्तिष्कवाला होता है। उसकी कथनी और करनी में भेद होता है, उसके वचनों का विश्वास नहीं किया जा सकता।

लम्बा : अँगूठे के ऊपरवाला भाग लम्बा हो तो व्यक्ति स्वस्थ, सबल एवं दृढ़ इच्छा-शक्ति से सम्पन्न होता है।

छोटा : ऐसे व्यक्ति को अपने-आप पर नियन्त्रण नहीं होता, किस समय यह क्या कर बैठेगा, इसका भरोसा नहीं।

अत्यधिक छोटा : अत्यधिक छोटा भाग कमजोर इच्छा-शक्ति को प्रदर्शित करता है, वह अपने कार्यों के प्रति लापरवाह

होता है ।

कोणदार : यदि अँगूठे के ऊपर का भाग कोणदार हो तो व्यक्ति आर्टिस्ट होता है, संगीतादि कलाओं में उसकी रुचि रहती है ।

चौरस : यदि ऊपर का भाग चौरस हो तो व्यक्ति शौकीन मिजाज, सहृदय तथा रंगीन तबीयत का आदमी होने के साथ-साथ विपरीत सेक्स के प्रति आसक्त रहता है ।

पतला : ऊपर का भाग पतला हो तो वह व्यक्ति जिस क्षेत्र में होता है, उस क्षेत्र में पूर्णतः सफल रहता है ।

चौड़ा : यदि अँगूठे के ऊपर का भाग चौड़ा हो तो व्यक्ति आधुनिक विचारधारा वाला स्वतन्त्र प्रकृति का होता है ।

मोटा : यदि ऊपर का भाग मोटा हो तो व्यक्ति कुटिल एवं अस्थिर प्रकृति का होता है ।

गाँठ

अँगूठे के बीच में जो जोड़ या गाँठ होती है, उसके फल इस प्रकार होते हैं—

मोटी फूली हुई हो तो व्यक्ति मूर्ख, आलसी एवं दगाबाज होता है । कम फूली हुई हो तो व्यक्ति सरल प्रकृति एवं सीधे-सादे-विचारों का होता है ।

नीचे वाला भाग

अँगूठे के दो भागों में से नीचेवाले भाग का भी सूक्ष्मता से विचार करना चाहिए ।

अत्यधिक लम्बा : ऐसा व्यक्ति किसी भी विन्दु पर विवाद पैदा कर देने में अपनी होशियारी समझता है, साधारण भाषा में ऐसे व्यक्ति को झक्की कहा जाता है ।

लम्बा : सही रूप से तर्क देनेवाला, सुलझे हुए विचारोंवाला तथा बातचीत की कला में निपुण होता है ।

सामान्य : ऐसा व्यक्ति सरल, सहयोगी एवं सामान्य प्रकृतिवाला होता है ।

छोटा : यह दुर्भाग्य का सूचक है । जीवन में इसे सफलता मिलने में जरूरत से ज्यादा परेशानियाँ देखनी पड़ती हैं ।

अत्यधिक छोटा : ऐसा व्यक्ति धूर्त, धोखा देनेवाला तथा असामाजिक तत्त्व होता है।

चौड़ा : सही रूप से बात को समझनेवाला एवं भौतिकवादी आस्था रखनेवाला होता है।

मोटा : मानसिक दृष्टि से सक्षम, बात की तह तक पहुँचनेवाला, एवं मेधावी होता है।

पतला : कमजोर हृदय का, डरपोक एवं अस्थिर प्रकृति का होता है।

चिकना : स्वस्थता एवं सबलता का संकेत है।

रूखा : ऐसा व्यक्ति मानसिक दृष्टि से कमजोर एवं क्षीण स्मरण-शक्तिवाला होता है।

मानव की प्रत्येक उँगली में दो-दो जोड़ हैं, जब कि अँगूठे में केवल एक ही जोड़ होता है, फिर भी अन्य उँगलियों की अपेक्षा अँगूठे का महत्त्व सर्वाधिक एवं सर्वोपरि है। अतः हस्तरेखाविद् को चाहिए कि वह पंजे का अध्ययन करते समय पूरी सावधानी के साथ अँगूठे का अध्ययन करे एवं मन में दृढ़ एवं सही धारणा बनाये।

आदर्श अँगूठे की लम्बाई में ऊपरवाला भाग २/५ तथा नीचेवाला भाग ३/५ होना चाहिए। इससे न्यूनाधिक होने पर अँगूठे के व्यक्तित्व में बेडौलपन-सा अनुभव करना चाहिए।

इसी प्रकार हाथ की प्रत्येक उँगली की लम्बाई में (आदर्श उँगली) सब से ऊपरवाला भाग २/१०, बीचवाला भाग ३½/१० तथा सब से नीचेवाला भाग ४½/१० समझना चाहिए। इससे न्यूनाधिक होने पर उँगली में बेडौलपन अनुभव करना चाहिए।

हस्त-चिह्न

हाथ की भाषा अत्यन्त जटिल, गूढ़ एवं रहस्यमयी है, जिसे

समझना प्रत्येक के बस की बात नहीं। हाथ की रेखाओं को समझने से पहले उँगलियों व उसके पोरों पर पाये जानेवाले चिह्नों को समझना परमावश्यक है। इन पोरों पर पाये जानेवाले चिह्न बारह प्रकार के होते हैं—

१. पद्म, २. अपूर्ण यव, ३. पूर्ण यव, ४. अक्ष, ५. कमल, ६. वज्र, ७. कुण्डल, ८. निरूपाक्ष, ९. त्रिशूल, १०. दाँति, ११. तोरण और १२. त्रिकोण।

इन चिह्नों के भी प्रत्येक के चार भेद माने गये हैं—

१. ऊर्ध्व, २. वाम, ३. दक्षिण, ४. अधः।

इस प्रकार कुल ४८ प्रकार के चिह्न हो जाते हैं, जो कि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माने गये हैं।

इन चिह्नों को चित्रों के माध्यम से भली प्रकार समझाया अवश्य गया है, पर ये चिह्न अपने-आप में इतने सूक्ष्म होते हैं, कि इन्हें समझने के लिए धैर्य और एकाग्रता की पूरी पूरी जरूरत रहती है, विशेषकर स्त्रियों के हाथ की और उँगलियों के पोरों पर पाये जानेवाले चिह्न इतने सूक्ष्म होते हैं कि साधारणतः पहचानना कठिन-सा ही होता है।

कई बार जब हम अपने-आप में स्पष्ट नहीं होते, तब एक चिह्न और दूसरे चिह्न का भेद भी नहीं कर पाते। अपूर्ण यव कई बार पूर्ण यव दिखाई देने लगता है और पूर्ण यव निरूपाक्ष-सा प्रतीत होने लगता है, इसलिए चिह्नों की पहचान के लिए एकाग्रता रखना जरूरी होता है।

इसके बाद हस्तरेखाविद् को इस बात पर पूरी सावधानी से विचार करना चाहिए, कि उँगली पर पाया जानेवाला चिह्न किस प्रकार का है, इस चिह्न का मुँह या झुकाव ऊपर है, या नीचे, बायीं ओर है या दाहिनी ओर, स्पष्ट है या अस्पष्ट ? और ऐसा निर्णय होने के बाद ही भविष्यफल स्पष्ट करना चाहिए।

हाथ पर पायी जानेवाली रेखाओं को समझने के लिए तो सैकड़ों पुस्तकें हैं, पर उँगलियों के सिरों पर पाये जानेवाले इन चिह्नों का सांगोपांग अध्ययन न तो हो पाया है और न इसका विवेचन ही स्पष्ट हो सका है। अधिकतर हस्तरेखाविद् रेखाओं पर सिर खपाते हैं, और इन महत्त्वपूर्ण चिह्नों को छोड़ देते हैं; और ऐसा करने से वे सत्यता के निकट नहीं हो सकते।

मेरे मित्र जॉन वुण्ड ने अपने एक भाषण में कहा था, "मुझे व्यक्ति से मत मिलाइए, उसकी उँगलियों के अग्रभाग पर पाये जानेवाले चिह्नों से मिलाइए, मैं उसका पूरा चरित्र, पूरा व्यक्तित्व और उसके पूरे जीवन को आपके सामने स्पष्ट कर दूँगा।" आगे के पृष्ठों में मैं इनमें से एक-एक चिह्न का विस्तृत विवेचन स्पष्ट कर रहा हूँ—

पद्म

उँगलियों पर पाये जानेवाला यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ चिह्न है, जिसे भारतीय एवं पाश्चात्य हस्तरेखाविदों ने एक स्वर से स्वीकार किया है। इसका चिह्न कमलवत् होता है। 'ऊपर छोटा-सा वर्तुल और उससे सम्बन्धित पंखुड़ी'—यह कमल का या पद्म का चिह्न है, इसको पहचानने के लिए दो बातों की ओर पूरा ध्यान दिया जाय—

१. ऊपर पूरा गोल वृत न होकर वर्तुल-सा होता है। यदि वर्तुल न हो तथा अन्य सभी चिह्न पद्म के समान हों तो वह पद्म नहीं कहला सकता। पद्म का मुख्य आधार ही वर्तुल (भँवर) है।

२. नीचे पत्ती के समान चिह्न हो, जो उससे सम्बन्धित हो, कई हाथों में ऐसा भी देखा गया है कि नीचे की पत्ती का ऊपर के वर्तुल से कोई सम्बन्ध नहीं रहता, ऐसा होने पर उसे पद्म स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

पद्म का सिरा ऊपरवाला भाग होता है तथा पंखुड़ीवाला भाग पुच्छ का अन्तिम सिरा कहलाता है, इसलिए जब हमें यह निश्चय करना हो कि यह पद्म ऊर्ध्व है या अधः है, वाम है या दक्षिण है, तो इसके लिए ऊपर का सिरा जिस तरफ होगा, उसी से सम्बन्धित पद्म समझ लेना चाहिए। यदि ऊपर का सिरा वाम भाग की तरफ झुका हो तो उसे वाम पद्म कहा जाता है, और उँगली के सिरे पर ऊपर की ओर उठा हुआ हो तो वह उर्ध्व पद्म कहलायेगा। इस प्रकार से इसके चार भेद होते हैं—

१. ऊर्ध्व पद्म, २. अधो पद्म, ३. वाम पद्म, ४. दक्षिण पद्म।

पद्म : यह श्री, लक्ष्मी, सुख, सम्पन्नता और ऐश्वर्य का

प्रतिनिधि चिह्न है, यह हाथ की किसी भी उँगली पर पाया जा
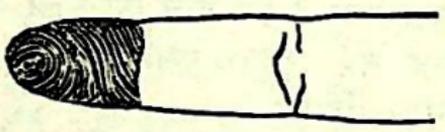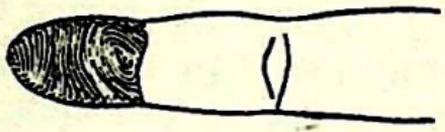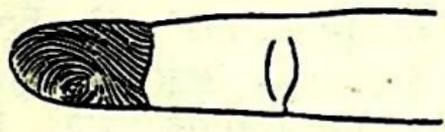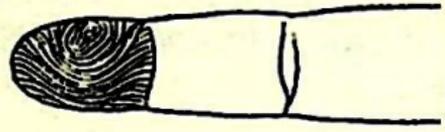
पद्म
ऊर्ध्व
अधो
वाम
दक्षिण

सकता है। मगर इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि यह कोई आवश्यक नहीं है कि पद्म चिह्न उँगली पर मिले ही। अधिकांश व्यक्तियों की उँगलियों पर यह चिह्न नहीं पाया जाता। कई हाथ ऐसे भी देखने में आये हैं कि उनकी एक से अधिक उँगलियों पर यह चिह्न पाया गया है। एक व्यक्ति की तो पाँचों उँगलियों पर यह चिह्न मैंने देखा है।

यह चिह्न सफलता का चिह्न है, और जिस व्यक्ति के हाथों में एक पद्म भी मिल जाता है, उसे अपने-आपको भाग्यवान् समझना चाहिए। ऐसे व्यक्तियों को समाज में सम्मान मिलता है, उसके कार्यों की सराहना होती है तथा वह कुछ ऐसा कर गुजरते हैं जो अपने-आप में विशिष्ट होता है। ऐसे व्यक्ति मानसिक रूप से ज्यादा दृढ़ होते हैं, शारीरिक परिश्रम में इनकी आस्था नहीं होती, 'फील्डवर्क' की अपेक्षा 'टेबल वर्क' में ये ज्यादा दक्ष होते हैं। छह-छह घण्टे लगातार लिख सकते हैं, कार्यालय में कार्य कर सकते हैं, योजना बना सकते हैं एवं अपनी स्थिति को ज्यादा अनुकूल बना सकते हैं।

शारीरिक रूप से ये कोमल होते हैं।

मध्यम कद, स्वस्थ शरीर, ओजस्वी चेहरा और प्रभावशाली व्यक्तित्व इनकी खूबी होती है। इनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा आकर्षण होता है जो दूसरों को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल हो जाता है।

अधिकांशतः ऐसे व्यक्ति निष्कपट, निश्छल एवं सरल हृदय होते हैं, दन्द-फन्द इन्हें नहीं आता, तिकड़मी प्रवृत्ति इनकी नहीं होती, जो भी कहना होता है, बेरोकटोक मुँह पर कह देते हैं, जिससे कई लोग शत्रु भी हो जाते हैं। मित्रों की संख्या इनकी सीमित होती है, परन्तु जो भी मित्र होते हैं, वे दृढ़ निश्चयी एवं मुसीबत के समय मदद करनेवाले होते हैं, न तो वे अवसरवादी होते हैं और न सिद्धान्तहीन। ऐसे व्यक्ति जो भी बात कहते हैं, वह सटीक प्रामाणिक एवं युक्तिसंगत होती है।

इनका अनुभव क्षेत्र विस्तृत होता है, उच्चस्तर पर ऐसे ही व्यक्ति दृष्टिगोचर होते हैं, प्रत्येक बात पर ये अधिकारिक स्तर पर बोल सकते हैं, इनके तर्कों में वजन होता है, इनके तथ्यों को लोग ध्यान से सुनते हैं तथा उस पर मनन करते हैं। आर्थिक

दृष्टि से ऐसे व्यक्ति सफल होते हुए भी सांसारिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से ये असफल ही सिद्ध होते हैं।

अब मैं प्रत्येक उँगली पर पाये जानेवाले पद्म से सम्बन्धित तथ्यों को स्पष्ट करता हूँ—

तर्जनी

तर्जनी हाथ की पहली उँगली और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उँगली है, इसके मूल में गुरू पर्वत की स्थिति होने के कारण इसे 'बुद्धिदात्री उँगली' भी कहते हैं।

तर्जनी उँगली का ऊपरी नखयुक्त सिरा गोल हो तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो वह व्यक्ति शत्रुओं से, विरोधियों से धन लाभ करता है। यदि उँगली का सिरा लम्बा हो तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो व्यक्ति श्रेष्ठतम कलाकार होता है, तथा कला की साधना से वह जीविकोपार्जन करता है एवं प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

यदि उँगली का सिरा चपटा बैठा हुआ हो तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो उस व्यक्ति को कई बार धोखे का शिकार होना पड़ता है, वह जो भी पूंजी संचित करता है, वह इसी प्रकार गँवा बैठता है। यदि उँगली का सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो एवं उस पर पद्म का चिह्न हो तो वह व्यक्ति अनायास धन लाभ करता है।

रंग

यदि उँगली का सिरा गुलाबी हो तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो सम्बन्धित फलकथन में वृद्धि समझनी चाहिए। यदि उँगली का सिरा लालिमा लिये हुए हो, तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो व्यक्ति के फलकथन में बाधाएँ कहनी चाहिए।

यदि उँगली का सिरा हल्का पीलापन लिये हुए हो, तो व्यक्ति के फलकथन में न्यूनता समझनी चाहिए। उदाहरणार्थ—तर्जनी उँगली का सिरा लम्बा हो, तथा उस पर पद्म का चिह्न हो, तो जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है वह श्रेष्ठतम कलाकार होगा, पर यदि उँगली का रंग हल्का पीलापन लिये हुए हो तो वह कलाकार तो होगा, पर इस क्षेत्र में अत्युच्चता सम्भवतः

प्राप्त न कर सके। अतः चिह्न से फलकथन के पूर्व उँगली के सिरे

का आकार तथा रंग भी देख लेना चाहिए।

ऊर्ध्वमुखी पद्म : यदि तर्जनी उँगली पर पाया जानेवाला पद्म ऊर्ध्वमुखी हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ कवि, दार्शनिक, सन्त, ज्ञानी, पुजारी, धर्मात्मा, पूजा करनेवाला, सदाचारी होता है। श्रेष्ठ स्तरीय शिक्षकों के हाथ में भी यह चिह्न देखा गया है। ऐसे व्यक्ति आदर्शवादी होते हैं, कल्पना उनकी सहचरी होती है, हल्का स्तर, हल्की वेशभूषा, हल्का खानपान, हल्के स्तर की बातचीत इन्हें सह्य नहीं। इनका प्रत्येक कार्य आदर्श श्रेष्ठ एवं दिव्य गुणों से भूषित होता है।

वास्तविक जीवन के संघर्षों से ये घबरा जाते हैं, जीवन के घात-प्रतिघातों में ये सफल नहीं होते। इनके जीवन में व्यवधान आने से ये जल्दी ही विचलित हो जाते हैं, सीधा-सरल जीवन इनका स्वभाव होता है। क्षमाशीलता इनका गुण होता है, दिव्यता इनका आभूषण होता है, सद् विचार इनके जीवन की पूंजी होती है। अधिकांशतः इनका घरेलू जीवन सुखमय नहीं रहता, पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद तो रहते ही हैं, आर्थिक दृष्टि से ये सन्तुष्ट रहते हैं।

अधोमुखी पद्म : पद्म का मुँह नीचे की ओर होने से वह अधोमुखी पद्म कहलाता है।

जिस व्यक्ति की तर्जनी उँगली पर अधोमुखी पद्म हो वह आदर्शोन्मुखी होने पर भी तुरन्त परिस्थितियों के सामने घुटने टेक देता है। न तो ऐसा व्यक्ति दृढ़ रह पाता है, और न परिस्थितियों को चुनौती ही दे पाता है।

इस व्यक्ति के कथनी और करनी में भेद होता है। ऐसा व्यक्ति बात आदर्श की करेगा, पर यथार्थ में यह इससे विपरीत कार्य करेगा, लोग इसकी जबान का ऐतबार नहीं करते, समाज में इनकी प्रतिष्ठा प्रश्नसूचक रहती है।

वाममुखी पद्म : जिस व्यक्ति की तर्जनी उँगली पर वाममुखी पद्म हो, वह कंजूस होता है। आय का स्रोत भले ही एक हो, या एक से अधिक हो, ये धन संचय कर लेते हैं; और इस धन-संचय में वे पेट के गाँठें लगाते हैं, फलस्वरूप कंजूस की श्रेणी में गिने जाते हैं। समाज में इन्हें अपेक्षाकृत कम सम्मान मिलता है। ये सामाजिक पद के भूखे होते हैं। इनका प्रयत्न यह होता

कि ये समाज में किसी उत्तरदायी पद पर हों। लोग पूछें, सम्मान करें; पर इनके मन की बात मन में ही रह जाती है।

दक्षिणमुखी पद्म : जिस व्यक्ति की तर्जनी उँगली पर दक्षिणमुखी पद्म हो, वह रचनात्मक कार्यों में चतुर होते हैं। इनकी दृष्टि ध्वंसात्मक न होकर रचनात्मक होती है। इनके कार्यों की सर्वत्र सराहना होती है, तथा ये समाज में श्रेष्ठ स्थान के अधिकारी होते हैं। आर्थिक दृष्टि से ये स्वावलम्बी होते हैं, न तो ये धन संचय से घृणा करते हैं और न इन्हें उसका अत्यधिक मोह होता है। इनके जीवन में लक्ष्मी और सरस्वती का अपूर्व संगम होता है।

मध्यमा : अंग्रेजी में इसे Second Finger कहते हैं। यह सभी उँगलियों में बड़ी, दृढ़ और पुष्ट होती है, कुछ विद्वान् इसे शनि की अँगुली भी कहते हैं।

यदि मध्यमा उँगली का नाखूनयुक्त अग्रभाग गोल हो, तथा उसपर पद्म का चिन्ह हो, तो व्यक्ति का भाग्योदय अट्ठाईसवें वर्ष से होता है। इसका भाग्योदय स्वदेश की बजाय विदेश में ही होता है।

यदि मध्यमा उँगली का नाखूनयुक्त अग्र भाग लम्बा हो तथा उस पर पद्म का स्पष्ट चिह्न हो तो व्यक्ति का जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत होता है, तथा कला के क्षेत्र में विदेशों में भी सम्मान प्राप्त करता है।

यदि मध्यमा उँगली का अग्रभाग चपटा और बैठा हुआ हो, तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो व्यक्ति फिजूलखर्ची होता है, यद्यपि उसके आय के स्रोत एकाधिक होते हैं, परन्तु फिर भी वह कर्ज में डूबा रहता है।

यदि मध्यमा उँगली का पोर भरा हुआ गोल-गोल सा हो तथा उस पद्म का चिह्न हो तो व्यक्ति निस्सन्देह व्यापारिक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

यदि मध्यमा उँगली का रंग गुलाबी हो तथा उस पर पद्म चिह्न हो तो व्यक्ति के फलादेश में तीव्रता समझना चाहिए। यदि लालिमा लिये हुए रक्तवर्ण हो तो व्यक्ति के फलादेश में किंचित् न्यूनता समझनी चाहिए। यदि हल्का पीलापन लिये हुए रंग हो तथा उंगली पर पद्मांकित हो तो व्यक्ति के फलादेश में बाधाएं, अड़चनें तथा विलम्ब समझना चाहिए।

ऊर्ध्व पद्‌म : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व पद्‌म हो तो व्यक्ति नौकरी की अपेक्षा व्यापार में ज्यादा सफल होता है, विशेषकर वह Movable मशीनरी का प्रयोग करे, या ऐसे लोहे का व्यापार करे, जो Article Movable हो तो वह निश्चय ही सफल होता है।

दिल्ली के एक सेठ का आलमारी बनाने का उद्योग था, वे लोहे की छोटी-बड़ी आलमारियाँ बनाते थे। व्यापार प्रगति पर था और उन्होंने कमाया भी, परन्तु फिर भी वे सन्तुष्ट नहीं थे। एक बार वे जोधपुर मिलने आये, बोले, "ईश्वर का दिया हुआ सब-कुछ है, मैं सुखी हूँ, समाज में सम्मान है, पर मैं जितना परिश्रम कर रहा हूँ, उतना सफल नहीं हो रहा हूँ, अत्यधिक परिश्रम करने पर किंचित् ही लाभ हो पाता है।"

उनके दाहिने हाथ की मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व पद्‌म था। मैंने कहा, "सेठ जी ! व्यापार तो आपके लिए लोहे का ही अनुकूल है, पर आलमारी अचल वस्तु में आती है, आप ऐसी लोहे की चीज बनावें जो चल हो (Movable) हो !" उन्होंने कहा, "कई दिनों से मैं पंखे बनाने का उद्योग प्रारम्भ करने की सोच रहा हूँ, पर हिचकिचा रहा हूँ···शायद असफल हो जाऊँ ?"

मैंने कहा, "सेठजी! समुन्द्र के किनारे बैठने से समुद्र की थाह नहीं ली जा सकती, इसके लिए तो डुबकी लगानी ही पड़ेगी··· यों मुझ पर विश्वास रखें।"

ज्योतिष के कथन से जो उनकी आस्था डगमगा रही थी, विचार विचलित हो रहे थे, वे दृढ़ हो गये। उनका निश्चय पक्का हो गया और लौटकर अपने पुराने उद्योग को परिवर्तित कर पंखे बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

आज वे सफल हैं, सफल ही नहीं सफलतम हैं, जो व्यापारिक साख या ऐश्वर्य पिछले बीस वर्षों में अर्जित किया था, इस उद्योग से उससे भी कई गुना ज्यादा चार-पाँच वर्षों में कर दिया। क्योंकि उन्हें सही दिशा मिल गयी। फलस्वरूप उनका परिश्रम सार्थक होने लगा।

अधो पद्‌म : जिस व्यक्ति की मध्यमा उँगली पर अधो पद्‌म हो, उसका मन डावाँडोल रहता है। वह नौकरी करता है, परन्तु उसकी रुचि व्यापार में लगी रहती है, वह न तो पूरा ध्यान व्यापार

में दे पाता है और न नौकरी में। फलस्वरूप वह दोनों में से कहीं भी पूरी तरह से सफल नहीं हो पाता। इनके जीवन का लक्ष्य येन केन प्रकारेण अर्थ संचय ही रहता है। इनके सामने व्यापारिक दृष्टिकोण से न तो कोई आदर्श होता है और न कोई स्पष्ट नीति। अधिकांशत: ऐसे व्यक्ति बहुमुखी व्यक्तित्व वाले होते हुए भी असफल होते हैं।

वाम पद्म : जिस व्यक्ति की मध्यमा उँगली पर वाम पद्म हो, उसे ससुराल से धन-लाभ होता है, तथा उसके व्यापार में भी ससुराल काफी सहायता देता है।

दक्षिण पद्म : जिस व्यक्ति की मध्यमा उँगली पर दक्षिण पद्म हो, वह व्यापारिक कार्यों में अत्यन्त चतुर होता है। ऐसे व्यक्ति एजेंट, दलाल तथा डिस्ट्रीब्यूटर होते हैं। लोगों को प्रभावित करने की कला इन्हें बखूबी आती है तथा येन केन प्रकारेण अपना काम निकालने में ये चतुर होते हैं। यद्यपि ये व्यक्ति कुछ विलम्ब से उन्नति करते हैं, परन्तु जब भाग्योदय होता है, तो कुछ ही वर्षों में ये धूमकेतु की तरह सब पर छा जाते हैं।

अनामिका

अँग्रेजी में इसे Third finger तथा संस्कृत में 'देव उँगली' कहते हैं। यह मध्यमा से छोटी तथा कनिष्ठिका से बड़ी होती है। इसके मूल में सूर्य पर्वत की स्थिति होने के कारण इसे 'सूर्य उँगली' भी कहते हैं। इस उँगली के अग्रभाग पर पद्म का चिह्न शुभ एवं अनुकूल माना गया है, ऐसा व्यक्ति तेजस्वी, प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय होता है, वह साधारण स्तर से ऊपर उठकर अपना तथा अपने कुल का नाम गौरवान्वित करता है, ये परिश्रमी, साहसी एवं गहरी सूझबूझ के धनी होते हैं। किसी भी प्रकार के कार्य करने से ये हिचकिचाते नहीं। संघर्षों में इनका व्यक्तित्व खिलता है, मुसीबतों में ये जौहर दिखा सकते हैं, तथा विपरीत परिस्थितियों में ही ये ऊँचे उठ सकते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति व्यापार की अपेक्षा नौकरी में ज्यादा सफल होते हैं। ऊँचे पदों पर शीघ्र ही प्रतिष्ठित होते हैं तथा अपने कार्यों से प्रशंसा प्राप्त करते हैं।

यदि अनामिका का नखयुक्त ऊपरी सिरा गोल हो तथा उस

पर पद्म का चिह्न हो, तो व्यक्ति आई. ए. एस. पद या महत्त्व-पूर्ण अधिकारी होता है।

यदि अनामिका का ऊपरी सिरा लम्बा हो तो वह राजकीय सेवा में रहते हुए विदेश यात्रा करता है तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है। यात्राओं का इसका शौक होता है, या इसकी नौकरी ही कुछ ऐसी होती है कि इन्हें अधिकतर भ्रमण पर ही रहना होता है।

यदि अनामिका का अग्रभाग चपटा बैठा हुआ हो तो व्यक्ति निस्सन्देह कुछ ऐसा कर बैठता है, जिससे नौकरी में रहते हुए उसे बदनामी सहनी पड़ती है। यदि अनामिका का ऊपरी सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो तो व्यक्ति नौकरी के प्रति लापरवाही बरतता है, तथा मनमौजी होता है।

यदि अनामिका उँगली का रंग गुलाबी हो तथा उस पर पद्म हो, तो व्यक्ति के फलादेश में तीव्रता रहती है। यदि रंग लाल-सा हो तो व्यक्ति के फलादेश में जरूरत से ज्यादा बाधाएँ समझनी चाहिए तथा कार्यसिद्धि में अड़चनें माननी चाहिए। यदि रंग हल्का पीलापन लिये हुए हो तो व्यक्ति अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाता।

ऊर्ध्व पद्म : अनामिका उँगली पर यदि ऊर्ध्व पद्म हो तो व्यक्ति निश्चय ही आई. ए. एस. या केन्द्रीय सेवा का अधिकारी होता है, तथा अपने प्रशासकीय कार्यों से ख्याति लाभ करता है।

अधोपद्म : जिस व्यक्ति की अनामिका उँगली पर अधोपद्म हो, वह प्रयत्न करने पर भी उच्चपदाधिकारी नहीं बन पाता। उसकी आकांक्षाएँ काफी बढ़ी-चढ़ी होती हैं परन्तु बार-बार प्रयत्न कर-कर हताश और निराश-सा हो जाता है।

वाम पद्म : जिस अनामिका उँगली पर वाम पद्म हो, तो भाग्य से ही उसे अच्छी नौकरी मिल जाती है। व्यापार में भी ऐसे व्यक्ति सफल होते देखे गये हैं, यदि ये सफेद वस्तु का व्यापार करें तो ज्यादा सफल हो सकते हैं।

दक्षिण पद्म : अनामिका उँगली पर यदि दक्षिण पद्म हो तो जातक निस्सन्देह नौकरी में सफल होता है तथा उसकी इच्छा पूर्ण होती है, यद्यपि उसका भाग्योदय विलम्ब से होता है।

यह हाथ की सब से छोटी उँगली है, यदि यह उँगली अनामिका के ऊपरी जोड़ से ऊँची उठती है, तो यह सम्मान एवं प्रतिष्ठा की सूचक बनती है, परन्तु यदि यह उस जोड़ से नीचे रहती है तो व्यक्ति की सामान्यता को सिद्ध करती है। कनिष्ठिका उँगली पर इस बात का सूचक है, कि व्यक्ति तीव्र मस्तिष्क, मेधावी एवं समयानुकूल अपने-आपको ढाल सकने में समर्थ है। ऐसा व्यक्ति सफल व्यवसायी, धनी एवं उदार हृदय होता है।

यदि उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो व्यक्ति नैतिक और अनैतिक कार्यों से व्यापार द्वारा धन संचय करता है। यदि अँगुली का अग्रभाग लम्बा हो तो व्यक्ति दानवीर होता है, आय का एक निश्चित भाग दानादि कार्यों में व्यय करता है, जीवन सरल सौम्य एवं उदार होता है।

यदि अँगुली का ऊपरी सिरा चपटा तथा बैठा हुआ हो तो व्यक्ति काफी प्रयत्न करने के बाद भी व्यापारिक कार्यों में पूर्ण सफल नहीं हो पाता। 'जरूरत से ज्यादा परिश्रम और अपेक्षाकृत कम लाभ' उसके भाग्य में लिखा होता है। यदि अँगुली का अग्रभाग भरा हुआ गोल-गोल सा हो तो व्यक्ति निम्नस्तर के व्यापार में रत रहता है।

यदि अँगुली का रंग गुलाबी हो तो फलादेश में श्रेष्ठता समझी जानी चाहिए। यदि अँगुली का रंग लाल हो तो उसे काफी बाधाओं एवं संघर्षों के बाद सफलता मिल सकती है। यदि अँगुली का रंग हल्का पीलापन लिये हुए हो तो व्यक्ति के फलादेश में न्यूनता एवं रिक्तता समझी जानी चाहिए।

ऊर्ध्व पद्म : कनिष्ठिका अँगुली पर यदि ऊर्ध्व पद्म हो तो व्यक्ति सफल व्यापारी होते हुए भी अपने आदर्शों को नहीं छोड़ता। व्यापार में भी वह नैतिक मूल्यों को जीवित रखता है। ईमानदारी उसका गुण होती है। सच्चरित्रता उसके जीवन का मूल होता है। समाज में वह अक्षय कीर्ति का अधिकारी होता है।

अधो पद्म : यदि कनिष्ठिका अँगुली पर अधो पद्म हो तो व्यक्ति को ऊँचा उठने के लिए जरूरत से ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है, पारिवारिक सदस्यों से उसे कोई विशेष सक्रिय सहयोग

नहीं मिल पाता, वह जो कुछ भी उन्नति करता है, अपने ही वलबूते पर करता है।

वाम पद्म : यदि कनिष्ठिका अँगुली पर वाम पद्म हो तो जातक की संगति निम्नस्तरीय व्यक्तियों से रहती है, फलस्वरूप वह न तो समाज में सही स्थान पर अपने को प्रतिष्ठित कर सकता है और न उन्नति ही कर पाता है।

दक्षिण पद्म : कनिष्ठिका अँगुली पर दक्षिण पद्म हो तो जातक मेधावी, यशस्वी एवं अपने कार्यों से समाज में सम्मानित होता है, ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी होने के कारण अपने लक्ष्य तक जल्दी एवं आसानी से पहुँच जाता है।

अँगूठा

यह हाथ का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रत्येक कार्य-संचालन में विना अँगुठे की सहायता के उँगलियाँ कुछ भी नहीं कर पातीं। ईश्वर ने अँगूठे की रचना कुछ ऐसे विचित्र ढँग से की है, कि वह अलग-थलग रहता हुआ भी सब का सहयोगी है, और सब का सहयोगी होते हुए भी अपने-आप में स्वतन्त्र है।

अँगूठे पर पद्म का चिह्न अहंकार का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने-आप को ही महत्त्वपूर्ण मानता है, उसे इस वात का भ्रम होता है कि जो कुछ भी मैं कह रहा हूँ वह सही है, जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ, वह न्यायोचित है।

यदि अँगूठे का सिरा गोल हो तथा उस पर पद्म का चिह्न हो तो व्यक्ति अहंकारी, व्यर्थ की वहसबाजी करनेवाला हठी और दम्भी होता है।

यदि सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति सफल वक्ता, वकील, कूट नीतिज्ञ या अधिकारी बनता है, अपने तर्कों से सामनेवाले को परास्त करने की कला उसे वखूवी आती है।

यदि अँगूठाग्र चपटा या वैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति हीन भावना का शिकार होता है। प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करते हुए हिचकिचाता है, 'रिस्क' लेने की उसमें नहीं के वरावर प्रवृत्ति होती है। यदि अँगूठाग्र भरा हुआ गोल-गोल-सा हो तो व्यक्ति को परिवार की वजाय अन्य लोगों से सहायता एवं सहयोग मिलता है, तथा वह अपने परिश्रम से जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलाबी हो तो वह त्वरित गति से सफलता की ओर अग्रसर होता है तथा अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। यदि अँगूठे का वर्ण लालिमा लिये हुए हो तो वह अपने प्रवल परिश्रम से बाधाओं को हटाकर विजयश्री वरण करता है। यदि अँगूठे का रंग पीला-पीला-सा हो या सफेद-सा हो तो व्यक्ति का अधिकांश श्रम व्यर्थ-सा जाता है। वह प्रयत्न करता है, जरूरत से ज्यादा श्रम भी करता है, परन्तु स्वास्थ्य क्षीणता एवं मानसिक कमजोरी की वजह से चाह कर भी सफल नहीं हो पाता।

ऊर्ध्व पद्म : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व पद्म हो तो व्यक्ति को अनायास धन लाभ होता है। जुए में या ऐसे ही किसी कार्य में, लॉटरी वगैरह में उसे धन लाभ होता है। उसके अधिकतर कार्य अप्रत्याशित रूप से सफल होते देखे गये हैं।

अधो पद्म : जिसके अँगूठे पर अधो पद्म हो, वह निम्नस्तर के कार्यों से धन संचय करता है, ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, हठी, दम्भी होता है।

वाम पद्म : अँगूठे पर वाम पद्म हो तो व्यक्ति ऐय्याश, भोगी, शान-शौकत पर जरूरत से ज्यादा व्यय करनेवाला तथा मनमौजी होता है, सुन्दर वस्त्र, स्वादिष्ट भोजन, एवं नफासत से रहना उसके जिन्दगी की खूबी कही जा सकती है।

दक्षिण पद्म : यदि अँगूठे पर दक्षिण पद्म हो तो व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है, उसे जीवन में पूर्ण सुख, वैभव, यश एवं सम्मान मिलता है, भौतिक दृष्टि से उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती।

हस्तरेखा जिज्ञासुओं को चाहिए कि वे उँगली पर पाये जानेवाले चिह्न का सूक्ष्मता से अध्ययन कर फलित कहें, तो वे सत्यता के सन्निकट होंगे।

पूर्ण यव : अपूर्ण यव

सामुद्रिक शास्त्र में यव का अत्यधिक महत्त्व है, इसका स्वरूप चित्रकार द्वारा बनाये गये रेखाचित्र में आँख के समान होता है, पूर्ण यव में 'यव' का चिह्न पूर्ण होता है, जबकि अपूर्ण यव में यवाकृति पूर्ण मिली हुई नहीं होती है।

कई बार भ्रम से अपूर्ण यव पूर्ण यव के समान दृष्टिगोचर होता है, जब कि कई बार पूर्ण यव ऐसा लगता है, मानो अपूर्ण यव हो, इसलिए हस्तरेखाविदों को चाहिए, कि वे सावधानी से निरीक्षण कर निर्णय करें, कि उँगली पर पाया जानेवाला चिह्न अपूर्ण यव है, या पूर्ण यव है।

सामुद्रिक शास्त्र में इन दोनों का स्वतन्त्र महत्त्व है। कई बार भ्रमवश ऐसा कह दिया जाता है, कि पूर्ण यव कार्य की पूर्णता का द्योतक है, जब कि अपूर्ण यव अपूर्णता की, पर यह तथ्य न तो सामुद्रिक शास्त्र के सिद्धान्तों से मेल खाता है, और न युक्तिसंगत ही है।

यव का चिह्न मूलतः आँख के समान होता है, यह आँख या यव अँगुली के जिस ओर झुका होगा, उसी प्रकार का वह चिह्न माना जायेगा, और इसी से ऊर्ध्वमुखी, अधोमुखी, वाम या दक्षिण यव स्पष्ट कर सकते हैं।

सामुद्रिक शास्त्र में यव आयु आरोग्य स्वस्थता प्रसन्नता का सूचक है। आनेवाली विपत्तियों, बाधाओं की गणना भी यव के न्यूनाधिक से जानी जाती है।

तर्जनी

तर्जनी उँगली का सिरा यदि गोल हो, तथा उस पर अपूर्ण यव हो, तो व्यक्ति रक्तचाप का रोगी होता है, जीवन के ४२वें वर्ष के बाद ब्लडप्रेशर का रोग उसे जरूरत से ज्यादा सताता है।

यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति का बुढ़ापा सानन्द व्यतीत होता है। तर्जनी अँगुली का सिरा यदि लम्बा हो, तथा उस पर अपूर्ण यव हो, तो व्यक्ति दुबला-पतला कमजोर एवं अशक्त रहता है। यदि पूर्ण यव हो तो रक्तहीनता से वह दुखी रहता है।
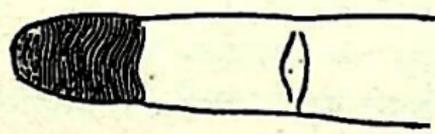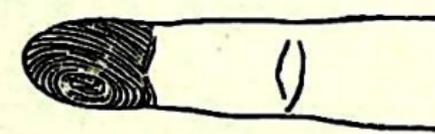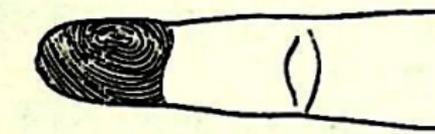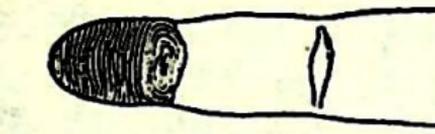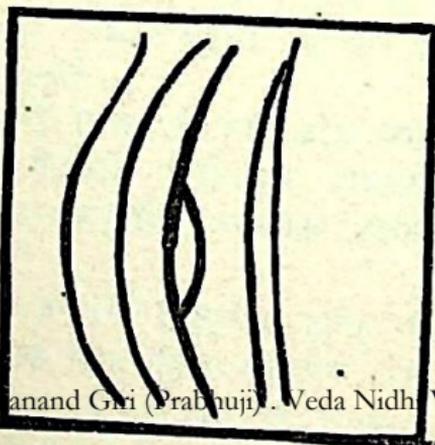
पूर्ण यव
ऊर्ध्व
वाम
दक्षिण
अधो

यदि तर्जनी का सिरा चपटा बैठा हुआ हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति में सदैव हीन भावना भरी हुई रहती है। उसके व्यक्तित्व में निखार नहीं आ पाता।

यदि उस पर पूर्ण यव हो तो व्यक्ति चालाक, धूर्त एवं अवसरवादी होता है, अपना काम निकालने में वह उस्ताद होता है।

यदि तर्जनी अँगुली का सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति ऐय्याश, विलासी तथा शान-शौकत पर जरूरत से ज्यादा खर्च करनेवाला होता है।

यदि उस पर पूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति वीर्य सम्बन्धी रोग से या गुप्तांग रोग से पीड़ित रहता है।

ऊर्ध्व : यदि तर्जनी उँगली पर ऊर्ध्व अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति सहनशील, कष्टों से भी जूझनेवाला, शरीर की अपेक्षा आत्मा को अधिक महत्त्व देनेवाला होता है।

यदि पूर्ण यव हों तो जातक वृद्धावस्था में वीतरागी-सा जीवन व्यतीत करता है।

अधः : यदि तर्जनी उँगली पर अधो अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति मद्य, व्यसनी एवं दुर्गुणों से युक्त होता है। यदि पूर्ण यव हो, तो वह प्रबल कामी भोगी तो होता है, पर उसे अपनी सीमा का भी ज्ञान होता है, तथा मर्यादाहीनता का प्रदर्शन नहीं करता।

वाम : यदि तर्जनी उँगली पर वाम अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति जीवन-भर न्यूनाधिक रूप से उदर-रोग से पीड़ित रहता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति को पेट का ऑपरेशन कराना पड़ता है, तथा मृत्यु के मुँह में जाकर लौटता है।

दक्षिण : यदि तर्जनी उँगली पर दक्षिण अपूर्व यव हो तो व्यक्ति के सिर में आघात से गहरी चोट लगती है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति अत्यवस्थित मस्तिष्कवाला, झक्की तथा निम्न विचारों का होता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो, तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो प्रभाव में वृद्धि, पूर्ण यव हो तो, निरोगिता रहती है। यदि वर्ण लाल हो तथा अपूर्ण यव हो तो रोगवृद्धि तथा पूर्ण यव हो तो गुप्त रोग रहता है। यदि पीलापन लिये हुए वर्ण हो तथा अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति चिररोगी, तथा पूर्ण यव हो तो बवासीर से पीड़ित रहता है।

मध्यमा : मध्यमा उँगली के सिरे पर यव का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यदि मध्यमा उँगली का अग्रभाग गोल-सा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति का भाग्योदय २६वें वर्ष में होता है। यदि पूर्ण यव हो तो भाग्योदय २४वें वर्ष में समझना चाहिए।

मध्यमा उँगली का सिरा यदि लम्बा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में या जन्मस्थान से काफी दूर होता है। यदि पूर्ण यव का चिह्न हो तो भाग्योदय जन्मस्थान या उसके आसपास ही होता है। यदि मध्यमा उँगली का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति के दुर्भाग्य सदैव उसकी उन्नति में बाधाएँ डालते रहते हैं।

यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति असफलताओं के बाद अन्त में सफलता प्राप्त कर ही लेता है। यदि मध्यमा उँगली का सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति अपने प्रबल प्रयत्नों से भाग्य बनाता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति भाग्यशाली होता है, तथा उसे अनायास ही भाग्योदय लाभ मिलता है।

यदि अँगुली का रंग गुलाबी हो तो स्थिति में अनुकूलता रहती है तथा कार्य सिद्धि में सहायता मिलती है। यदि वर्ण लाल-सा हो तो बाधाएँ जरूरत से ज्यादा रहती हैं। यदि पीलापन लिये हुए हो तो उसका भाग्योदय होने पर भी वह उससे लाभ नहीं उठा पाता।

उर्ध्व : यदि मध्यमा अँगुली पर ऊर्ध्व अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति व्यापार में सच्चरित्रता बरतता है तथा समाज से उसे भरपूर सम्मान मिलता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति किसी बिना सहयोग के भी व्यापार में श्रेष्ठ उन्नति करता है।

अध: : यदि मध्यमा अँगुली पर अध: अपूर्ण यव हो तो व्यापार में दिवाला निकालता है। यदि पूर्ण यव हो तो जबरदस्त धोखा होता है, परन्तु फिर भी संभल जाता है।

वाम : यदि मध्यमा उँगली पर वाम अपूर्ण यव हो तो उसे अपने कार्यों से समाज में बदनाम एवं लांछित होना पड़ता है। यदि पूर्ण यव हो तो किसी स्त्री के चक्कर में पड़कर अपनी 'इमेज' धूमिल कर देता है।

दक्षिण : यदि मध्यमा उँगली पर दक्षिण अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति अपने पुत्रों के कार्यों से प्रशंसा प्राप्त करता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति स्वयं अपने कार्यों से ख्याति अर्जित करता है।

अनामिका

अनामिका उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो वह शुभ कार्यों के माध्यम से यश प्राप्त करता है। यदि पूर्ण यव हो तो शीघ्र ही वह समाज में चर्चा का विषय बन जाता है। यदि सिरा लम्बा हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो वह ललित कलाओं के माध्यम से देश में प्रशंसित होता है। यदि पूर्ण यव हो तो उसकी ख्याति देश की सीमाओं को लाँघकर विदेशों तक में जा पहुँचती है।

यदि सिरा चपटा बैठा हुआ हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति निरुद्यमी होता है। पूर्ण होता है, तो उसे जीविकोपार्जन के लिए घोर संघर्ष करना पड़ता है।

यदि सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो, तथा उस पर अपूर्ण यवांकित हो तो व्यक्ति को परिचित मित्रों के द्वारा भरपूर सहयोग मिलता है। यदि पूर्ण यव हो तो उसे सहयोग नहीं के बराबर मिलता है, तथा वह स्वयं के प्रयत्नों से ही सफल होकर दिखाता है।

यदि अँगुली का रंग गुलाबी हो तो सफलता बाल्यावस्था में ही मिल जाती है। यदि रक्त वर्ण हो तो उसे प्रबल विरोधियों का सामना करना पड़ता है। यदि रंग पीला-पीला-सा या सफेद सा हो तो व्यक्ति जीवन में असफल रह जाता है।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उँगली पर ऊर्ध्व अपूर्ण यव हो तो जीवन के वृद्धावस्था में वह संन्यासी हो जाता है, पर फिर भी उसकी वासनाएँ भोगेच्छाएँ समाप्त नहीं होतीं। यदि ऊर्ध्व पूर्ण यव हो तो व्यक्ति अपनी इच्छा से गृहस्थ में रहते हुए ही जल-कमलवत् वीतरागी-सा जीवन व्यतीत करता है।

अधः : यदि अनामिका उँगली पर अधः अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को जीवन में अपयश एवं बार-बार निन्दा का सामना करना पड़ता है। यदि अधः पूर्ण यव हो तो वह चाहे घर के लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए कितनी ही मदद करे,
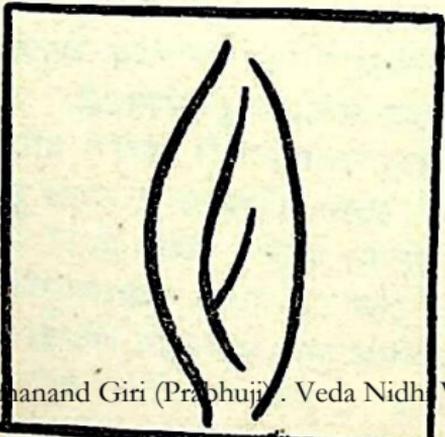
अपूर्ण यव
ऊर्ध्व अपूर्ण यव
अधो अपूर्ण यव
वाम अपूर्ण यव
दक्षिण अपूर्ण यव
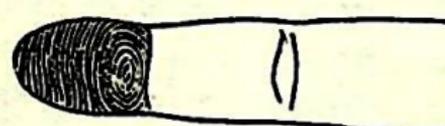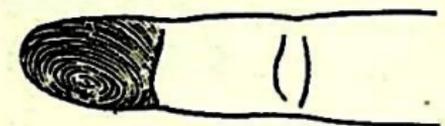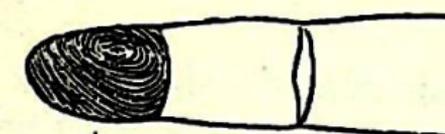
यश नहीं मिलता, और उसके द्वारा किये गये कार्यों का श्रेय दूसरे ले लेते हैं।

वाम : यदि अनामिका उँगली पर वाम अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति की संगति हल्के स्तर के व्यक्तियों से होती है, जिससे उसका अधोपतन होता है। यदि पूर्ण यव हो तो उसकी संगति तो हल्के निम्न स्तर के व्यक्तियों से होती है, पर वह समय रहते ही संभल जाता है।

दक्षिण : यदि अनामिका उँगली पर दक्षिण अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति अपने उच्चस्तरीय परिचितों के माध्यम से उन्नति करता है। यदि पूर्ण यव हो तो श्रेष्ठस्तरीय व्यक्तितयों से परिचय होने के कारण उनके माध्यम से महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

कनिष्ठिका

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति व्यापारिक कार्यों में कम रुचि लेता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति का नौकरी की वजाय व्यापार में भाग्योदय होता है।

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा लम्बा-सा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति साधारण श्रेणी का कलाकार बन उदरोपार्जन करता है। यदि पूर्ण यव का चिह्न हो तो चित्रकारी, संगीतादि क्षेत्र में वह पूर्ण सफल होता है।

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से कमजोर रहता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति के आय के स्रोत तो एकाधिक होते हैं, परन्तु उसका बैंक-बेलेन्स नहीं हो पाता।

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पूर्ण समृद्ध जीवन व्यतीत करता है। यदि पूर्ण यव हो तो जीवन में भौतिक दृष्टि से किसी भी प्रकार की न्यूनता या अभाव सहन नहीं करना पड़ता।

यदि अँगुली का वर्ण गुलाबी हो तो उसे अपने प्रयत्नों में अनायास ही सहायता मिलती रहती है। यदि लाल हो तो उसे

काफी संघर्षों के बाद सफलता मिलती है। यदि पीलापन लिये हुए वर्ण हो तो ऐसा व्यक्ति प्रयत्न करने के बावजूद भी सफल नहीं हो पाता।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली पर ऊर्ध्व अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को जीवन में आकस्मिक सहयोग मिलता रहता है, उसके जीवन में बाधाएँ कम रहती हैं।

यदि पूर्ण ऊर्ध्व यव हो तो व्यक्ति निस्सन्देह व्यापार में श्रेष्ठतम प्रगति करता है तथा कुल दीपक कहलाने का अधिकारी होता है।

अधः : यदि कनिष्ठिका उँगली पर अधः अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में पग-पग पर बाधाओं का सामना करना पड़ता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति संघर्ष करते रहने पर वृद्धावस्था में सुखभोग करता है।

वाम : यदि वाम अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को उसके पार्टनर ही धोखा देते हैं, तथा उसका व्यापार हथिया लेते हैं। यदि पूर्ण यव हो तो उसके भागीदारों के बीच परस्पर मुकदमेबाजी चलती रहती है।

दक्षिण : यदि कनिष्ठिका उँगली पर दक्षिण अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलती। यदि पूर्ण यव हो तो काफी संघर्षों के बाद पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

अँगूठा

यदि अँगूठा गोल-सा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति अहंकारी, कठोर हृदय एवं दुष्टबुद्धि होता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति के हाथों जाने-अनजाने खून होता है, तथा वर्षों तक मुकदमेबाजी के चक्कर में उलझता रहता है।

यदि अँगूठे का सिरा लम्बा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति साधारण कलाकार बनता है। पूर्ण यव का चिह्न होने पर व्यक्ति की सन्तति श्रेष्ठ कलाकार होती है, जिससे पिता का नाम रोशन होता है।

यदि अँगूठे का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर

अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति अपनी हीन भावना से ग्रस्त रहने के

कारण सफल नहीं हो पाता।

पूर्ण यव हो तो किसी मित्र की मदद से वह प्रगति करता है। यदि अँगूठे का सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो तथा उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति सफल व्यवसायी या कूटनीतिज्ञ वनता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति राजनीतिक क्षेत्र में निस्सन्देह सफलता प्राप्त करता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलावी हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो प्रभाव में न्यूनता, एवं पूर्ण यव हो तो प्रभाव में वृद्धि समझनी चाहिए। यदि वर्ण लाल हो तथा अँगूठे पर अपूर्ण यव हो तो मानहानि, पूर्ण यव हो तो सम्मान-लाभ समझना चाहिए। यदि वर्ण पीला हो तथा अँगूठे पर अपूर्ण यव हो तो पाण्डुरोग, तथा पूर्ण यव हो तो गुप्तरोग समझना चाहिए।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा ईमानदारी प्रदर्शित करनेवाला होता है, जव कि उसका वास्तविक जीवन कुछ और होता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति अवसरवादी एवं चतुर होता है।

अध: : यदि अँगूठे पर अध: अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति निम्नस्तर के कार्यों से धन-संचय करता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति जीवन में कई बार पददलित एवं तिरस्कृत होता है।

वाम : यदि अँगूठे पर वाम अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति परस्त्रीगामी होता है और समाज में वदनाम भी होता है। यदि पूर्ण यव हो तो वह परस्त्रीगामी तो होता है, पर उसे जीवन में वदनामी सहन नहीं करनी पड़ती।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर अपूर्ण यव दक्षिण हो तो व्यक्ति का जीवन में असफल प्रेम होता है, जो जीवन-भर उसे सालता रहता है। यदि पूर्ण यव हो तो व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में असफल रहते हुए भी उसके प्रति सच्चा, निष्ठावान एवं सन्तुष्ट रहता है।

अक्ष

अक्ष का तात्पर्य है, कुल्हाड़ी। लकड़ियाँ फाड़ने या काटने के लिए जिस शस्त्र का उपयोग किया जाता है, उसे साधारण बोलचाल की भाषा में कुल्हाड़ी या कुल्हाड़ा कहते हैं। 'अक्ष' का स्वरूप कुल्हाड़े-जैसा ही होता है, इसका एक भाग मोटा तथा दूसरा भाग अपेक्षाकृत पतला होता है, जिसे मुँह कहते हैं। यह जिस ओर होता है, उसी ओर अक्ष का झुकाव मान लिया जाता है, तथा विद्वद्जन् इसी प्रकार वाम-दक्षिण अधः-ऊर्ध्व अक्ष का निर्णय करते हैं।

हाथ की उँगलियों पर अक्ष का अत्यधिक महत्त्व है, अतः अत्यन्त सावधानी से इसका निरीक्षण-परीक्षण, निर्णय करना चाहिए।

तर्जनी

यदि तर्जनी का नखाग्र भाग गोल हो, तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति क्रूर, स्वार्थी एवं घोर अवसरवादी होता है।

यदि तर्जनी का ऊपरी भाग लम्बा-सा हो तथा उस पर अक्ष का चिन्ह अंकित हो, तो जातक का व्यवहार पशुवत् होता है, जीवन में उसके मित्रों की संख्या अत्यन्त सीमित होती है।

यदि तर्जनी का अग्रभाग चपटा, बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर अक्ष का निशान हो, तो व्यक्ति उपद्रवी, विध्वंसक तत्त्वों से समायोजित होता है।

यदि तर्जनी का अग्रभाग भरा हुआ गोल-गोल-सा हो, तथा उस पर अक्ष का निशान हो तो व्यक्ति शत्रुओं से हर समय सशंकित रहता है।

यदि तर्जनी का वर्ण गुलाबी हो तथा उस पर अक्ष हो, तो प्रभाव में वृद्धि, वर्ण लाल हो तो क्रोध में अतिरेकता तथा पीला हो तो स्वभाव में लचीलापन रहता है।

ऊर्ध्व अक्ष : यदि तर्जनी उँगली पर ऊर्ध्व अक्ष हो तो व्यक्ति डरपोक, भीरू, धार्मिक कार्यों में आस्था रखनेवाला तथा सब से निभाकर चलनेवाला होता है।

अधः अक्ष : यदि तर्जनी उँगली पर अधोमुखी अक्ष हो तो
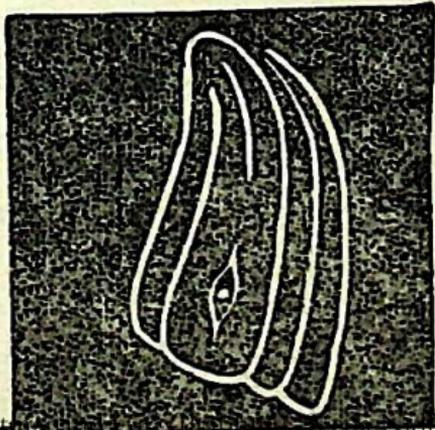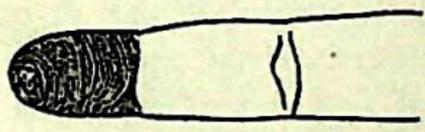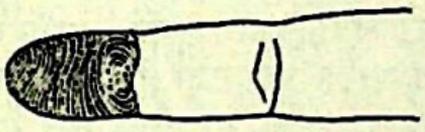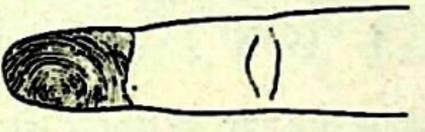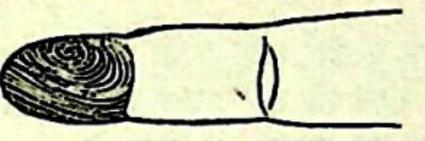
अक्ष
ऊर्ध्व
अधो
वाम
दक्षिण

व्यक्ति अत्यन्त क्रोधित होता है और क्रोधातिरेक में वह क्या कर बैठेगा, इसका स्वयं का उसे भान नहीं रहता, यद्यपि उसका यह क्रोध क्षणिक ही होता है, पर उस क्षणिक क्रोध में भी वह अनर्थ कर बैठता है।

वाम अक्ष : यदि वाम पक्षीय अक्ष हो तो व्यक्ति धर्मान्ध होता है, समाज में लीडर बने रहने की उसे प्रबल चाह होती है। वह इसके लिए सब-कुछ करने को उतारू हो जाता है।

दक्षिण अक्ष : यदि तर्जनी उँगली पर दक्षिण मुखी अक्ष हो तो व्यक्ति सहनशील होता है, घर और बाहर वह प्रत्येक प्रकार से सहनशील बना रहता है, और यही गुण उसके ऊँचे उठने में सहायक होता है।

मध्यमा : मध्यमा उँगली पर अक्ष का निशान कम ही देखने को मिलता है, फिर भी मेरी दृष्टि से ऐसे कई हाथ गुजरे हैं।

यदि मध्यमा उँगली का सिरा गोल हो, तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति श्रमजीवी, कठोर संघर्ष करनेवाला तथा साधारण स्तर का व्यक्ति बनकर रह जाता है। यदि सिरा लम्बा हो तथा उस पर अक्ष का निशान हो, तो उसके सिर में घाव का निशान होता है, जो कि उसके शत्रुओं द्वारा दिया हुआ तेजधार से होता है। यदि सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर अक्ष का निशान हो तो व्यक्ति निश्चय ही अपने ही सम्बन्धी की हत्या करता है। यदि सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो, तथा उस पर अक्ष चिह्न हो तो व्यक्ति सुस्त आलसी तथा मनमौजी होता है।

यदि मध्यमा उँगली का वर्ण गुलाबी-सा हो तो प्रभाव व फलकथन में न्यूनता रहेगी। यदि वर्ण लाल हो तो स्वभाव में उग्रता तथा तीव्रता रहेगी। यदि वर्ण पीलापन लिये हुए हो तो व्यक्ति कायर, डरपोक, असहिष्णु एवं निर्बल होगा।

ऊर्ध्व : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व अक्ष हो तो व्यक्ति का भाग्योदय ३६वें साल के बाद होता है, स्वभाव में कायरपन एवं दब्बूपन होने से वह तीव्रता से उन्नति नहीं कर पाता।

अधः : यदि मध्यमा उँगली पर अधोमुखी अक्ष हो तो व्यक्ति सहिष्णु होता है, परिवार में उसे आदर मिलता है, वह शान्त प्रकृति का झगड़े-टंटे से दूर रहनेवाला व्यक्ति होता है।

वाम : यदि मध्यमा उँगली पर वाम अक्ष हो तो वह स्वार्थी-घोर-स्वार्थी होता है, और बिना गरज के वह किसी का भी कार्य करने में रुचि नहीं लेता।

दक्षिण : यदि मध्यमा उँगली पर दक्षिण अक्ष हो तो व्यक्ति अच्छे एवं ऊँचे स्तर का पुलिस अधिकारी या मिलिट्री ऑफीसर होता है।

अनामिका

अनामिका का मूल सूर्य है, अतः अनामिका उँगली पर यदि अक्ष का चिह्न दिखाई दे, तो पूरी सावधानी से उसका अध्ययन करना चाहिए।

यदि अनामिका उँगली का ऊपरी सिरा गोल हो, तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति कपड़े का व्यापार कर सफलता प्राप्त करता है, या वह किसी मिल में महत्त्वपूर्ण पद पर कार्य करता है। यदि अनामिका उँगली का ऊपरी सिरा लम्बा हो तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो वह संगीत, नाटक, रंगमंच आदि क्षेत्र में साधारण स्तर का होकर उदरोपार्जन करता है। यदि अनामिका उँगली का ऊपरी सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो तो वह कहीं पर भी स्थायी नौकरी नहीं कर सकता, कई बार वह अपनी नौकरियाँ बदलता है। यदि अनामिका उँगली का ऊपरी सिरा गोल-गोल-सा भरा हुआ हो, तो व्यक्ति लापरवाही के कारण राज्य सेवा में उच्चस्तरीय पद प्राप्त करने में असफल रहता है, तथा साधारण श्रेणी का जीवन व्यतीत करता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो वह भरसक प्रयत्न कर स्थिति को अपने अनुकूल बना लेने में सफल होता है। यदि उँगली लाल-सी हो तथा उस पर अक्ष का चिह्न अंकित हो, तो चोरी से या धोखे से उसके द्रव्य का हरण होता है।

यदि उँगली पीली-सी या सफेद-सी हो तो व्यक्ति जीवन में प्रत्येक कार्य के प्रति लापरवाह रहता है।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उंगली पर ऊर्ध्व अक्ष हो तो व्यक्ति आई. ए. एस. या उच्च पदाधिकारी होता है। जीवन में आर्थिक दृष्टि से यह पूर्ण सुखी, सफल एवं सम्पन्न रहता है।

अध: : अनामिका उँगली पर अधोमुखी अक्ष हो तो व्यक्ति

ऊँचे स्तर पर पहुँचकर फिर धीरे-धीरे पतन की ओर गिरता है। उसके जीवन में 'रिवर्सन' के कई मौके आते हैं।

वाम : यदि अनामिका उँगली पर वाम मुखी अक्ष हो तो व्यक्ति का चरित्र सन्देहप्रद रहता है तथा अपने कार्यों से बदनाम होता है।

दक्षिण : यदि अनामिका उँगली पर दक्षिण अक्ष हो तो व्यक्ति अपने परिश्रम से उन्नति करता है तथा उसे सहायता—विशेषकर पारिवारिक सहयोग—नहीं के बराबर मिलता है।

कनिष्ठिका

कनिष्ठिका के मूल में बुध ग्रह की अवस्थिति मानी गयी है, जो कि व्यापार व्यवसाय विधा आदि का हेतु है।

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो, तो व्यक्ति अर्थशास्त्र, वाणिज्य आदि विधा में रुचि लेकर उन्नति करता है। यदि सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति कल्पनाशील एवं दार्शनिक टाइप का होता है, उसे न तो समय का मान रहता है, न परिस्थितियों का। यदि सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति मुनीमगिरी या साधारण फुटकर व्यापारी रहता है। यदि अँगुली का अग्रभाग गोल-गोल-सा भरा हुआ हो तो व्यक्ति राजकीय नौकरी करता है, तथा साधारण वेतनभोगी होता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति अपने लक्ष्य में सफल होता है। यदि वर्ण लाल-सा हो तो व्यक्ति स्वयं गलत कार्य करता है, तथा बाद में पछताता रहता है।

यदि वर्ण पीलापन लिये हुए हो तथा उस पर अक्ष चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति अपने जीवन में जरूरत से ज्यादा संघर्ष करता है।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली पर ऊर्ध्व अक्ष हो तो व्यक्ति योजना कार्यों में सफल होता है, दूरदर्शी होता है, तथा जीवन में वह सुव्यवस्थित ढंग से आगे बढ़ता है।

अध: : यदि कनिष्ठिका उँगली पर अधोमुखी अक्ष हो तो व्यक्ति के व्यय बढ़े-चढ़े होते हैं, तथा एक-न-एक कर्जा चलता ही रहता है, आर्थिक दृष्टि से उसे काफी मुसीबत उठानी पड़ती है।

वाम : यदि कनिष्ठिका उँगली पर वाम अक्ष हो तो व्यक्ति अनैतिक कार्यों से, स्मगिंलग से, धोखे से, धूर्तता से धन एकत्र करता है।

दक्षिण : कनिष्ठिका उँगली पर यदि दक्षिण अक्ष हो तो व्यक्ति अपने शुभ कार्यों से समाज में सम्मानित होता है, उसकी दानशीलता लोगों की जबान पर रहती है।

अँगूठा

यदि अँगूठे का सिरा गोल हो, तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति असत्य बोलनेवाला, खुदगर्ज एवं परपीड़क होता है। यदि सिरा लम्वा-सा हो तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति फिजूलखर्च, हर समय धन की चिन्ता में ग्रस्त एवं परेशान रहता है। यदि अँगूठाग्र चपटा बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर अक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति का अपने पिता से गहरा मतभेद रहता है, तथा वह कलहप्रिय व्यक्ति होता है। अँगूठाग्र गोल-गोल-सा भरा हुआ हो तो व्यक्ति निर्लज्ज, परस्त्रीगामी एवं कामुक होता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलाबी हो तथा अँगूठे पर अक्ष चिह्न हो तो व्यक्ति 'Self-made-man' होता है। यदि लाल हो, तथा उस पर अक्ष अंकित हो, तो उसके जीवन के अधिकांश कार्य क्रोधातिरेक में गलत होते हैं, तथा इसी तुनकमिजाजी के कारण वह जीवन में सफल नहीं हो पाता। यदि वर्ण पीला-सा हो, तथा उस पर अक्ष अंकित हो तो व्यक्ति वीर्य सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त रहता है, जीवन के चालीसवें वर्ष के बाद वह स्वयं को नामर्द-सा अनुभव करने लगता है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर उर्ध्व अक्ष अंकित हो तो व्यक्ति साहसी होता है, असम्भव को भी सम्भव कर दिखाने की उसमें क्षमता होती है, ऐसा व्यक्ति अपने सफल जीवन का निर्माण स्वतः करता है।

अध: : यदि अँगूठे पर अधोमुखी अक्ष हो तो व्यक्ति को जीवन में जरूरत से ज्यादा परेशानियाँ देखनी पड़ती हैं। उसके प्रत्येक कार्य में बाधाएँ आती हैं। उसके जीवन में शायद ही कोई

ऐसा कार्य सम्पन्न होता है, जिसकी पूर्णता के मार्ग में व्यवधान

या बाधाएँ न आती हों।

वाम : यदि अँगूठे पर वाम अक्ष हो तो जातक परस्त्रियों एवं स्वार्थी व्यक्तियों के चक्कर में द्रव्य लुटा देता है। उसे होश तब आता है, जब वह सब-कुछ लुटा बैठता है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिण अक्ष हो तो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न सुखी, यशस्वी एवं मधुर जीवन व्यतीत करता है।

कमल

कमल को लक्ष्मी का आसन भी कहा जाता है और लक्ष्मी का प्रतीक भी। जीवन के समस्त ऐश्वर्य, भोग, सुख-सुविधा, सम्पन्नता आदि का प्रतीक यही कमल माना गया है, अतः हाथ की उँगलियों पर कमल की उपस्थिति अत्यन्त श्रेष्ठ मानी गयी है।

मैं पीछे के पृष्ठों पर 'पद्म' का वर्णन कर चुका है, पर पाठकों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि पद्म तथा कमल के चिह्नों में अन्तर है। पद्म की ऊपरी पँखुड़ी वर्तुल आकार की होती है, भँवर के सदृश होती है, जब कि कमल की ऊपरी पँखुड़ी वृत्त के समान होती है। अतः उँगलियों पर पद्म और कमल का भेद सूक्ष्मता पूर्वक देखकर ही समझना चाहिए।

तर्जनी

यदि तर्जनी उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर कमल का चिह्न हो तो, व्यक्ति उच्च अधिकारी पद पर प्रतिष्ठित होकर जीवन में पूर्ण सुखोपभोग करता है। यदि तर्जनी उँगली का सिरा लम्बा हो तथा उस पर कमल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति कला के क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर धनवान ऐश्वर्यवान बनता है। यदि तर्जनी उँगली का सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो तो तथा उस पर कमल-चिह्न हो तो व्यक्ति फिजूल खर्ची, अपव्ययी होता है।

धन उसके हाथ में टिकता नहीं।

यदि तर्जनी उँगली का अग्रभाग भरा हुआ-सा हो, तथा उस पर कमल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति स्त्रियों के द्वारा धन एकत्र करता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति के पास द्रव्य संचित रहता है। यदि लाल हो तो ससुराल से द्रव्यलाभ होता है, यदि पीला-पीला-सा वर्ण हो तो व्यक्ति का अधिकांश द्रव्य चिकित्सा पर व्यय हो जाता है।

ऊर्ध्व : यदि तर्जनी पर ऊर्ध्व कमल हो तो व्यक्ति राजकीय सेवा में सर्वोच्च पद पर पहुँचता है, तथा समस्त प्रकार के ऐश्वर्य सुखों का भोग करता है।

अधः : यदि तर्जनी उँगली पर अधः कमल हो तो व्यक्ति गजेटेड अधिकारी होता है, यद्यपि उसे अपनी उन्नति में काफी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

बाम : तर्जनी उँगली पर बाम कमल इस बात का सूचक है कि व्यक्ति को सुसराल से श्रेष्ठ द्रव्य प्राप्त होगा, या इसकी उन्नति में ससुराल का काफी अधिक योगदान रहेगा।

दक्षिण : तर्जनी उँगली पर दक्षिण कमल स्वोन्नति का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने ही बलबूते पर श्रेष्ठतम उन्नति करके दिखाता है, तथा धन लाभ करता है।

मध्यमा

मध्यमा उँगली का अग्रभाग यदि गोल हो, तथा उस पर कमल का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति लोहे या खनिज के व्यापार से लाभ उठाता है।

यदि मध्यमा उँगली का अग्रभाग लम्बा-सा हो तथा उस पर कमल का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति विदेशों में कलात्मक वस्तुओं के निर्यात से धन लाभ करता है। यदि मध्यमा उँगली का नखाग्र भाग चपटा या बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर कमल का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति गलत कार्यों एवं समाज-विरोधी कार्यों से धन संचय करता है। यदि मध्यमा उँगली का अगला भाग भरा हुआ गोल-गोल-सा हो, तथा उस पर कमल चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के व्यापार से विशेष

कमल
ऊर्ध्व
वाम
दक्षिण
अधो
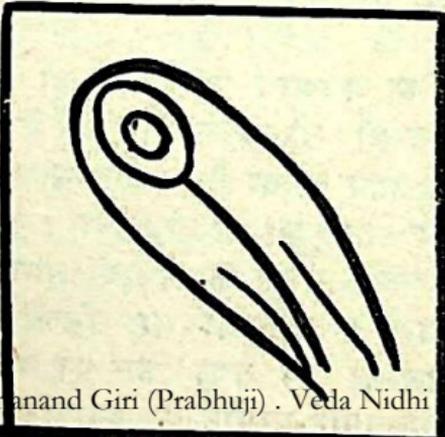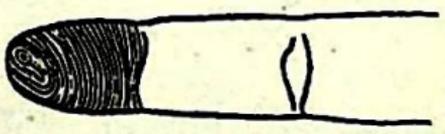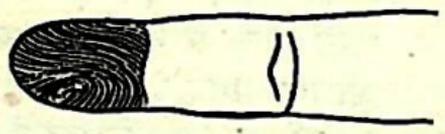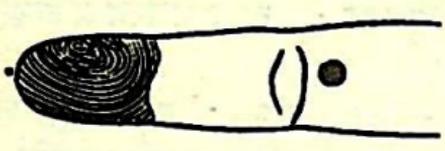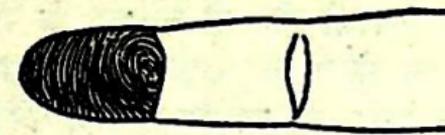
धन लाभ कर सकता है।

यदि मध्यमा उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो श्रेष्ठतम स्थिति में पहुंचता है। यदि लाल हो तो कुछ बाधाओं के बाद सफलता प्राप्त कर लेता है। यदि उँगली का वर्ण पीला-सा या सफेद-सा हो, तथा उस पर कमल का चिह्न हो तो व्यक्ति बाधाओं के कारण हताश एवं निराश हो जाता है और अपने लक्ष्य तक पहुंचने में असफल-सा ही रहता है।

ऊर्ध्वं : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व कमल हो तो व्यक्ति चालीस से साठ वर्ष की उम्र में अप्रत्याशित लाभ उठाता है।

अधः : यदि मध्यमा उँगली पर अधः कमल हो तो व्यक्ति का यौवन काल कठिन संघर्षों में गुजरता है, परन्तु वृद्धावस्था में वह पूर्ण सुखोपभोग करता है।

वाम : मध्यमा उँगली पर वाम कमल बाल्यावस्था में भाग्योदय का सूचक है। ऐसे व्यक्ति के पूरे जीवन को एक दृष्टि में देखें, तो उसकी अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा बाल्यावस्था ज्यादा सरल व सुखी होती है।

दक्षिण : यदि मध्यमा उँगली पर दक्षिण कमल हो तो व्यक्ति चौबीसवें वर्ष के बाद उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ प्रबल ऐश्वर्य-भोग करता है।

अनामिका

अनामिका उँगली का ऊपरी सिरा यदि गोल हो, तथा उस पर कमल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति वस्त्र उद्योग में लाभ उठाता है। अनामिका उँगली का अग्रभाग यदि लम्बा हो, तथा उस पर कमल चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति होटल उद्योग या रेस्टोरेण्ट उद्योग से प्रबल धन लाभ करता है। यदि अनामिका उँगली का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर कमल अंकित हो तो व्यक्ति दलाली आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल भरा-भरा-सा हो, तथा उस पर कमल चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति रेडीमेड स्टोर या फैन्सी स्टोर जैसे कार्य करे तो निश्चय ही सफलता प्राप्त कर सकता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति को ऐसे कार्यों

का सहयोग मिलता रहता है, जो कि उसकी उन्नति के लिए प्रबल सहायक होते हैं। यदि लाल वर्ण हो तो व्यक्ति साझेदारी (Partnership) से धोखा खाता है। यदि पीला वर्ण हो तो व्यक्ति आलस्य के कारण धन संचय में कठिनाई अनुभव करता है।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उँगली पर ऊर्ध्वमुखी कमल हो तो व्यक्ति सम्मान के साथ उच्चस्तरीय जीवन व्यतीत करता है, आर्थिक दृष्टि से उसे कोई अभाव नहीं रहता ।

अधः : यदि अनामिका उँगली पर अधः कमल हो तो व्यक्ति कंजूस होता है, वह स्वयं धन होते हुए भी सामान्य तरीके से रहेगा, तथा लोगों के सामने दीनता का ही प्रदर्शन करता रहेगा।

वाम : यदि अनामिका उँगली पर वाम कमल हो तो व्यक्ति के आय के स्रोत सीमित होते हैं, तथा वह अपने जीवन को शान्त व्यवस्थित ढंग से व्यतीत करता है।

दक्षिण : अनामिका उँगली पर दक्षिण कमल इस बात का सूचक है कि व्यक्ति के आय के स्रोत एक से अधिक होंगे, तथा जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव अनुभव नहीं होगा।

कनिष्ठिका

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा गोल हो, तथा उस पर कमल का चिह्न हो तो व्यक्ति धान के, गल्ले के व्यापार से लाभ उठाता है। कनिष्ठिका उँगली का सिरा लम्बा हो तथा उस पर कमल का चिह्न हो तो व्यक्ति एम्पोरियम, वस्त्र उद्योग, कलात्मक वस्तुओं की दूकान आदि से लाभ उठाता है, तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है। यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर कमल का चिह्न हो तो व्यक्ति सेनेटरी वर्क्स ठेकेदारी, टेण्डर, एजेन्सी-जैसे कार्यों से धन लाभ करता है। यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा भरा हुआ गोल-गोल-सा हो, तथा उस पर कमल का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति निस्सन्देह मशीनरी कार्यों से लाभ उठाता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तथा उस पर कमल चिह्न अंकित हो तो फलादेश में वृद्धि, लाल हो तो सफलता तथा पीला-सा हो तो बाधाएँ समझनी चाहिए।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली पर ऊर्ध्व कमल हो तो व्यक्ति लाखों का व्यापार करता है, तथा समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त कर सकने में सफल होता है।

अध: : यदि कनिष्ठिका उँगली पर अध: कमल हो तो व्यक्ति के जीवन के पूर्वार्द्ध सामान्य एवं कठिनाइयों से भरा हुआ होता है, जवकि उत्तरार्द्ध अत्यन्त श्रेष्ठ, अनुकूल एवं धनप्रद होता है।

वाम : कनिष्ठिका उँगली पर वाम कमल व्यापार में सफलता का सूचक है, ऐसा व्यक्ति जीवन में स्वयं के सद् प्रयत्नों से व्यापार में सफलता प्राप्त करता है, तथा सम्माननीय जीवन व्यतीत करता है।

दक्षिण : यदि कनिष्ठिका उँगली पर दक्षिण कमल हो तो व्यक्ति का जीवन ऐशोआराम पूर्ण सुख-सुविधाओं के साथ व्यतीत होता है।

अंगूठा

यदि अँगूठे का सिरा गोल हो, तथा उस पर कमल का चिह्न हो तो व्यक्ति सेना या पुलिस में सप्लाई, अथवा सड़कें आदि वनाने का ठेका लेकर लाभ उठाता है। अँगूठे का लम्बा सिरा हो तथा उस पर कमल चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति अपने जन्मस्थान से दूर व्यापार में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। यदि अँगूठे का सिरा चपटा वैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर कमल चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति अनैतिक कार्यों से प्रवल धन संचय करता है। यदि अँगूठे का सिरा गोल भरा-भरा सा हो, तथा उस पर कमल-चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति फैन्सी स्टोर आदि व्यापार से लाभ उठा सकने में समर्थ होता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलावी हो तो जीवन में आर्थिक परेशानी नहीं रहती, लाल हो तो कई वार सम्वन्धियों से धोखा खाना पड़ता है, पीला-सा हो तो व्ययाधिक्य होने से आर्थिक अभाव वना रहता है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठें पर ऊर्ध्व कमल हो तो व्यक्ति सामान्य व्यापार से सन्तुष्ट नहीं होता, भले ही उसने सामान्य घराने में जन्म लिया हो, पर उसके विचार, उसका लक्ष्य ऊंचा होता है, और अन्ततः वह अपने उद्देश्य में सफल हो ही जाता है।

अध: : यदि अँगूठे पर अधः कमल हो तो व्यक्ति के एक से अधिक व्यवसाय होते हैं, पर श्रेष्ठ स्तरीय एक भी नहीं होता। अपने व्यापार में वह बिना नैतिक-अनैतिक मूल्यों की चिन्ता किये धन संचय में लीन रहता है, उसके जीवन का मूलमन्त्र ही 'धन' होता है, और वह अन्य सभी सम्बन्धों को इसी दृष्टि से देखता है।

वाम : जिस व्यक्ति के अँगूठे पर वाम कमल हो वह शृंगार प्रसाधन, जौहरी, गहने बनानेवाला या बेचनेवाला, कपड़े सीनेवाला, रेडीमेड स्टोर, आदि व्यापार से प्रचुर धनोपार्जन करता है, तथा जीवन में आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करता है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिण कमल हो तो व्यक्ति के आय के स्रोत एक से अधिक होते हैं तथा उन सभी में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

बज्र्

वज्र का चिह्न शिखर वत् होता है, जो कि चित्र से स्पष्ट है, हाथ में वज्र की उपस्थिति शक्ति, साहस, धैर्य, दिलेरी तथा आत्मविश्वास का सूचक है।

तर्जनी

तर्जनी उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो, तो व्यक्ति प्रबल साहसी एवं नेतृत्ववान व्यक्ति होता है। राजकीय सेवा में वह एक सफल प्रशासक माना जाता है। यदि सिरा लम्बा-सा हो तथा उस पर वज्र का निशान हो, तो वह प्रत्येक कार्य प्रारम्भ तो बड़े जोश-खरोश से करता है, परन्तु तुरन्त ही हिम्मत हार बैठता है। यदि सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति कायर, बुजदिल एवं बुझे हुए अंगारे-सा जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

यदि नखाग्र भाग गोल भरा-भरा-सा हो तथा उस पर वज्र
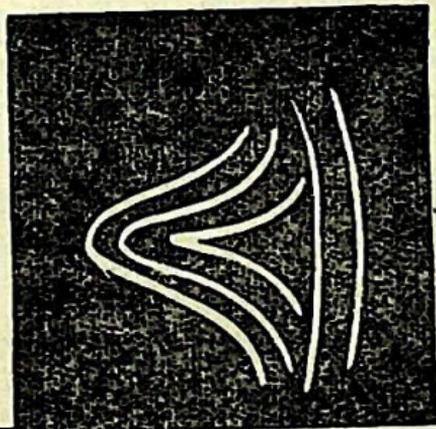
वज्र
ऊर्ध्व
अधो
वाम
दक्षिण
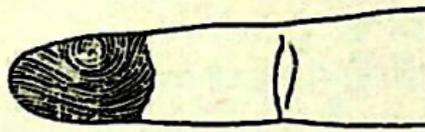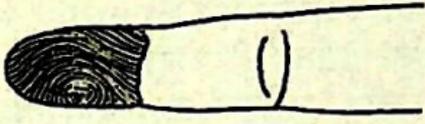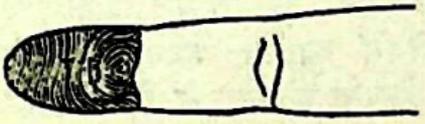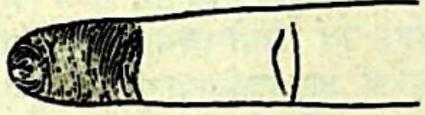
अंकित हो, तो व्यक्ति वेपरवाह पर साहसी होता है।

यदि तर्जनी उँगली का वर्ण गुलाबी-सा हो तो उसमें अपेक्षाकृत क्षमा का भाव या धैर्य ज्यादा होता है। यदि लाल वर्ण हो तो व्यक्ति क्रोधी, चंचल एवं उतावला-सा होता है। यदि पीला वर्ण हो तो व्यक्ति दब्बू स्वभाव का होता है।

ऊर्ध्व वज्र : तर्जनी उँगली पर उर्ध्व वज्र हो तो व्यक्ति प्रवल साहसी, निर्भीक एवं समय पड़ने पर सव-कुछ दाँव पर लगाने को उत्सुक होता है।

अधो वज्र : यदि तर्जनी उँगली पर अधो वज्र हो तो व्यक्ति धोखे से या छल से शत्रु को परास्त करने की कला में निपुण होता है। ऐसा व्यक्ति सफल कूटनीतिज्ञ भी होता है।

वाम वज्र : यदि तर्जनी उँगली पर वाम वज्र हो तो व्यक्ति अपने समाज का नेता होता है, विशेषरूप से वह जिस वर्ग के अन्तर्गत नौकरी करता है, उस वर्ग में नेता-सा होता है।

दक्षिण वज्र : यदि तर्जनी उँगली पर दक्षिण वज्र हो तो व्यक्ति सम्माननीय जीवन व्यतीत करनेवाला होता है तथा प्रशासकीय पद को वह अत्यन्त योग्यता से निभाता है।

मध्यमा

यदि मध्यमा उँगली का अग्रभाग गोल हो, तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति क्रूर एवं क्रोधी स्वभाव का होता है, अपने इस क्रोधी स्वभाव के कारण वह कई बार वनते हुए काम को विगाड़ देता है। यदि मध्यमा उँगली का सिरा लम्बा हो, तथा उस पर वज्र-चिह्न अंकित हो, तथा रंगमच क्षेत्र में या सिनेमा में सफल खलनायक वनता है, तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है। यदि मध्यमा उँगली का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर वज्र अंकित हो तो वह व्यक्ति हत्यारा होता है, तथा उसे जेल-यातना भोगनी पड़ती है। यदि मध्यमा उँगली का सिरा गोल-गोल भरा-भरा-सा हो तो उसे नेता वनने की, या अपने वर्ग में अगुआ वनने की जवरदस्त भूख होती है।

यदि मध्यमा उँगली का वर्ण गुलावी हो तो निष्क्रिय जीवन व्यतीत करनेवाला, लाल वर्ण हो तो अपने प्रवल प्रयत्नों से विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल वनानेवाला, तथा पीला वर्ण

हो तो लापरवाही से व्यर्थ का जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

ऊर्ध्ववज्र : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व वज्र हो तो व्यक्ति प्रवल साहसी एवं निर्भीक होता है, कितनी ही कठिनाइयाँ आ जायें, न तो वह घबराता है और न ही विचलित होता है।

अधो वज्र : मध्यमा उँगली पर अधो वज्र इस बात का सूचक है कि व्यक्ति मन का कुटिल, पर चेहरे पर हमेशा मुस्कराहट विखेरनेवाला, मन में द्वेष पर ऊपर से गले मिलनेवाला होता है, उसका द्वित्व व्यक्तित्व उसे हर समय आक्रान्त रखता है।

बाम वज्र : मध्यमा उँगली पर वाम वज्र व्यक्ति की हठ-धर्मी एवं जिद्द को व्यक्त करता है। ऐसा व्यक्ति टूट सकता है, झुक नहीं सकता। आत्माभिमान इसमें कूट-कूटकर भरा होता है। ये एक बार जो निश्चय कर लेते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

दक्षिण वज्र : जिस व्यक्ति की मध्यमा उँगली पर दक्षिण वज्र हो, वह व्यक्ति होशियार, ऊँच-नीच समझनेवाला, पर दृढ़ निश्चयी होता है, अपने धुन का धनी यह व्यक्ति जीवन में सफल होकर ही रहता है।

अनामिका

अनामिका उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति अपने कार्यों से समाज में बदनाम होता है। यदि अग्रभाग लम्बा हो, तथा उस पर वज्र चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति परस्त्री में आसक्त होता है तथा बदनामी के साथ उसके प्रेम का अन्त होता है। यदि अग्रभाग चपटा, बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर वज्र अंकित हो, तो व्यक्ति अपराधी वृत्तिवाला तथा निर्दयी होता है, जीवन में उसे न तो मोह-माया व्यापती है, और न किसी के प्रति वह सहिष्णु रह पाता है।

यदि अँगुली का अग्रभाग गोल-गोल-सा भरा हुआ हो तथा उस पर वज्र अंकित हो, तो व्यक्ति अनैतिक ढंग से धन कमाता है, तथा गुलछर्रे उड़ाता है।

यदि अनामिका उँगली का वर्ष गुलाबी हो, तथा उस पर वज्र अंकित हो, तो व्यक्ति अपेक्षाकृत शान्त सरल तथा सहिष्णु होता है। यदि उँगली का वर्ण लाल हो तथा उस पर वज्रांकित

हो; तो व्यक्ति में प्रबल आत्मविश्वास होता है और यह आत्म-विश्वास कभी-कभी सीमा का अतिरेक भी कर जाता है। यदि वर्ण पीला-सा हो तो व्यक्ति दुश्चरित्र एवं नैतिक नियमों से परे होता है।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उँगली पर ऊर्ध्व वज्र हो तो व्यक्ति निर्भीक होता है, ऐसा व्यक्ति हाथ जोड़ने की अपेक्षा रौब-दाब से अपना काम निकालने में माहिर होता है।

अध: : अनामिका उँगली पर अधोमुखी वज्र हो तो व्यक्ति निर्दयी, क्रूर एवं प्रबल साहसी होता है। वह अपने स्वार्थ के लिए किसी भी सीमा तक जा सकता है।

वाम : यदि अनामिका उँगली पर वाम वज्र हो तो व्यक्ति अनैतिक कार्यों से धन एकत्र करने के लिए ऐसी गैंग का सरदार होता है, जो अपने स्वामी के लिए मरने-मारने को उतारू हो।

दक्षिण : अनामिका उँगली पर यदि दक्षिण वज्र हो तो व्यक्ति मिलिट्री में ठेकेदार या शस्त्रादि बनाने के कारखाने का स्वामी होता है, तथा लाभ उठाता है।

कनिष्ठिका

कनिष्ठिका उँगली का नखाग्र भाग गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो, तो व्यक्ति पुलिस सेवा में ख्यातिलाभ करता है। यदि अगला भाग लम्बा हो तथा उस पर वज्रांकित हो तो व्यक्ति पुलिस में सी. आई डी. जैसे विभाग में स्थान पाता है। यदि अगला भाग चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर वज्र अंकित हो तो व्यक्ति जेबकतरा या कुख्यात व्यक्ति होता है, तथा कई बार जेल जाता है। यदि अगला भाग गोल-सा भरा-भरा हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति साहसिक कार्यों में मारा जाता है या किसी अदालत के कारण मारा जाता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति कायर किस्म का होता है, लाल वर्ण हो तो व्यक्ति प्रबल साहसी और झगड़ालू किस्म का होता है, तथा पीला-सा वर्ण हो तो व्यक्ति सुस्त एवं आलसी होता है।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली पर उर्ध्व वज्र हो तो व्यक्ति

में संघर्ष सहन करने की प्रबल एवं अदम्य भावना होती है। ऐसे व्यक्ति के मन में जो रहस्य दब जाते हैं, वे सहज ही बाहर नहीं निकल पाते।

अधः : यदि कनिष्ठिका उँगली पर अधोमुखी वज्र हो तो व्यक्ति एक सफल सी. आई. डी. ऑफिसर होता है, या इण्टेलीजेन्सी डिपार्टमेंट में वह सफल अधिकारी माना जाता है।

वाम : यदि कनिष्ठिका पर वाम वज्र हो तो व्यक्ति की अकाल मृत्यु संघर्ष में या अपने पुराने शत्रु से मुठभेड़ में होती है, परन्तु अन्तिम क्षणों तक वह साहस नहीं छोड़ता।

दक्षिण : जिस व्यक्ति की कनिष्ठिका उँगली पर दक्षिण वज्र हो तो वह व्यक्ति एक सफल पुलिस अधिकारी या मिलिट्री ऑफिसर होता है, उसे उच्चस्तरीय सम्मान एवं ख्याति लाभ होता है।

अंगूठा

अंगूठा : अँगूठे का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति निस्सन्देह उच्च मिलिट्री ऑफिसर होता है, तथा जीवन में सम्मान एवं ख्याति लाभ करता है। यदि सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति मिलिट्री में इण्टेलीजेन्सी डिपार्टमेंट का अधिकारी होता है। अन्दर से सरल एवं सहृदय होते हुए भी यह ऊपर से दक्ष प्रशासक माना जाता है। यदि अंगूठाग्र चपटा, बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति दुर्धर्ष डाकू होता है तथा अपने कार्यों से प्रजा में आतंक-सा फैला देता है, उसकी चर्चा कुछ समय के लिए बच्चे-बच्चे की जबान पर होती है।

यदि अँगूठे का अगला भाग भरा-भरा-सा गोल हो, तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति पुलिस या मिलिट्री में साधारण-स्तर तक ही पहुंच सकता है, यद्यपि उसमें आगे बढ़ने की तीव्र चाह आजीवन बनी रहती है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलाबी हो तो ऐसे व्यक्ति की उन्नति में काफी बाधाएँ आती हैं, जरूरत से ज्यादा संघर्ष देखने पड़ते हैं, पर अन्त में सफल हो जाता है। यदि वर्ण लाल हो तो व्यक्ति निस्सन्देह उच्च पदाधिकारी होता है, ऐसा व्यक्ति साधारण स्तर से कैरियर प्रारम्भ करके भी ऊँचे स्तर तक अपने प्रयत्नों से

पहुंच जाता है। यदि अँगूठे का अगला भाग पीला-पीला-सा हो तो व्यक्ति के जीवन में जरूरत से ज्यादा बाधाएँ आती हैं, फलस्वरूप वह अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो पाता।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व वज्र हो तो व्यक्ति अपने कार्यों से सम्मान ख्याति एवं यश अर्जित करता है, तथा सफलता प्राप्त करता है।

अधः : यदि अँगूठे पर अधोमुखी वज्र हो तो व्यक्ति के प्रयत्न विफल होते हैं, फलस्वरूप उसके मन में धीरे-धीरे कुण्ठा एवं जड़ता-सी आने लगती है।

वाम : यदि अँगूठे के अग्रभाग पर वाम वज्र हो तो व्यक्ति प्रबल डाकू, ठग या समाज विरोधी कार्य करनेवाला होता है।

दक्षिण : जिस व्यक्ति के अँगूठे पर दक्षिण वज्र हो वह शान्त, सरल एवं चतुर अधिकारी होता है, तथा जीवन में सफल, सुखी एवं सन्तुष्ट रहता है।

कुण्डल

उँगलियों पर कुण्डल का चिह्न होना अपने-आप में महत्त्वपूर्ण माना गया है, इसका चिह्न मोटी आँख के समान या कुण्डल की आकृति-जैसा होता है।

तर्जनी

तर्जनी उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर कुण्डल का चिह्न हो तो व्यक्ति कानून का जानकार या विशेषज्ञ होता है। ऐसा व्यक्ति वकील, एडवोकेट या इन्कमटैक्स का वकील हो सकता है। यदि सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति, देवस्थान का पुजारी, पुरोहित या ऐसा ही धार्मिक विधि-विधान करने करानेवाला व्यक्ति होता है। यदि सिरा चपल, बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति सट्टे से, जुए से धन कमानेवाला, लॉटरी टिकट-विक्रेता या चकला
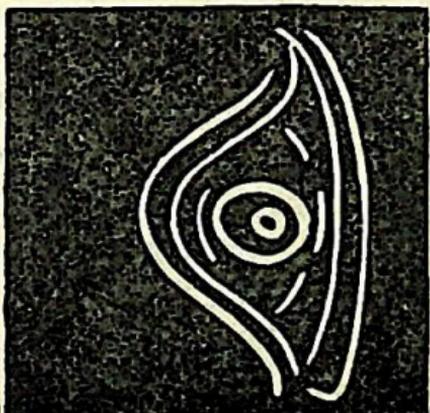
कुण्डल
ऊर्ध्व
अधो
वाम
दक्षिण
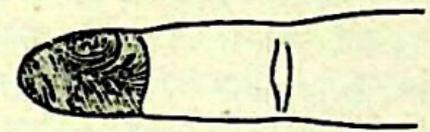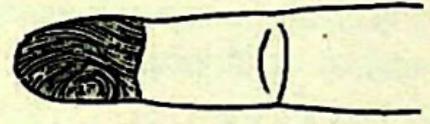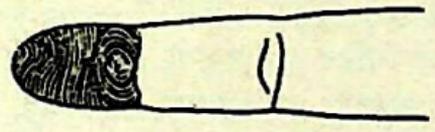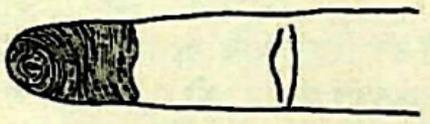
चलानेवाला होता है।

यदि सिरा भरा-भरा सा गोल हो तथा उस पर कुण्डल अंकित हो, तो व्यक्ति बड़े भाई से मिलकर, उसके सहयोग से या किसी की साझेदारी से धनोपार्जन करता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी तो उसके व्यक्तित्व में प्रभाव, लाल हो तो आकर्षण तथा पीलापन हो तो खिंचाव-सा होगा।

ऊर्ध्व : यदि तर्जनी उँगली पर ऊर्ध्व कुण्डल हो तो व्यक्ति वकालत से लाखों रुपये कमाता है, तथा जीवन के समस्त सुखोपभोग करता है।

अधः : यदि तर्जनी उँगली पर अधोमुखी कुण्डल हो तो व्यक्ति साधारण स्तर का धर्मात्मा या देवपूजक होता है, उसकी कथनी-करनी में जबरदस्त अन्तर होता है।

वाम : जिस व्यक्ति की तर्जनी उँगली पर वाम कुण्डल हो, वह व्यक्ति समाज-विरोधी एवं निम्नस्तरीय कार्य करके प्रचुर मात्रा में धन-संचय करता है।

दक्षिण : जिस व्यक्ति की तर्जनी उँगली पर दक्षिण कुण्डल हो, वह व्यक्ति साझेदारी में व्यापार से प्रचुर लाभ उठाकर यशोपार्जन करता है।

मध्यमा

मध्यमा उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर कुण्डल का चिह्न हो तो व्यक्ति पत्थर की खान का मालिक, खनिज पदार्थों का व्यापार करनेवाला या सीमेण्ट विक्रेता आदि होता है। यदि सिरा लम्बा हो तथा उस पर कुण्डल का चिह्न अंकित हो तो तेल, पैट्रोल आदि के व्यापार से लाभ उठाता है, ऐसा व्यक्ति व्यापारिक कार्यों में चतुर होता है। यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर कुण्डल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति चमड़ा या चमड़े से बनी वस्तुओं के व्यापार से लाभ उठाता है, बूट कम्पनी, चमड़े की अटैची। सन्दूक या ऐसी ही चमड़े से बनी वस्तुओं के व्यापार से वह लाखों में खेलता है।

यदि मध्यमा उँगली का सिरा गोल भरा-भरा-सा हो तथा उस पर कुण्डली का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति वैद्य या चिकित्सक होता है तथा अपनी चिकित्सा से वह पर्याप्त यश

अर्जित करता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो उसके जीवन में बाधाएँ आती हैं, तथा सफलताएँ कम मिलती हैं। यदि लाल हो तो व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण असफल रहता है। यदि पीला-सा हो तो व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

ऊर्ध्व : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व कुण्डल हो तो व्यक्ति उच्चस्तरीय ठेकेदार होता है तथा ऐसे सभी कार्यों में, जिनका सम्बन्ध खनिज से है, वह लाभ उठाता है।

अध : जिस व्यक्ति की मध्यमा उँगली पर अधोमुखी कुण्डल हो, वह चमड़े की बनी वस्तुओं के निर्यात से लाभ उठाता है, ऐसा व्यक्ति जीवन में नौकरी की अपेक्षा व्यापार से ही लाभ उठा सकता है।

वाम : यदि मध्यमा उँगली पर वाम कुण्डल हो तो तरल पदार्थ एवं ज्वलनशील पदार्थों के व्यापार से प्रचुर लाभ उठाता है, ऐसा व्यक्ति जीवन में श्रेष्ठस्तरीय सफलता प्राप्त कर सकता है।

दक्षिण : यदि मध्यमा उँगली पर दक्षिण कुण्डल हो तो व्यक्ति व्यापार में बिना किसी साझेदारी के लाभ उठाता है, यदि यह साझेदारी में व्यापार करे, तो निश्चय ही सहयोगियों से इसे धोखा एवं हानि उठानी पड़ती है।

अनामिका

यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल हो, तथा उस पर कुण्डल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति रेडियो मरम्मत, रेडियो की दूकान या वाद्य यन्त्रों से सम्बन्धित व्यापार करता है, तथा उससे लाभ उठाता है। यदि अनामिका उँगली का सिरा लम्बा हो, तो व्यक्ति वैद्य या चिकित्सक बनता है, अथवा मेडिकल एजेन्सी या मेडिकल दूकान से ख्याति एवं धन अर्जित करता है। यदि अनामिका उँगली का सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो, तो व्यक्ति लकड़ी का व्यापार या फर्नीचर-विक्रेता के रूप में धन-लाभ करता है। यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल भरा-भरा सा हो, तथा उस पर कुण्डल का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति धार्मिक कार्यों में रुचि लेनेवाला, कथावाचक या देवस्थान से सम्बन्धित

अधिकारी होता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति व्यापारिक क्षेत्र में प्रबल यश प्राप्त करता है। यदि वर्ण लाल हो तो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करनेवाला होता है।

यदि अनामिका उँगली का वर्ण पीला हो या सफेद-सा हो तो व्यक्ति अपने आलस्य एवं अदूरदर्शिता के कारण गरीबी तथा मुसीबत के दिन देखता है।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उँगली पर ऊर्ध्व कुण्डल हो तो व्यक्ति रेडियो मरम्मत आदि वाद्य यन्त्रों से सम्बन्धित व्यापार में श्रेष्ठस्तरीय उन्नति करता है।

अधः : यदि अनामिका उँगली के अग्रभाग पर कुण्डल अधोमुखी हो तो व्यक्ति सामान्य स्तरीय वैद्य या चिकित्सक बनकर रह जाता है।

वाम : यदि अनामिका उँगली पर वाममुखी कुण्डल हो तो व्यक्ति टिम्बर के क्षेत्र में अपूर्व सफलता एवं धन प्राप्त करता है।

दक्षिण : यदि अनामिका उँगली पर दक्षिणमुखी कुण्डल हो तो व्यक्ति सफल व्यापारी, कुशल एजेण्ट, एवं प्रसिद्ध दानवीर बन ख्याति प्राप्त करता है।

कनिष्ठिका

यदि कनिष्ठिका उँगली का अग्रभाग गोल हो तथा उस पर कुण्डल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति प्रोफेसर, लेक्चरर, स्कूल मास्टर, शिक्षक आदि होता है। यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा पतला हो, तथा उस पर कुण्डल अंकित हो तो वह व्यक्ति बैंकिंग, लेखा ऑफिसर (Accounts Officer) आदि होता है। यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर कुण्डल चिह्न अंकित हो, तो वह व्यक्ति सफल वकील या एडवोकेट होता है।

यदि उँगली का सिरा गोल-सा भरा-भरा हो तथा उस पर कुण्डल चिह्न अंकित हो तो वह लेखक, प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता आदि होता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति अपने व्यवसाय में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है, तथा उन्नति कर एक सफल

व्यवसायी या अधिकारी होता है। यदि उँगली का वर्ण लाल-सा हो तो व्यक्ति की वृद्धावस्था सुख से व्यतीत होती है। यदि उँगली का रंग पीला-पीला सा हो तथा कुण्डलाकृति अंकित हो तो वह व्यक्ति जीवन-भर अपमान एवं समस्याएँ सहन करता रहता है।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली पर ऊर्ध्व कुण्डल हो तो व्यक्ति आमोद-प्रमोद के स्थानों से, सिनेमा से, पिक्चरें लेने-बेचने से वह व्यक्ति लाभ उठाता है।

अधः : यदि कनिष्ठिका उँगली पर अधोमुखी कुण्डल हो, तो व्यक्ति एजेण्ट, वकील, एडवोकेट आदि होता है, तथा जीवन में सफल होता है।

वाम : यदि कनिष्ठिका उँगली पर वाम कुण्डल हो तो सूद से, ब्याज से, किराया या गतिशील धन से आजिविका करता है।

दक्षिण : यदि कनिष्ठिका उँगली पर दक्षिण कुण्डल हो तो व्यक्ति उच्च अधिकारी बनता है, तथा श्रेष्ठ धनोपार्जन, यश एवं सम्मान प्राप्त करता है।

अंगूठा

यदि अँगूठे का ऊपरी सिरा गोल हो तथा उस पर कुण्डल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति टैक्स प्रेक्टिशनर, सेल्स टैक्स ऑफिसर आदि बनकर लाभ उठाता है। यदि अँगूठे का ऊपरी सिरा लम्बा हो तथा उस पर कुण्डल का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति अभिनेता, डायरेक्टर या प्रोड्यूसर होता है। यदि अँगूठे का नखाग्र भाग चपटा, बैठा हुआ-सा हो, तथा उस परा कुण्डल अंकित हो तो व्यक्ति जलीय कार्यों से धन एकत्र करत है, सोडावाटर फैक्टरी, शरबत आदि तरल पदार्थ बेचकर वह धनवान बनता है।

यदि अँगूठे का अगला भाग गोल-सा भरा-भरा हो, तो व्यक्ति मुख तथा शरीर के सौन्दर्य का वर्धन करनेवाले पदार्थ, बढ़िया सुगन्धित तेल, इत्र आदि वस्तुओं के व्यापार से वह लाभ उठाता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति संगीत एवं वाद्य-यन्त्रों द्वारा आजीविका चलाता है। यदि वर्ण लाल हो तो व्यक्ति

वाहन से लाभ उठाता है, टेक्सी, ट्रक आदि के प्रयोग से वह

धनोपार्जन करता है। यदि वर्ण पीला-पीला सा हो तो व्यक्ति कविताओं के माध्यम से या गायन के माध्यम से लाभ एवं धन अर्जित करता है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व कुण्डल हो तो व्यक्ति रत्न, गहने, आभूषण आदि के क्रय-विक्रय से उच्चस्तरीय लाभ उठाता है।

अध: : यदि अँगूठे पर अधोमुखी कुण्डल हो तो व्यक्ति फलों के व्यापार से, या होटल रेस्टोरेण्ट से, या पकी हुई खाद्य पदार्थों के क्रय-विक्रय से भारी धन-लाभ करता है।

वाम : यदि वामपक्षीय कुण्डल हो तो व्यक्ति पायलट या यान चालक होता है, तथा धनोपार्जन करता है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिण की ओर कुण्डल का चिह्न अंकित हो तो न्यायाधीश आदि उच्चस्तरीय सम्मानजनक पद प्राप्त होता है।

निरूपाक्ष

निरूपाक्ष का आकार-ऊपर वक्र दो शिखरवत रेखाएँ तथा उनके बीच गोल खोखला बिन्दु, तथा नीचे समानान्तर लगभग सीधी दो रेखाएँ—हैं, जो कि किसी भी उँगली पर सहज ही देखा जा सकता है।

तर्जनी

तर्जनी उँगली का अग्रभाग यदि गोल हो तथा उस पर निरूपाक्ष का चिह्न हो तो, व्यक्ति कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है। यह सफेद कुष्ठ कष्टदायक तो नहीं होता, पर पूरे शरीर को बदसूरत बना देता है। यदि लम्बा हो, तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति रक्त-दूषितता से पीड़ित होता है, कई
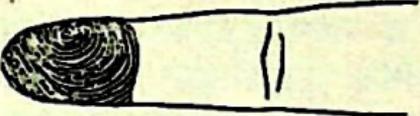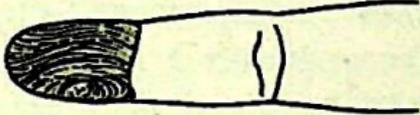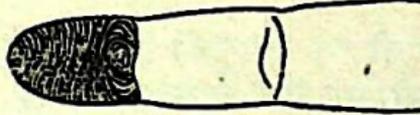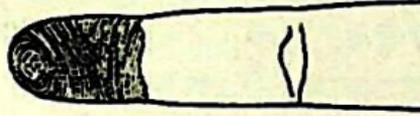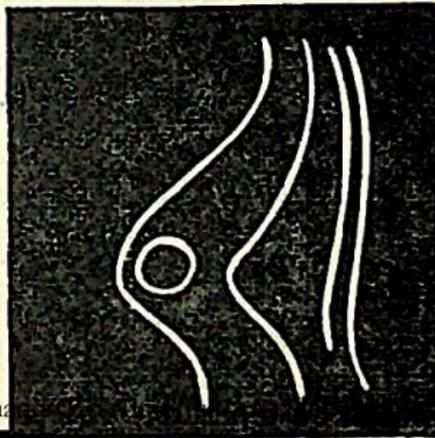
निरूपाक्ष
ऊर्ध्व
अधो
वाम
दक्षिण

बार रक्त-न्यूनता भी देखी गयी है। यदि अग्रभाग चपटा, बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति को सन्निपात, लकवा-जैसी बीमारी हो जाती है तथा काफी वर्षों तक उसे भुगतना पड़ता है। यदि अग्र-भाग गोल भरा-भरा-सा हो तथा उस पर निरूपाक्ष अंकित हो, तो व्यक्ति भावुकता में आकर आत्मघात कर बैठता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो, तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति बीमार होकर ठीक-सा हो जाता है, लाल हो तो बीमारी काफी भोगनी पड़ती है, पीला-सा हो तो रोग असाध्य समझना चाहिए।

ऊर्ध्व : यदि उँगली पर ऊर्ध्व निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति के पूरे शरीर में कुष्ठ रोग-सा हो जाता है, अन्यथा शरीर के किसी एक भाग में समझना चाहिए।

अधः : यदि अँगुली पर अधोमुखी निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति को तीव्र लकवा होता है, स्त्रियों को हिस्टीरिया आदि रोग प्रायः होते देखे जाते हैं।

वाम : यदि अँगुली पर वाममुखी निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति दुबला-पतला न भी हो, पर रक्त न्यूनता की वजह से जोड़ों में दर्द, हाथ-पैर टूटना आदि होते रहते हैं।

दक्षिण : यदि तर्जनी उँगली पर दक्षिणमुखी निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति जीवन में एकाधिक बार आत्महत्या का प्रयत्न करता है, एवं असफल रहता है।

मध्यमा

यदि मध्यमा उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर निरूपाक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति को अण्डकोष में वृद्धि, अण्डकोष सूजन या गुप्त रोग होते हैं। यदि उँगली का सिरा लम्बा-सा हो तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को अंग हानि सहन करनी पड़ती है। जीवन में अंगभंग होता है। यदि उँगली का सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति चेचक के रोग से पीड़ित होता है, तथा उसका चेहरा बदसूरत-सा दिखाई देने लगता है।

यदि उँगली का सिरा गोल भरा-भरा-सा हो, तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति वर्ण रोग या नासिका रोग से पीड़ित होता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो, तो व्यक्ति के रोग में वृद्धि, लाल हो तो असाध्य तथा पीला-सा हो तो रोग में कमी होने की सम्भावना रहती है।

ऊर्ध्व : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति जीवन-भर गुप्त रोग से पीड़ित या नामर्द-सा रहता है।

अध: : यदि उँगली पर अधोमुखी निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति को संघर्ष में, शत्रुओं द्वारा अंगहानि सहन करनी पड़ती है, तथा जीवन-भर इसका पश्चात्ताप बना रहता है।

वाम : यदि मध्यमा उँगली पर वाममुखी निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति को चेचक या रक्त से सम्बन्धित बीमारी से कष्ट भोगना पड़ता है।

दक्षिण : यदि उँगली पर दक्षिण निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति चेहरे के किसी अवयव, नाक, कान, गला, मस्तिष्क सम्बन्धी रोग से प्रपीड़ित रहता है।

अनामिका

यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर निरूपाक्ष का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति गुर्दे के रोग से पीड़ित रहता है। यदि सिरा लम्बा हो तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को छाती के रोग होते हैं, अधिकतर ऐसे व्यक्तियों को टी. बी. भी देखी गयी है। यदि नखाग्र भाग चपटा बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न हो तो व्यक्ति को निश्चय ही दमे के रोग का शिकार होना पड़ता है। जिस व्यक्ति की उँगली के अग्रभाग पर निरूपाक्ष का चिह्न हो, उसे संज्ञा-हीनता सी होती है, तथा कई बार वह बेहोशी की हालत में हो जाता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तथा उस पर निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति का रोग शीघ्र ही शांत हो जाता है, लाल वर्ण हा तो व्यक्ति को बार-बार उस रोग का शिकार होना पड़ता है, यदि उँगली का वर्ण पीला-सा हो तो उस व्यक्ति का सम्बन्धित रोग असाध्य समझना चाहिए।

ऊर्ध्व : जिस व्यक्ति की अनामिका उँगली पर ऊर्ध्व निरूपाक्ष हो, उसे एक से अधिक रोगों का शिकार होना पड़ता है, तथा

रोगों से जूझते-जूझते उसका शरीर जर्जर-सा हो जाता है।

अधः : यदि उँगली पर अधोमुखी निरूपाक्ष हो तो, व्यक्ति को श्वास रोग अस्थमा-सा होता है, तथा वह काफी कष्ट उठाता है।

वाम : जिस व्यक्ति की अनामिका उँगली पर वाममुखी निरूपाक्ष का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति का हृदय सम्पीड़ित होने से शिथिल कमजोर एवं संज्ञाहीन-सा होता रहता है।

दक्षिण : यदि अनामिका उँगली पर दक्षिणमुखी निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति जलोदर रोग से पीड़ित होता है, तथा इसी रोग में उसकी मृत्यु होती है।

कनिष्ठिका

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर निरूपाक्ष का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को त्वचा के रोग होते हैं, तथा एक-न-एक व्याधि लगी ही रहती है। यदि कनिष्ठिका उँगली के अग्रभाग पर निरूपाक्ष का चिह्न हो, और सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति निद्राहीनता (INSOMNIA) की बीमारी से ग्रस्त रहता है। यदि कनिष्ठिका का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर निरूपाक्ष का चिह्न हो तो व्यक्ति मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों से पीड़ित रहता है।

यदि कनिष्ठिका उँगली गोल भरी-भरी-सी हो तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न हो तो व्यक्ति वायुयान दुर्घटना या तेज गति-वाले वाहन से टकराकर अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति को कम समय तक रोग रहता है, लाल हो तो रोग असाध्य नहीं होता, पर यदि पीला-सा हो तो रोगों से छुटकारा कम ही मिल पाता है।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली पर ऊर्ध्व निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति को पोलियो होने का अन्देशा रहता है।

अधः : यदि उँगली पर अधोमुखी निरूपाक्ष चिह्न हो तो व्यक्ति पट्ठों की दुर्बलता से पीड़ित रहता है।

वाम : यदि वाममुखी निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति पेट से सम्बन्धित रोगों से परेशान रहता है।

दक्षिण : यदि कनिष्ठिका उँगली पर दक्षिण की ओर

निरूपाक्ष चिह्न हो तो व्यक्ति फेफड़ों के रोग से परेशान होता है, तथा ऐसा रोग असाध्य-सा ही होता है।

अंगूठा

यदि अँगूठे का सिरा गोल हो, तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को मूत्र रोग, लिंग रोग आदि होते हैं। यदि अँगूठे का सिरा लम्बा हो तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को लकवा हो जाता है। यदि अंगूठे का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो तथा उस पर निरूपाक्ष चिह्न अंकित हो तो, व्यक्ति श्वास रोग से परेशान रहता है। यदि अँगूठे का सिरा गोल भरा-भरा सा हो तथा उस पर निरूपाक्ष अंकित हो, तो व्यक्ति सूखा रोग से ग्रस्त रहता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलाबी हो तो रोग न्यून समय तक, लाल हो तो अधिक समय तक तथा पीला या सफेद हो तो असाध्य होता है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति की मृत्यु विदेश में होती है।

अध: : यदि अँगूठे पर अध: निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति हर्निया के रोग से पीड़ित रहता है।

वाम : यदि अँगूठे पर वाम निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति हृदय रोग से ग्रस्त रहता है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिण निरूपाक्ष हो तो व्यक्ति को हड्डियों का दर्द रहता है।

त्रिशूल

त्रिशूल का चिह्न में एक रेखा तथा उससे सम्बन्धित तीन छोटी रेखाएं ऊपर की ओर निकली होती हैं, तथा एक ओर से खुला

ऊर्ध्व
अधो
त्रिशूल
दक्षिण
वाम

वृत्त-सा घेरा उसे घेरे रहता है। त्रिशूल का सिरा जिस ओर होगा उसी ओर त्रिशूल चिह्न माना जाता है।

तर्जनी

यदि तर्जनी उँगली का सिरा गोल हो, तथा उस पर त्रिशूल का चिह्न हो तो व्यक्ति की सन्तान योग्य श्रेष्ठ एवं नामी होती है। यदि उँगली का सिरा लम्बा हो, तथा उस पर त्रिशूल का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति को अपनी सन्तान से सुख नहीं मिलता। यदि तर्जनी उँगली का अग्रभाग चपटा, बैठा हुआ-सा हो तो उसके पुत्र के दुष्कृत्यों से वह दुःखी एवं परेशान रहता है।

यदि तर्जनी उँगली का सिरा गोल भरा-भरा सा हो, तथा उस पर त्रिशूल अंकित हो तो व्यक्ति की सन्तान निकम्मी कायर होती है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो, तो व्यक्ति को अपेक्षाकृत पुत्रों से लाभ होता है, यदि वर्ण लाल हो तो पुत्रों से गम्भीर मतभेद बने रहते हैं, यदि वर्ण पीला या सफेद-सा हो तो व्यक्ति को अपनी सन्तान से कोई लाभ नहीं रहता।

ऊर्ध्व : यदि तर्जनी उँगली पर ऊर्ध्व त्रिशूल हो तो व्यक्ति को अपने पुत्रों से लाभ रहता है, आर्थिक दृष्टि से भी ये इसके सहायक रहते हैं।

अधः : यदि तर्जनी उँगली पर अधोमुखी त्रिशूल हो तो व्यक्ति को उसके पुत्र ही धोखा देते हैं, तथा उस पर मुकदमा चलाते हैं।

वाम : यदि तर्जनी उँगली पर वाममुखी त्रिशूल हो तो व्यक्ति तथा उसके पुत्रों के बीच गम्भीर मतभेद बने रहते हैं।

दक्षिण : यदि तर्जनी उँगली पर दक्षिण त्रिशूल हो तो व्यक्ति का नाम उसके पुत्रों के दुष्कृत्यों से नीचे झुकता है।

मध्यमा

यदि मध्यमा उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर त्रिशूल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति की सन्तान साधारण स्तर की ही होती है। यदि उँगली का सिरा लम्बा हो तथा उस पर त्रिशूल चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति अपने पुत्रों के कार्यों से समाज में सम्मानित होता है। यदि उँगली का अग्रभाग चपटा एवं बैठा

हुआ-सा हो तथा उस पर त्रिशूल चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति के पुत्र जुआरी या सट्टेबाज होते हैं।

मध्यमा उँगली का अगला सिरा गोल भरा-भरा सा हो, तथा उस पर त्रिशूल चिह्न हो तो व्यक्ति के पुत्र परायी स्त्रियों में रत रहते हैं।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो उसे सन्तान से अपेक्षाकृत ज्यादा ही दुःख उठाने पड़ते हैं। यदि लाल वर्ण हो तो व्यक्ति के पुत्र शूरवीर एवं साहसी होते हैं। यदि पीला-पीला सा वर्ण हो तो व्यक्ति की सन्तान आलसी होती है।

ऊर्ध्व : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व त्रिशूल हो तो व्यक्ति के पुत्र साहस एवं जोखम-भरे कार्य कर आजीविका उपार्जित करते हैं।

अधः : यदि उँगली पर अधोमुखी त्रिशूल हो तो व्यक्ति के पुत्र अभाग्यवान होते हैं।

वाम : मध्यमा उँगली पर वाम त्रिशूल इस बात का सूचक है कि व्यक्ति अपनी सन्तान से कोई लाभ नहीं उठा सकता, अपितु उल्टे जीवन-भर पुत्रों की मदद करनी पड़ेगी।

दक्षिण : यदि उँगली पर दक्षिणमुखी त्रिशूल हो तो व्यक्ति के पुत्र उच्चपदस्थ अधिकारी होते हैं।

अनामिका

यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर त्रिशूल का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति के पुत्रों की अपेक्षा पुत्रियाँ ज्यादा होती हैं। यदि सिरा लम्बा हो तथा उस पर त्रिशूल हो तो व्यक्ति की पुत्री कवियित्री या लेखक होती है।

यदि अनामिका उँगली का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर त्रिशूल चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति अपनी पुत्रियों के दुर्व्यवहार से लज्जित होता है।

यदि उँगली का सिरा गोल भरा-भरा सा हो तथा उस पर त्रिशूल चिह्न अंकित हो तो वह व्यक्ति अपनी सन्तान से आसक्ति रखता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो व्यक्ति को जीवन में सन्तोष रहता है, लाल हो तो वह गृहकलह से हर समय परेशान

रहता है तथा पीला-सा वर्ण हो तो व्यक्ति अपने घर एवं परिवार के प्रति उदासीन-सा रहता है।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उँगली पर ऊर्ध्व त्रिशूल हो तो व्यक्ति के पुत्र अनैतिक एवं समाज विरोधी कार्य करते हुए पकड़े जाते हैं तथा समाज में बदनाम होते हैं।

अध: : यदि उंगली पर अधोमुखी त्रिशूल हो, तो व्यक्ति के पुत्र कूटनीतिज्ञ या सफल राजनीतिज्ञ होकर यशोपार्जन करते हैं।

वाम : यदि हाथ की अनामिका पर वामपक्षीय त्रिशूल हो तो व्यक्ति की सन्तान दुर्बल एवं रोगग्रस्त रहती है।

दक्षिण : यदि त्रिशूल उँगली पर दक्षिणपक्षीय या दक्षिण-मुखी हो तो पुत्रों को समाज में श्रेष्ठ कार्यों के लिए सम्मान मिलता है।

कनिष्ठिका

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर त्रिशूल हो तो उसे कई बार गर्भपात का आघात सहन करना पड़ता है। यदि उँगली का अग्रभाग लम्बा हो तथा उस पर त्रिशूल चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति की सन्तान दुर्बल एवं अस्वस्थ रहती है। यदि अँगुली का अगला भाग चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति के पुत्रों की मृत्यु उसके सामने ही होती है।

यदि उँगली का अग्रभाग गोल भरा-भरा सा हो तथा उस पर त्रिशूल अंकित हो तो उसे जवानी में पुत्र-वियोग सहन करना पड़ता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो वह जीवन की अन्तिम अवस्था में साधु हो जाता है। यदि वर्ण लाल हो, तो व्यक्ति का पारिवारिक जीवन कलह, फूट एवं द्वेष से भरा रहता है। यदि वर्ण पीला-सा हो तो व्यक्ति को अपनी सन्तान से ही तिरस्कार भोगना पड़ता है।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली पर ऊर्ध्व त्रिशूल हो तो व्यक्ति के पुत्र या सन्तान में से किसी एक की मृत्यु हवाई दुर्घटना में होती है।

अध: : यदि कनिष्ठिका उँगली पर अधोमुखी त्रिशूल हो तो व्यक्ति के बड़े पुत्र को शस्त्राघात लगता है, जिसके घावों के

कारण उसकी मृत्यु होती है।

वाम : यदि कनिष्ठिका उँगली पर वामपक्षीय त्रिशूल हो तो व्यक्ति का पुत्र या कन्या आत्म-हत्या करता है।

दक्षिण : यदि कनिष्ठिका उँगली पर दक्षिणमुखी त्रिशूल हो तो व्यक्ति जीवन-भर सन्तान से परमोच्च सुख भोगता है।

अंगूठा

यदि अँगूठे का सिरा गोल हो तथा उस पर त्रिशूल का चिह्न अंकित हो तो वह व्यक्ति अपने पुत्रों के षड्यन्त्र से मारा जाता है। यदि सिरा लम्बा हो तथा उस पर त्रिशूल चिह्न अंकित हो, तो उसके पुत्र का अधिकांश समय विदेश में ही व्यतीत होता है। यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर त्रिशूल चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति का पुत्र निश्चय ही जेल जाता है। यदि अंगूठाग्र भाग गोल भरा-भरा हो, तथा उस पर त्रिशूल मण्डित हो, तो वह व्यक्ति अपने पुत्रों के धन पर आनन्द भोगता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलाबी हो, तो व्यक्ति जीवन में पुत्रों से आनन्द-लाभ करता है। यदि लाल हो तो वह झगड़ालू होता है, फलस्वरूप पत्नी के एवं उसके बीच मतभेद काफी गहरे रहते हैं। यदि पीला हो तो व्यक्ति निश्चय ही बीमार सन्तान पर जरूरत से ज्यादा धन व्यय करता है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व त्रिशूल हो तो व्यक्ति के पुत्र परस्त्रीगामी एवं दुराचारी होते हैं।

अधः : यदि अँगूठे पर अधोमुखी त्रिशूल हो तो वह अपने पुत्रों से धन लाभ करता है।

वाम : यदि व्यक्ति के अँगूठे पर वामपक्षीय त्रिशूल हो तो व्यक्ति अपनी सन्तान से अपमानित होता रहता है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिणपक्षीय त्रिशूल हो तो व्यक्ति अपने पुत्रों के कार्यों के फलस्वरूप यशस्वी जीवन व्यतीत करता है।

तोरण का चिह्न एक गोल से घेरे में त्रिभुज तथा उसमें चार-पाँच दाँते-सी लकीरें जैसी होती हैं जिसे पाठक चित्र के माध्यम से आसानी से समझ सकते हैं। हाथ में तोरण का चिह्न अपने-आप में काफी महत्त्व रखता है। अतः इस चित्र का अत्यन्त सावधानी से अध्ययन करना चाहिए।

तर्जनी

तर्जनी उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर तोरण का चिन्ह हो, तो उसकी पत्नी बुद्धिमान समझदार एवं विदुषी होती है। यदि उँगली का सिरा लम्बा हो तथा उस पर तोरण चिह्न अंकित हो, तो उस व्यक्ति की स्त्री भावुक, कल्पनाशील, जल्दी घबरानेवाली एवं चतुर होती है। यदि व्यक्ति की तर्जनी उँगली चपटी हो तथा उस पर तोरण का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति को कुटिल एवं असत्य बोलनेवाली स्त्री मिलती है।

यदि व्यक्ति की तर्जनी गोल भरी-भरी सी हो तथा उस पर तोरण चिह्न अंकित हो, तो उस व्यक्ति की स्त्री फैशनेबल होती है तथा सौन्दर्य प्रसाधनों पर उसका व्यय ज्यादा हो जाता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो पत्नी स्वस्थ, लाल हो तो तुनकमिजाज एवं पीली-सी हो तो उसकी पत्नी बीमार सी बनी रहती है।

ऊर्ध्व : यदि तर्जनी उँगली पर ऊर्ध्व तोरण हो तो व्यक्ति के सम्बन्ध उम्र-भर पत्नी से मधुर बने रहते है तथा एक-दूसरे के सहयोगी होते हैं।

अधः : यदि तर्जनी उँगली पर अधः तोरण हो तो व्यक्ति को अपनी पत्नी का दुर्व्यवहार सहन करना पड़ता है, जिसके फल-स्वरूप मन-ही-मन में कटुता बढ़ती रहती है।

वाम : यदि तर्जनी उँगली पर वाममुखी तोरण हो तो व्यक्ति के सम्बन्ध पत्नी से मधुर नहीं रहते, तथा पारस्परिक वैचारिक मतभेद बने रहते हैं।

दक्षिण : यदि तर्जनी उँगली पर दक्षिणमुखी तोरण हो तो उसकी पत्नी उसके व्यक्तितव के विकास में पूर्णतः पूरक होती है।

ऊर्ध्व
अधो
तोरण
वाम
दक्षिण

मध्यमा

यदि मध्यमा उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर तोरण का चि ह् अंकित हो तो व्यक्ति को ससुराल से सहायता मिलती है। यदि लम्बा हो तथा उस पर तोरण चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को ससुराल से मात्र मौखिक सहानुभूति ही मिलती है।

यदि सिरा चपल हो तथा उस पर तोरण-चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को ससुराल से अपमान के कड़ुवे घूंट पीने पड़ते हैं। यदि सिरा गोल भरा-भरा सा हो, तथा उस पर तोरण-चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति को ससुराल से यथेष्ट धन प्राप्त होता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो ससुराल से सम्मान, लाल हो तो विरोध तथा पीला या सफेद हो तो उदासीनता-सी मिलती है।

ऊर्ध्व : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व तोरण अंकित हो तो जीवन-भर ससुराल से सम्मान एवं सहयोग मिलता रहता है।

अधः : यदि मध्यमा उँगली पर अधोमुखी तोरण हो तो व्यक्ति अपने ससुराल से किसी भी प्रकार का कोई लाभ नहीं उठा पाता।

वाम : यदि मध्यमा उँगली पर वाम मुखी तोरण हो तो व्यक्ति का ससुराल से प्रवल विरोध होता है तथा उससे हानि उठानी पड़ती है।

दक्षिण : यदि मध्यमा उँगली पर दक्षिण मुखी तोरण का चिह्न हो तो वह व्यक्ति ससुराल से अपने व्यापार-व्यवसाय में भरपूर लाभ उठाता है।

अनामिका

यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल हो, तथा उस पर तोरण का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को बुद्धिजीवी ससुराल मिलता है। यदि सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति की पत्नी उच्चस्तरीय पढ़ी-लिखी एवं नौकरी कर सकने में समर्थ होती है।

यदि अनामिका उँगली का सिरा चपटा, बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर तोरण का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति का ससुराल निम्नस्तरीय एवं निम्न विचारों का होता है।

यदि उँगली का सिरा गोल भरा-भरा सा हो तथा उस पर तोरण का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को अपनी हैसियत से ज्यादा दहेज ससुराल से मिलता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो प्रणय जीवन सुखी, लाल हो तो मतभेद युक्त एवं पीली हो तो विरोधपूर्ण रहते हैं।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उँगली पर ऊर्ध्व तोरण हो तो व्यक्ति अपने व्यापार-व्यवसाय में ससुराल से सहयोग प्राप्त करता रहता है।

अधः : यदि अनामिका उँगली पर अधोमुखी तोरण हो तो ससुराल से सम्बन्ध लगभग नहीं के बराबर होते हैं।

वाम : यदि अनामिका उँगली पर वामपक्षीय तोरण हो तो ससुराल निम्नतम विचारोंवाला होता है।

दक्षिण : यदि दक्षिण की ओर झुका हुआ तोरण हो तो व्यक्ति का ससुराल उच्च मेधावी एवं यशोभागी होता है।

कनिष्ठिका

कनिष्ठिका उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर तोरण का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को सरल, सीधी एवं सच्च-रित्र पत्नी मिलती है।

यदि उँगली का सिरा लम्बा हो तथा उस पर तोरण चिह्न अंकित हो, तो उसकी पत्नी समझदार होती है, पर उसका दाम्पत्य जीवन मधुर नहीं कहा जा सकता। यदि उँगली का सिरा चपटा बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर तोरण हो, तो व्यक्ति की पत्नी अपने पति के हाथों काफी कष्ट भोगती है।

यदि उँगली का सिरा गोल, भरा-भरा हो तथा उस पर तोरण का चिह्न हो तो उस व्यक्ति की स्त्री दुराचारिणी होती है।

यदि वर्ण गुलाबी हो तो दाम्पत्य जीवन मधुर, लाल हो तो सुख-दुख में सहयोगी तथा पीला हो तो पति का व्यक्तित्व पत्नी के सामने दब-सा जाता है।

ऊर्ध्व : यदि कनिष्ठिका उँगली के सिरे पर ऊर्ध्व तोरण हो तो व्यक्ति की पत्नी सच्चरित्र होती है।

अधः : यदि कनिष्ठिका उँगली पर अधोमुखी तोरण हो तो व्यक्ति की पत्नी निम्न विचार रखनेवाली झगड़ालू होती है।

वाम : यदि उँगली पर वाममुखी तोरण हो तो व्यक्ति की पत्नी अपने पति पर निरंकुश शासन करती है।

दक्षिण : यदि दक्षिणमुखी तोरण हो तो व्यक्ति को अपनी पत्नी से आय होती है, अर्थात् वह कई नौकरी कर आर्थिक उन्नति में सहयोग देती है।

अँगूठा

यदि अँगूठे का सिरा गोल हो तथा उस पर तोरण का चिह्न अंकित हो, तो व्यक्ति की पत्नी हठी और दम्भी होती है। यदि सिरा लम्बा हो तो उसे सादगी प्रिय पत्नी मिलती है, जो कि नैतिक दृष्टि से योग्य कही जा सकती है। यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो तो उसे धूर्त तथा घर में कलह रखनेवाली पत्नी मिलती है। यदि सिरा गोल एवं भरा-भरा सा हो, तथा उस पर तोरण का चिह्न हो तो उसका अधिकांश पैसा स्त्री के सौन्दर्य-प्रसाधनों एवं नयी-नयी माँगों की पूर्ति पर व्यय हो जाता है।

यदि अँगूठे का वर्ण गुलावी हो तो मानसिक सन्तोष, लाल हो तो कलह तथा पीला हो तो विरोध रहता है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व तोरण हों तो व्यक्ति हठी, दम्भी तथा हिटलरशाही अनुशासन रखने का प्रयत्न करता है।

अधः : यदि अँगूठे पर अधोमुखी तोरण हों तो व्यक्ति के घर का वातावरण कलहपूर्ण रहता है।

वाम : यदि अँगूठे पर वाममुखी तोरण हो तो व्यक्ति की पत्नी हरदम किसी-न-किसी रोग-से ग्रस्त बनी ही रहती है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिणपक्षीय तोरण हों तो व्यक्ति के घर में सुख-शान्ति एवं आनन्द का वातावरण वना रहता है।

दाँते

उँगली पर दाँते का चिह्न स्पष्ट देखा जा सकता है, एक वर्तुल में आरी के समान दाँते होंते हैं, यही चिह्न दाँते के रूप में पहचाना जाता है।

तर्जनी

तर्जनी उँगली का सिरा यदि गोल हों तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो उसकी पीठ पीछे निन्दा करनेवाले बहुत होते हैं। यदि उँगली का सिरा लम्बा हो तथा उस पर दाँते का चिह्न हों तो बुद्धिजीवियों से उसका वैचारिक मतभेद रहता है। यदि उँगली का सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर दाँते का चिह्न हों तो व्यक्ति की शत्रुता निम्नस्तरीय लोगों से होती है।

यदि उँगली का सिरा गोल-सा भरा-भरा हो तथा उस पर दाँते का चिह्न हों तो व्यक्ति का अपने अधिकारियों से मतभेद रहता है।

यदि वर्ण गुलाबी हो तो शत्रुता से हानि नहीं होती, लाल हों तो उसके मुँह पर किसी को कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं होती तथा पीला हो तों उसे हानि उठानी पड़ती है।

ऊर्ध्व : यदि तर्जनी उँगली पर ऊर्ध्व दाँते हों तो व्यक्ति साहसी एवं निर्भीक होता है।

अधः : यदि उँगली पर अधः दाँते हों तों व्यक्ति प्रबल विरोधी व्यक्तित्व के रूप में उभरता है।

वाम : यदि उँगली पर वाम दाँते हों तो व्यक्ति की शत्रुता स्त्रियों से होती है।

दक्षिण : यदि तर्जनी उँगली पर दक्षिण पक्षीय दाँते हों तों व्यक्ति विरोधी के रूप में लाभ उठाता है।

मध्यमा

यदि मध्यमा उँगली का सिरा मोटा हों तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तों व्यक्ति को अपने सम्बन्धियों से ही धोखे खाने पड़ते हैं। यदि उँगली का सिरा लम्बा हो तों व्यक्ति जेल जाता है, तथा राज्य से संघर्ष रहता है। यदि उँगली का सिरा चपटा

ऊर्ध्व
अधो
ह्रांते
वाम
दक्षिण

एवं वैठा हुआ-सा हो, तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो व्यक्ति निम्न स्तर के कार्यों के फलस्वरूप जेल जाता है। यदि उँगली का सिरा गोल भरा-भरा सा हो तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो उसकी मित्र मण्डली काफी वढ़ी-चढ़ी होती है।

यदि उँगली का वर्ण गुलावी हो तो शत्रुओं पर विजय, लाल हो तो जीवन-भर परस्पर संघर्ष तथा पीला हो तो परास्त होना पड़ता है।

ऊर्ध्व : यदि मध्यमा उंगली पर ऊर्ध्व दाँते हों तो व्यक्ति शत्रुओं पर अनायास ही सफलता पा लेता है।

अधः : यदि उँगली पर अधः दाँते हों तो व्यक्ति हर समय डरा-डरा-सा रहता है।

वाम : यदि उँगली पर वामपक्षीय दाँते हों तो व्यक्ति जीवन में जाने-अनजाने किसी की हत्या करता ही है।

दक्षिण : यदि उँगली पर दक्षिण दाँते हों तो वह शत्रुओं द्वारा ठगा जाता है।

अनामिका

यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो वह व्यक्ति देवताओं से प्रपीड़ित रहता है। यदि सिरा लम्बा हो तो उसे क्रूर एवं खल ग्रहों से परेशानियाँ भोगनी पड़ती हैं। यदि अनामिका का सिरा चपटा एवं वैठा हुआ-सा हो तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो व्यक्ति भूत-प्रेतों से पीड़ित रहता है। यदि अनामिका का सिरा गोल भरा-भरा-सा हो तथा उस पर दाँते हों तो वह पितृ दोष से दुःखी एवं परेशान रहता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलावी हो तो कम कष्ट भोगना पड़ता है, लाल हो, तो काफी परेशानियाँ देखनी पड़ती हैं, पीला वर्ण हो तो जीवन-भर उसे परेशानियाँ एवं दुःख भोगना पड़ता है।

ऊर्ध्व : यदि अनामिका उंगली पर ऊर्ध्व दाँते हों तो व्यक्ति गायत्री मन्त्र का स्मरण करे।

अधः : यदि अधोमुखी दाँते हों तो कष्ट मिटाने के लिए टोने-टोटको का उपयोग करे।

वाम : यदि वाम हों तो तान्त्रिक उपायों का प्रयोग अनुकूल

रहता है ।

दक्षिण : यदि दक्षिण हो तो उसे वैदिक मन्त्रों का प्रयोग एवं उपयोग करना चाहिए ।

कनिष्ठिका

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा गोल हो, तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो व्यक्ति को अपने पिता का ही जबरदस्त विरोध सहन करना पड़ता है ।

यदि सिरा लम्बा हो तो उसे जीवन-भर अपनी पत्नी से शत्रुतावत् व्यवहार रहता है ।

यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ हो तो उसे अपने साथियों से ही मारपीट में अंग-भंग सहन करना पड़ता है । यदि सिरा गोल भरा-भरा-सा हो तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो व्यक्ति को ससुराल से काफी विरोधों का सामना करना पड़ता है ।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो लाभ, लाल हो तो वैमनस्य तथा पीली हो तो शत्रुता के वातावरण में साँस लेते रहना पड़ता है ।

ऊर्ध्व : यदि उँगली पर ऊर्ध्व दाँते हो तो उसका विरोधी अत्यन्त प्रबल एवं विख्यात होता है ।

अधः : यदि उँगली पर अधः दाँते हो तो व्यक्ति का शत्रु घुटा हुआ, जालसाज तथा धूर्त होता है ।

वाम : यदि उँगली पर वाम पक्षीय दाँते हो तो व्यक्ति की शत्रुता श्रम-जीवियों से होती है ।

दक्षिण : यदि उँगली पर दक्षिण पक्षीय दाँते हो तो व्यक्ति की चिर शत्रुता बुद्धिजीवियों, लेखकों एवं मसिजीवियों से रहती है ।

अँगूठा

यदि उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर दाँते का चिह्न हो तो व्यक्ति स्वयं में ही दो विरोधी व्यक्तित्व में जीवित रहने वाला होता है । यदि सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति हर समय मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है ।

यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो तो व्यक्ति क्रूर एवं

समाज-विरोधी कार्यों में लिप्त रहता है। यदि सिरा गोल एवं भरा-भरा-सा हो तो व्यक्ति के विरोधी दूरस्थ होते हैं।

यदि गुलाबी वर्ण हो तो सदा प्रसन्नचित्त रहनेवाला, लाल हो तो कठोर स्वभाव रखनेवाला, तथा पीला हो तो दुर्बल एवं अस्थिर मनोवृत्ति वाला होता है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर ऊर्ध्व दाँते हो तो व्यक्ति जान पर खेलकर भी दूसरों की सहायता करनेवाला होता है।

अधः : यदि अँगूठे पर अधः दाँते हो तो व्यक्ति नीच, दुष्ट-स्वभाव रखनेवाला तथा पग-पग पर धोखा देनेवाला होता है।

वाम : यदि अँगूठे पर वामपक्षीय दाँते हो तो व्यक्ति येन-केन प्रकारेण अपना काम निकालनेवाला अवसरवादी होता है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिण पक्षीय दाँते हो तो व्यक्ति सच्चरित्र सहयोगी एवं ईमानदार व्यक्ति होता है।

त्रिकोण

त्रिकोण का चिह्न वर्तुल में छोटा-सा त्रिकोण होता है, हाथ में इस चिह्न का होना शुभ माना गया है।

तर्जनी

तर्जनी उँगली का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो वह व्यक्ति शान-शौकत पर अत्यधिक व्यय करने वाला होता है यदि लम्बा सिरा हो तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो पुस्तकों पर, यात्राओं पर जरूरत से ज्यादा व्यय होता है। यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ हो तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न अंकित हो तो वह व्यक्ति शिकार, शस्त्र पर अधिक व्यय करता है। यदि सिरा गोल, भरा-भरा सा हो तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न अंकित हो तो वह व्यक्ति यार-दोस्तों

ऊर्ध्व
अधो
त्रिकोण
वाम
दक्षिण

पर, पार्टियों पर, खाने-पीने के मामलों पर जरूरत से ज्यादा व्यय करता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो उसे प्रशंसा, लाल हो तो वाहवाही तथा पीला हो तो अपयश होता है।

ऊर्ध्व : यदि उँगली पर ऊर्ध्व त्रिकोण हो तो वह उच्चस्तरीय लोगों में सम्मान पाता है।

अध: : यदि अध: त्रिकोण हो तो वह निम्न स्तरीय लोगों में प्रशंसित होता है।

वाम : यदि वामपक्षीय त्रिकोण हो तो उसे अपयश ही मिलता है।

दक्षिण : यदि दक्षिण पक्षीय त्रिकोण हो तो जरूरत से ज्यादा परिश्रम करने पर कम सम्मान लाभ होता है।

मध्यमा

यदि मध्यमा उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो व्यक्ति को अनायास आकस्मिक धनलाभ होता है। यदि सिरा लम्बा हो तो उसे विदेश से प्रचुर धनलाभ होता है। यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो तो जुए में उसका भाग्योदय होता है। यदि सिरा गोल भरा-भरा सा हो तो उस व्यक्ति का भाग्योदय तीस वर्ष की अवस्था के बाद होता है। यदि उँगली का वर्ण गुलाबी हो तो वह दानवीर होता है। यदि लाल हो तो यात्रा एवं भ्रमण कार्यों में वह धन व्यतीत करता है। यदि पीला हो तो दवाइयों में, चिकित्सा में उसका धन व्यय होता है।

ऊर्ध्व : यदि मध्यमा उँगली पर ऊर्ध्व त्रिकोण हो तो व्यक्ति का भाग्योदय प्रारम्भिक काल में ही हो जाता है।

अध: : यदि अध: त्रिकोण हो तो भाग्योदय में काफी विलम्ब एवं बाधाएँ रहती हैं।

वाम : यदि वामपक्षीय त्रिकोण हो तो व्यक्ति का वृद्धावस्था में भाग्योदय होता है।

दक्षिण : यदि मध्यमा उँगली पर दक्षिण पक्षीय त्रिकोण हो तो यौवनकाल में उसका भाग्योदय होता है।

अनामिका

यदि अनामिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो उसे वाहन सुख मिलता है। यदि सिरा लम्वा हो तथा उस पर त्रिकोण हो तो वह सामान्य स्तर के वाहन का अधिपति होता है। यदि चपटा एवं बैठा हुआ सिरा हो तो उसे उच्चस्तरीय वाहन सुख मिलता है।

यदि गोल भरा-भरा सा सिरा हो तथा उस पर त्रिकोण हो तो व्यक्ति पराये लोगों के वाहन से लाभ उठाता है। यदि उँगली का वर्ण गुलावी हो तो लाभ, लाल हो तो वाहन से एक्सीडेण्ट तथा पीला हो तो वाहन सुख में न्यूनता रहती है।

ऊर्ध्व : यदि उँगली पर ऊर्ध्व त्रिकोण हो तो व्यक्ति को माता से धन लाभ होता है।

अधः : यदि उँगली पर अधः त्रिकोण हो तो उसे ननिहाल से द्रव्य लाभ होता है।

वाम : यदि उँगली पर वामपक्षीय त्रिकोण हो तो पत्नी से प्रचुर धनलाभ होता है।

दक्षिण : यदि उँगली पर दक्षिण पक्षीय त्रिकोण हो तो उसे पिता से प्रचुर धन लाभ मिलता है।

कनिष्ठिका

यदि कनिष्ठिका उँगली का सिरा गोल हो तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति को भाइयों से किसी भी प्रकार का कोई सहयोग नहीं मिलता। यदि सिरा लम्वा हो तो उसकी उन्नति में उसके परिवार का कोई विशेष सक्रिय सहयोग नहीं रहता। यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो तो उसका लालन-पालन दूसरों के द्वारा ही होता है।

यदि सिरा गोल भरा-भरा सा हो तथा उस पर त्रिकोण अंकित हो तो उसे बहनों से लाभ मिलता है।

यदि उँगली का वर्ण गुलावी हो तो श्रेष्ठ लाभ, लाल हो तो मध्यमस्तरीय लाभ तथा पीला हो तो सामान्य लाभ मिलता है।

ऊर्ध्व : यदि उँगली पर ऊर्ध्व त्रिकोण हो तो व्यक्ति इज्जत के साथ अपना जीवन निभाता है।

अधः : यदि अधः त्रिकोण हो तो उसे कई बार अपमान सहन करने पड़ते हैं।

वाम : यदि वाम त्रिकोण हो तो उसको जीवन में यश क्षीण रूप में ही मिलता है।

दक्षिण : यदि दक्षिण त्रिकोण हो तो उसका जीवन पूर्ण सुखी एवं यशस्वी होता है।

अँगुष्ठ

यदि अँगूठे का सिरा गोल हो, तथा उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो उसे श्रेष्ठ विद्या प्राप्त होती है। यदि लम्बा हो तो वह ज्योतिष या वैद्यक क्षेत्र में प्रसिद्धि पाता है। यदि चपटा एवं बैठा हुआ-सा हो तो उसे विद्या का कोई लाभ नहीं मिलता। यदि गोल भरा-भरा-सा हो तो वह कई बार शिक्षा क्षेत्र में असफल होता है।

यदि वर्ण गुलाबी हो तो श्रेष्ठ विद्या, लाल हो तो सामान्य विद्या एवं पीला हो तो अल्प विद्या प्राप्त होती है।

ऊर्ध्व : यदि अँगूठे पर उर्ध्व त्रिकोण हो तो व्यक्ति देश-विदेश में अक्षय कीर्ति का अधिकारी होता है।

अधः : यदि अँगूठे पर अधः त्रिकोण हो तो व्यक्ति सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

वाम : यदि अँगूठे पर वामपक्षीय त्रिकोण हो तो व्यक्ति जीवन में आनन्द लाभ करता है।

दक्षिण : यदि अँगूठे पर दक्षिण पक्षीय त्रिकोण हो तो वह व्यक्ति धन, यश, सम्मान एवं कीर्ति सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ जीवन जीने का अधिकारी होता है।

उपसंहार

ईश्वर के द्वारा मानव को ही ये अमूल्य वरदान स्वरूप स्वतन्त्र उँगलियाँ मिली हैं, जिनके माध्यम से मानव पाषाण युग से आज के इस वैज्ञानिक युग में प्रवेश कर सका है, जीवन के छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े प्रत्येक कार्य में मानव की ये उँगलियाँ, और सही शब्दों में मानव की उँगलियों के ये अग्रभाग ही सक्रिय रहे हैं, अतः इन उँगलियों के ये अग्रभाग पर पाये जानेवाले चिह्नों का महत्त्व सर्वोपरि है।

मानव उँगलियों पर पाये जानेवाले इन चिह्नों की भाषा समझना सर्वाधिक दुष्कर एवं कठिन कार्य है, "मुझे न तो पूरा हाथ देखना है, और न हाथ की रेखाएँ, मुझे तो इन पाँच उँगलियों पर पाये जानेवाले चिह्न बता दीजिए, मैं आपके पूरे जीवन को स्पष्ट कर दूंगा।"

यह दुर्भाग्य का विषय है, कि भारत जैसे विख्यात और ज्योतिष के आदि स्थान में वैज्ञानिक ढंग से हस्तरेखा के अध्ययन की न तो सुविधा है न व्यवस्थित विधान भी···फलस्वरूप विदेशी राजनयिक, बुद्धिजीवियों एवं विचारकों के द्वारा जब ऐसे प्रश्न किये जाते हैं, तो झुंझलाकर खिन्नतापूर्वक चुप रह जाना पड़ता है।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए "भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसन्धान केन्द्र—(सी। एफ १४ हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर राजस्थान) की स्थापना की, जिसमें श्रेष्ठ हस्तरेखा विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग लिया जाता है, एवं प्रत्यक्ष तथा दूर स्थानों से प्राप्त हाथ के 'प्रिण्ट्स' का वैज्ञानिक अध्ययन कर डाक द्वारा भविष्यफल भेजने की व्यवस्था की है।

इस केन्द्र की दक्षता के फलस्वरूप देश-विदेश से जिस प्रकार

सहयोग एवं प्रोत्साहन मिल रहा है, वह हर्ष का विषय तो है ही, पर इसके द्वारा हम एक बड़े अभाव की पूर्ति कर सके हैं ऐसा कहने में कोई संकोच नहीं।

मुझे विश्वास है यह केन्द्र शीघ्र ही ज्योतिष के अन्य अंगों को भी वैज्ञानिक ढंग से विकसित कर कीर्ति एवं यश प्राप्त कर सकेगा···प्रत्येक शुभ एवं कल्याणकारी कार्य में ईश्वर साथ है और रहेगा ही···!

मयूर
पेपर बैक्स

आप स्वयं भी अपनी हस्त[illegible]
भविष्य पढ़-समझ सकते हैं
— और इसका एक बढ़िया [illegible] तरीका है
ज्योतिष के प्रतिष्ठित विद्वान [illegible]
हस्तरेखाविद् डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली की यह पुस्तक
'हस्तरेखा रहस्य'
— जिसे आप पढ़ें और वक्त-जरूरत के लिए
अपने पास रखें।